मासिक
jaihaatkeshvani.com

जय हाटकेश वाणी

मार्च 2017 वर्ष : 11 अंक : 10

होली है

मंगल परिणय की बधाई

24 नवम्बर 2017

चि.अक्षय मिश्रा

सुपुत्र- सौ.साधना-शैलेन्द्र कुमार मिश्रा

सुपौत्र- स्व.दुर्गादेवी-श्री कन्हैयालालजी मिश्रा

संग

सौ.कां. प्रतिष्ठा मिश्रा (दशोरा)

सुपुत्री- सौ.नम्रता-राजेश कुमार दशोरा

सुपौत्री- सरस्वती देवी-श्री राधेश्यामजी दशोरा

(अध्यक्ष, दशोरा नागर समाज, उदयपुर)

:: शुभाकांक्षी ::

डॉ.विजय शंकर त्रिवेदी-स्व.निर्मला त्रिवेदी (नाना-नानी)

अर्पित मिश्रा (भाई)

श्रीमती शारदा दशोरा-स्व.झमूरलालजी दशोरा (नानी-नाना)

श्रेष्ठा दशोरा बहन एवं समस्त दशोरा परिवार

संस्थापक

श्री शिवप्रसादजी शर्मा श्रीमती प्रभा शर्मा

प्रेरणा स्रोत

श्री गोवर्धनलालजी मेहता श्री विष्णुप्रसादजी नागर

संरक्षक

पं.श्री कमलकिशोर नागर, सेमली
पं.श्री आर.के.झा, कोलकाता
पं.श्री पुरुषोत्तम (परेश) पी.नागर, मुम्बई
पं.श्री महेन्द्र नागर, बैंगलौर
पं.श्री नवरत्न व्यास, हैदराबाद
पं.श्री हरिप्रसाद नागर, अकलेरा
पं.श्री सुभाष व्यास, भोपाल
पं.श्री ओमप्रकाश मेहता, भोपाल
पं.श्री सुनील मेहता, उज्जैन
पं.श्री सुरेन्द्र मेहता (सुमन) उज्जैन
पं.श्री कृष्णानंद मेहता, खण्डवा

प्रधान सम्पादक
सौ.संगीता दीपक शर्मा

सम्पादक
सौ.दिव्या अमिताभ मंडलोई
सौ.दमिता नवीन झा
सौ.आभा विजयशंकर मेहता

विज्ञापन
पवन शर्मा-9826095995

झरोखा

बून्दी (राज.) में नवचण्डी यज्ञ का आयोजन 07

श्री राजेश नागर को प्रशंसा पत्र 10

नागर परिवारों का सम्मान 11

नि:शुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन 24

जय हाटकेश वाणी

मूल्य 10/- रूपये

सम्पर्क- अवन्तिका परिसर, 20, जूनी कसेरा बाखल, (खजूरी बाजार), इन्दौर-452002
मो. 9009590930, 9926285002

website : www.jaihaatkeshvani.com, / E-mail : jayhotkeshvani@gmail.com / manibhaisharma@gmail.com

संगठन को कमजोर करते हैं मतभेद

पारिवारिक रिश्ते हो, समाज हो, कोई समुदाय या दल उनमें किसी भी कारण से विवाद या मतभेद है तो वे अपना बहुत बड़ा नुकसान कर रहे हैं। परिवार में यदि दो ही लोग हैं और उनके बीच मतभेद है तो वे एक दूसरे की ताकत बनने के बजाय कमजोरी बन जाते हैं। ऐसे में जीवन संघर्ष अत्यंत कठिन हो जाता है। उसी प्रकार समाज के मामले में भी यदि संगठन मजबूत नहीं है तो उन्नति अवरुद्ध हो जाती है। नतीजा यह होता है कि आदमी आंतरिक लड़ाई में उलझा रहकर बाहरी द्वंद्वों से निबटने में असक्षम साबित हो जाता है। इस बात को ओर अधिक गहराई से समझने के लिए हम राजनैतिक दलों का उदाहरण ले सकते हैं।

यदि विरोधी दल संगठित नहीं है तथा गुटों में बंटा है तो वह सत्ताधारी दल का समुचित विरोध नहीं कर पाता ऐसे में तानाशाही एवं मनमानी प्रवृत्तियों का जन्म होता है। जिसका खामियाजा आम आदमी को भी भुगतना पड़ता है। अतः सबसे पहले मनुष्य को पारिवारिक स्तर पर मजबूत एवं सुदृढ़ होना चाहिए, सदस्यों से जो भी मनमुटाव है उसका समाधान करना चाहिए, फिर सामाजिक स्तर पर, समाज के संगठन को मजबूत करने के लिए पदाधिकारियों को आपसी मतभेद खत्म करना चाहिए।

सबका अपना अहम होता है, वरिष्ठता होती है, परन्तु सबसे पहले हित तय करना चाहिए। परिवार का हित, समाज का हित जिसमें है उसको सर्वोपरि मानना चाहिए। उसके लिए भले ही कुछ भी करना पड़े तो करें। संगठन का कमजोर होना तथा उससे होने वाले नुकसान आज सब तरफ दिखाई दे रहे हैं। गुटीय राजनीति से त्रस्त सबसे बड़ा राजनीतिक दल आज अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ रहा है। सत्ताधारी दल की गड़बड़ियों का वह विरोध नहीं कर पा रहा है, ऐसे में उसकी भूमिका ही अवरुद्ध हो गई है, तथा आम जनता को उसका खामियाजा भुगतना पड़ रहा है। अतः देशहित में समाजहित में तथा पारिवारिक हित में मतभेदों को खत्म करना सर्वोचित है। यह सोचें कि इन मतभेदों की वजह से हम स्वयं का ज्यादा नुकसान कर रहे हैं, क्योंकि आपकी ज्यादातर ऊर्जा आपसी विवादों में खर्च हो रही है तथा इसका नुकसान कईं स्तरों पर हो रहा है।

-सम्पादक

सदस्यता-नवीनीकरण आवेदन पत्र

मैं ....

डाक का पूरा पता (पिनकोड सहित) ....

....

मासिक **जय हाटकेश वाणी** का आजीवन सदस्य बनना चाहता हूँ। जिसके लिए निर्धारित आजीवन सदस्यता शुल्क 550 रु. नगद/चैक/ड्राफ्ट या आपके बैंक अकाउंट द्वारा निम्नलिखित पते पर भेज रहा हूँ। मैंने यह शुल्क आपके खाते 'जय हाटकेश वाणी' केनरा बैंक शाखा एम.जी. रोड़, (गोराकुण्ड) इन्दौर में खाता क्रमांक - 0325201004027 में जमा किया है।

सम्पर्क- जय हाटकेश वाणी, 20 जूनी कसेरा बाखल (खजूरी बाजार), इन्दौर-452002 मो. 9926285002, 9926563129 www.jaihaatkeshvani.com

E-mail : jayhotkeshvani@gmail.com / manibhaisharma@gmail.com

जीवन में 'रंग' तो होना चाहिए

आप सभी पाठकों को होली पर्व की बहुत-बहुत शुभकामनाएँ.. हिन्दू धर्म में वैसे तो बहुत सारे त्यौहार हैं, सालभर त्यौहारों का सिलसिला चलता है परन्तु होली एवं दीवाली का विशेष महत्व है.. दरअसल यह त्यौहार उत्सव एवं उत्साह के प्रतीक तो हैं कहीं न कहीं प्रेरणा के पूंज भी हैं। अवतारों एवं धर्मशास्त्रों की तरह ये त्यौहार भी हमें जीना सिखाते हैं, वास्तव में देखा जाए तो हम जी नहीं रहे हैं जीवन को ढो रहे हैं। रोज एक नई समस्या, जो बीत गया उसका मलाल है, जो होने वाला है उसकी चिंता है।

आज की चिंता ही केवल यही है कि कल क्या होगा? और जो बीत चुका है उसकी खराब यादें अपने-पराये लोगों का सुलूक दिल को बड़ा कष्ट देता है। इन्हीं सब बातों में आज बर्बाद हो जाता है। जबकि जीवन में होली-दीवाली का इंतजार करने की जरूरत ही नहीं है। हर दिन उत्सव होना चाहिए उत्साह होना चाहिए। भगवान श्री कृष्ण का जीवन कितना संघर्षमय रहा, परन्तु वे सदैव प्रसन्न रहे, ऊर्जावान, उत्साहित रहे। उनके जीवन से हमें यही प्रेरणा लेना है। इस बेरंग जिन्दगी को रंग बिरंगा बनाना है। जो बीत गया उसे भूल जाओ, कल क्या होगा उसकी चिंता भी छोड़ दो। आज में जियो, आज ही हमारा है, जीवन को खुशमय बनाओ.. रंगीन बनाओ। न किसी से राग द्वेष न ईर्ष्या.. न क्रोध न मोह सब विकारों को छोड़ दो.. हर उस अवगुण को त्याग दो जो तुम्हारे जीवन को बेरंग बनाते हो बदरंग बनाते हो। उन गुणों को अपनाओ जो तुम्हारे जीवन में शांति लाए प्रेम.. प्रसन्नता लाए बहार ही बहार लाए, रंग लाए। और इसके लिए तुम्हें स्वयं ही प्रयत्न करना पड़ेगा। इस दुनिया में अकेले आए हो.. अकेले जाना है तथा अकेले ही इसको रंग-बिरंगा बनाना है। यदि तुम अपने जीवन के साथ न्याय नहीं करते हो तो यह सबसे बड़ा अपराध है। सुख-दुख, हानि-लाभ ये सब आती-जाती छाया है इनसे अप्रभावित होकर जीना ही सही मायने में जीवन है।

" भगवान श्री कृष्ण का जीवन कितना संघर्षमय रहा, परन्तु वे सदैव प्रसन्न रहे, ऊर्जावान, उत्साहित रहे। उनके जीवन से हमें यही प्रेरणा लेना है। इस बेरंग जिन्दगी को रंग बिरंगा बनाना है। जो बीत गया उसे भूल जाओ, कल क्या होगा उसकी चिंता भी छोड़ दो। आज में जियो आज ही हमारा है, जीवन को खुशमय बनाओ.. रंगीन बनाओ। "

हमारे दो प्रमुख त्यौहार यही महत्वपूर्ण प्रेरणा देते हैं दीवाली में आंतरिक दीप जला कर मन के गहरे अंधेरे को दूर करने का संदेश है, तो होली हमें उत्साह एवं जीवन को रंग बिरंगा बनाने का संदेश देती है। केवल एक-दूसरे को रंग लगाना ही होली का उद्देश्य नही है, हमारा जीवन इतना शानदार हो कि हम किसी को बगैर रंग लगाए ही अपने रंग में रंग दें तो बात बने। हम जिससे मिले उस पर इतना गहरा रंग (प्रभाव) छोड़ें कि जिसे पानी से न धोया जा सके। अपने आपको रंगना है तो प्रेम और भक्ति के रंग में रंगों और दूसरों पर उसका प्रभाव छोड़ो यही असली होली है। हमारा हर दिन उत्सव होना चाहिए। अपार उत्साह होना चाहिए। खुशी एवं प्रसन्नता होना चाहिए। तभी त्यौहारों की सार्थकता है।

-संगीता दीपक शर्मा

जीवन के प्रति रवैया ही आपको अपनों के नजदीक ले जा पायेगा

अपनी परिभाषा को इस कदर बनाये कि आप आसानी से खुश हो जाये और बड़ी मुश्किल से मायूस हो पाये। निश्चित करे कि आपका सबसे अच्छा दिन आज ही है, आज ही आप आसानी से मनचाही जिंदगी जी सकते हो. इन बातो को हमेशा याद रखे तभी आपके जीवन में खुशी, प्यार, आज़ादी हमेशा बनी रहेगी। यदि आपसे कोई यह प्रश्न करता है कि आप बहुत खुश और उत्साही कैसे रहते हो तो आपका जवाब, 'मै इसलिए खुश हूँ क्योकि मै आज में जीता हूँ और आसानी से सांस ले पाता हूँ और आसानी से खुश हो जाता हूँ' होना चाहिये।

आपका ये रवैया आपको एक खुशनुमा जिंदगी जीने में सहायक साबित होगा। और आप हमेशा के प्यार, आकर्षण, सहायक और दया, करुणा के वातावरण में रहने लगोगे, जिससे आपका स्वास्थ और आपकी संपत्ति दोनों ही सुरक्षित होंगे। आसानी से खुश होने के अलावा एक और बात है जो आपमें होनी चाहिये, और वह है कि आसानी से दुखी न होना। किसी भी इंसान के लिये आपको दुखी कर पाना असंभव होना चाहिये। अपने मायूसी की एक सीमा निश्चित कर ले, ठान लें कि आप तभी मायूस होंगे जब आपका दिन में 10 लाख डॉलर से भी ज्यादा का नुकसान होगा, यदि इस तरह की कोई घटना आपके जीवन में होती है तो आपको मायूस होना चाहिये। यदि आप इन सीमाओ को अपने जीवन में उपयोग करो तो आप कभी आसानी से मायूस नहीं हो पायेंगे, और आप जिंदगीभर खुश रह पायेंगे।

गलत समय पर गलत बातें बोलना आपकी मुसीबतों को बढ़ा सकता है। हम सभी को आत्ममंथन की जरुरत होती ही है। ये एक साधारण उपाय है हम हमारे रवैये को बदलकर ही जिंदगी में बहुत-सी मुसीबतों का सामना आसानी से कर सकते हैं, और प्यार भरे रिश्तों को जिंदगीभर के लिये बनाये रख सकते हैं। हमारी अनुभूति और उसके प्रकोप के दो तरह के प्रभाव होते है. यदि आप प्यार, स्नेह, दया, करुणा, कल्याण के रूप में सकारात्मक विचारो को भेजते हो तो इससे आपके संबंध और भी मधुर और मजबूत बनेंगे। इसके विपरीत जो लोग गुस्सा, नफरत, चिंता, आलोचना, गलतियाँ ढूंढना, नकारात्मक सोचना और बुरे शब्दों का प्रयोग करते है, उनके संबंध खत्म होते हुए नज़र आते है और इसी की चिंता में इंसान के जीवन से प्यार और खुशी हमेशा के लिये चली जाती है। दो इंसानों में संबंध में दोनों में एक-दूजे को समझने की ताकत होनी चाहिये, ना कि एक-दूजे में अहंकार और द्वेषभाव होना चाहिये।

गलत समय पर गलत बातें बोलना आपकी मुसीबतों को बढ़ा सकता है। हम सभी को आत्ममंथन की जरुरत होती ही है। ये एक साधारण उपाय है हम हमारे रवैये को बदलकर ही जिंदगी में बहुत-सी मुसीबतों का सामना आसानी से कर सकते है, और प्यार भरे रिश्तों को जिंदगीभर के लिये बनाये रख सकते हैं।

मेरा ऐसा मानना है कि अच्छी और बुरी आदतों को सीमित जगह तक ही रखना आपको गलत रास्तों पर ले जा सकता है। लोगो में बुरी आदतों को जल्दी अपनाने की और उन्हें विकसित करने की आदत होती है जबकि अच्छी आदते बड़ी मुश्किल और लाख कोशिशो के बाद ही लगती है। और इसी वजह से हम एक-दूसरे से नाराज़ रहते है. हमें हमारी आंतरिक भावना को सोच-समझकर ही बाहर लाना चाहिये। आंतरिक भावना के बारे में विचार करते हुए हमें सकारात्मक भावनाओ को बाहर लाना चाहिये और नकारात्मक भावनाओ को नष्ट कर देना चाहिये। इसके विपरीत खुशी का अहसास, प्यार, आकर्षण, ध्यान रखना, दया और करुणा ये सब हमें अपने स्वभाव में ही दिखाई देता है. हमारा स्वभाव ही हमारे गुणों को दर्शाता है और हमारे स्वभाव पर ही हमारा खुश रहना निर्भर करता है। रिश्तों में आयी खटास को दूर करने का सबसे आसान उपाय अपने स्वभाव को नम्र बनाना और परिस्थिति चाहे आपके अनुकूल हो या विपरीत हमेशा मुस्कुराते रहना ही है. खुश रहने के लिये आपको अपने स्वभाव को बदलने की जरुरत होगी।

-आभा विजयशंकर मेहता
उज्जैन (म.प्र.)

राष्ट्रीय नागर ब्राह्मण प्रतिष्ठान की वार्षिक आमसभा 18-19 मार्च को

राष्ट्रीय नागर ब्राह्मण प्रतिष्ठान की अगली वार्षिक आम सभा मार्च महीने में शनिवार एवं रविवार तदानुसार दिनांक 18 एवं 19 मार्च 2017 को गाँधी पीस फॉन्डेशन, दीन दयाल मार्ग, आई.टी.ओ. के पास, दिल्ली में आयोजित की जा रही है। इस प्रस्तावित सभा में अनेक सामाजिक मुद्दों के साथ-साथ अपने समाज की बहुत सी कही एवं अनकही समस्याओं, विशेषतया हमारी युवा शक्ति जो वर्तमान में आधुनिकता की प्रचंड आँधी के कारण भटकाव से ग्रसित है, पर भी विचार होगा साथ प्रतिष्ठान की कार्य प्रणाली पर भी चर्चा होगी।

अतः आप सभी नागर ब्राह्मण बन्धुओं से अनुरोध है कि प्रस्तावित सभा में अपने क्षेत्र के नागर समुदाय का प्रतिनिधित्व करते हुए अपने मूल्यवान सुझाव देकर प्रतिष्ठान को समाज की सुचारू रूप से सेवा करने का आशीर्वाद प्रदान करें। प्रस्तावित सभा में भाग लेने वाले सभी प्रतिनिधियों के रहने एवं भोजन की व्यवस्था आयोजकों द्वारा की जाएगी।

उपरोक्त व्यवस्था हेतु सभा में बाहर से आने वाले प्रतिनिधियों को रूपये आठ सौ (रु. 800/-) प्रतिनिधि शुल्क देय होगा तथा स्थानीय सदस्यों को रूपये चार सौ (रु. 400/-) देय होगा। यह प्रतिनिधि शुल्क बैंक ड्राफ्ट, चैक या मनीऑडर द्वारा राष्ट्रीय नागर ब्राह्मण प्रतिष्ठान दिल्ली के नाम सी-55, डिफेंस कालोनी, नई दिल्ली-110024 के पते पर भेजना होगा अथवा प्रतिष्ठान के विजया बैंक खाता नं. 600501031000239 आई.एफ.सी.कोड नं. VIJb0006005 में सीधे जमा कर बैंक रसीद के छाया प्रति और संलग्न प्रतिनिधि पंजीकृत पत्रिका अपनी समय रहते भेज दें ताकि आपको यहाँ आकर कोई असुविधा न हो।

-प्रधान चन्द्रमोहन व्यास
फोन 24337010, 09811083908

हाटकेश्वर मंदिर जिर्णोद्धार में दान राशि भेंट

खान्दू कॉलोनी बांसवाड़ा राजस्थान में स्थित हाटकेश्वर महादेव मंदिर का जीर्णोद्धार यहाँ के निवासी विशनगरा नागर ब्राह्मण समाज द्वारा किया जा रहा है। जिसमें सभी समाज बन्धुओं ने श्रद्धा व उत्साह पूर्वक सहयोग दिया है। पहले मंदिर छोटा था। अब इसे भव्य रूप दिया गया है। कार्य प्रारम्भ करने पर सर्व प्रथम स्व.श्री दुर्गाशंकरजी पण्डया की स्मृति में उनकी पत्नी श्रीमती लक्ष्मी बाई पण्डया ने 51000 रुपये इकावन हजार रूपये की राशि भेंट की है। मंदिर का कार्यपूर्ण होने को है। रंग रोगन व फिनिशिंग का कार्य शेष है। इष्ट देव हाटकेश्वर भक्त प्रेमी सज्जनों से सहयोग की अपेक्षा है।

-चंचरलाल जोशी
से.3 म.नं. 198, खान्दू कॉलोनी,
बांसवाड़ा मो. 9461573566

बूंदी में नवचण्डी यज्ञ

बूंदी की सिद्धपीठ बीजासन माताजी के मंदिर में गुप्त नवरात्रि के अवसर पर 29 जनवरी से 5 फरवरी तक दुर्गायाग विधान एवं नवचण्डी यज्ञ का आयोजन किया गया। 29 फरवरी को विशाल कलश-यात्रा के साथ यज्ञ की शुरुआत हुई। नौ दिन तक पण्डित पुष्कर राजे दाधीच के निर्देशन में सैकड़ों श्रद्धालुओं ने यज्ञ में आहुतियाँ दी। आयोजन में नागर समाज के सुनील नागर व पीयूष पाचक की महत्वपूर्ण भूमिका रही। 5 फरवरी को सामूहिक भोज के साथ यज्ञ की पूर्णाहुति हुई।

-पीयूष

मेहनत एक ऐसी चाबी है, जो
बंद भाग्य के दरवाजे भी खोल देती है ।

पाँच दिवसीय मेले के अवसर पर विशेष

हारे के श्याम 'खाटू श्याम'

राजस्थान के सीकर जिले में एक प्रसिद्ध कस्बा है जिसका नाम है खाटू नगर। यहाँ पर खाटू श्याम का विश्व विख्यात मंदिर है जहाँ प्रतिवर्ष फाल्गुन माह की द्वादशी तिथि को खाटू श्याम जयंती मनाकर पाँच दिवसीय मेले का आयोजन किया जाता है। हिन्दू धर्म के अनुसार खाटू श्यामजी कलयुग में श्रीकृष्ण के अवतार है जिन्होंने श्रीकृष्ण से वरदान प्राप्त किया था कि वे कलयुग में उनके नाम श्याम से पूजे जावेंगे। खाटू श्याम का पूर्व नाम बर्बरीक था तथा उनका प्रादुर्भाव मध्यकालीन महाभारत काल में हुआ था। वे भीम के पुत्र घटोत्कच तथा नागकन्या मौरवी के पुत्र थे। बाल्यकाल में उनके बाल बब्बर शेर के समान थे अतः उनका नाम 'बर्बरीक' पड़ा। बाल्यकाल से ही वे अत्यन्त शूरवीर साहसी थे तथा उन्होंने युद्ध कला अपनी माता मौरवी (दूसरा नाम कामकंटककटा) श्रीकृष्ण तथा भगवान शिव और देवी की घोर तपस्या ब्रह्मचर्य व्रत का पालन कर की थी। फलस्वरूप भगवान शिव ने प्रसन्न होकर उन्हें तीन अमोघ बाण तथा अग्निदेव ने धनुष प्रदान किये थे।

कुरूक्षेत्र में जब कौरवों तथा पाण्डवों के मध्य युद्ध अवश्यभावी हो गया तब बर्बरीक, युद्ध में शामिल होने की इच्छा से अपनी माता से आशीर्वाद प्राप्त करने पहुँचे तथा माँ को हारे हुए पक्ष का साथ देने का वचन दिया। सर्वव्यापी श्रीकृष्ण को जब यह बात ज्ञात हुई तो उन्होंने एक ब्राह्मण का वेश धारण कर बर्बरीक की परीक्षा लेने की इच्छा से उसे रोका तथा यह जानकर हंसी उड़ाई कि वह मात्र तीन बाणों से युद्ध में सम्मिलित होने जा रहा है, ऐसा सुनकर बर्बरीक ने उत्तर दिया कि मात्र एक बाण शत्रु सेना को परास्त करने के लिये पर्याप्त है तथा ऐसा करने पश्चात् बाण वापस उनके तरकश में आ जावेगा । यदि उसने तीनों बाणों का उपयोग किया तो सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का विनाश हो जायेगा। यह जानकर श्रीकृष्ण ने चुनौती दी कि इस पीपल के सभी पत्तों को बेधकर दिखलाओ। बर्बरीक ने चुनौती स्वीकार कर, तरकश से एक बाण निकालकर ईश्वर के पैर के इर्द-गिर्द चक्कर लगाने लगा क्योंकि एक पत्ता श्रीकृष्ण ने अपने पैर के नीचे छुपा लिया। बर्बरीक ने कहा कि आप अपने पैर को हटा लीजिये अन्यथा ये बाण आपके पैर को भी वेध देगा। तत्पश्चात श्रीकृष्ण ने शूरवीर बर्बरीक से पूछा- वह युद्ध में किस ओर सम्मिलित होगा। बर्बरीक ने अपनी माँ को दिये वचन को दोहराया कि वह युद्ध में जो पक्ष निर्बल और हार रहा होगा उसी का वह साथ देगा। श्रीकृष्ण जानते थे कि युद्ध में हार तो कौरवों की निश्चित है और इस कारण अगर बर्बरीक (जो कि पाण्डव वंशी है) ने उनका साथ दिया तो परिणाम गलत पक्ष में चला जायेगा अतः ब्राह्मणरूपी श्रीकृष्ण ने वीर बर्बरीक से दान की अभिलाषा व्यक्त की। बर्बरीक ने उन्हें वचन दिया तथा दान मांगने को कहा। ब्राह्मण ने उनके शीश का दान मांगा। वीर बर्बरीक क्षणभर के लिये अचंभित हुए तथा अपने वचन से अडीग हुए बिना बोले- एक साधारण ब्राह्मण इस तरह का दान नहीं मांग सकता है अतः ब्राह्मण से अपने वास्तविक रूप में प्रकट होने की प्रार्थना की। ब्राह्मणरुपी श्रीकृष्ण अपने वास्तविक स्वरूप में आ गये तथा बर्बरीक को शीश दान में मागने का कारण समझाया कि युद्ध आरम्भ होने के पूर्व युद्धभूमि पूजन के लिये सर्वश्रेष्ठ क्षत्रिय के शीश की आहुति देनी होती है इसलिये ऐसा करने के लिये वे विवश थे। बर्बरीक ने अपना शीश धड़ से अलग करने के पूर्व प्रार्थना की कि वे अन्त तक युद्ध देखना चाहते हैं। श्रीकृष्ण ने उनकी यह प्रार्थना स्वीकार कर इस बलिदान से प्रसन्न हो सर्वश्रेष्ठ योद्धा की उपाधि से अलंकृत कर उनके शीश को युद्धभूमि के समीप स्थित पहाड़ी पर सुशोभित किया जहाँ से बर्बरीक ने अठारह दिन चले सम्पूर्ण युद्ध का अवलोकन किया।

युद्ध में विजयीश्री पश्चात् पाण्डवों में इस बात की चर्चा होने लगी कि विजय का वास्तविक श्रेय किसको जाता है तब श्रीकृष्ण ने कहा था कि इस सम्पूर्ण युद्ध को बर्बरीक ने प्रारम्भ से अन्त तक देखा है अतः वही इसका सही आंकलन कर निर्णय दे सकता है तब वे सभी बर्बरीक के पास पहुँचे। बर्बरीक ने उत्तर दिया कि इस धर्मयुद्ध में विजयश्री प्राप्त करने का सम्पूर्ण श्रेय श्रीकृष्ण की अधर्म के विरुद्ध, नीतिनिपुण, युद्धकौशल को जाता है। श्रीकृष्ण ने वहाँ उपस्थित सभी पाण्डवों को बर्बरीक के अतुलनीय योगदान तथा उनके पाण्डव वंशीय होने का वृतांत सुनाया। समस्त पाण्डवों ने बर्बरीक के शीश को राजस्थान के सीकर जिले में खाटू नगर में स्थापित किया। चूंकि बर्बरीक ने अपना शीश फाल्गुन माह की द्वादशी तिथि को दान में दिया था इस कारण उनका दूसरा नाम 'शीश-दानी' तथा खाटू नगर में स्थापित होने से खाटू श्याम कहलाया।

संदेश- सच्चे मन से श्रद्धापूर्वक दिया गया दान कभी व्यर्थ नहीं जाता है और यदि वह साक्षात ईश्वर को बिना किसी लालसा, दिखावेपन, कामना से दिया जाता है तो वह ईश्वर का ही रूप धारण कर लेता है। ईश्वर की पाषाण मूर्तियों पर किये गये दान की अपेक्षा मानव सेवा को समर्पित दान अधिक कल्याणकारी होता है। उपवर्णित पौराणिक कथानक/घटना मानव अंगदान, देहदान की महत्ता को प्रतिपादित करती है।

-प्रो.राजेन्द्र नागर (मुमुक्षु)
बी-40, चन्द्रनगर (एम.आर.9), इन्दौर

अथर्ववेद विभूति - डॉ.मनोहरलाल द्विवेदी

18वीं शताब्दी में लोगों को सद् मार्ग पर लाने, सांस्कृतिक चेतना बलवती करने, वैदिक ज्ञान बढ़ाने में पञ्चद्रविणान्तर्गत आभ्यन्तर वडनगरा नागर जाति के वैदिक विद्वानों की महती भूमिका रही है। इन वैदिक विद्वानों ने वैदिक ज्ञान के वृक्ष पर पुष्प खिलाकर अपने सौंदर्य व गंध से वातावरण को अभिभूत कर दिया।

बांसवाड़ा (राज.) वडनगरा नागर जाति में वैदिक परम्परा पुरानी पीढ़ियों से चली आ रही है। बांसवाड़ा को कर्मक्षेत्र बनाने वाले वैदिक विद्वानों ने ऋग्वेद की शांखायनी शाखा व यजुर्वेद की वैदिक शाखाएँ विकसित की तथा बांसवाड़ा से जिन वैदिक विद्वानों ने अपनी कर्मस्थली वाराणसी बनाई ने विशेषतः सामवेद व अथर्ववेद की परम्पराएं विकसित की। बांसवाड़ा में वडनगरा नागर जाति में ऋग्वेद की शांखायनी शाखा का वैदिक ज्ञान रखने वाले पूरे भारतवर्ष में दो वैदिक विद्वान (1) इन्द्रशंकर झा (2) हर्षदजी नागर है। वर्तमान में बांसवाड़ा दौरे पर आए काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी के वेद विशेषज्ञ प्रो. श्री किशोर मिश्र के अनुसार अथर्ववेद की शौनक शाखा को जीवित रखने का श्रेय बांसवाड़ा मूल के नागर जाति के डॉ.मनोहरलाल द्विवेदी को जाता है। ये पूरे भारतवर्ष में इस शाखा के एक मात्र विद्वान थे। वर्तमान में डॉ.सम्पूर्णानंद विश्वविद्यालय वाराणसी में उनके शिष्यों द्वारा इस वेद शाखा का प्रचार-प्रसार किया जा रहा है।

अथर्ववेद के वैदिक ज्ञान के आलोक को राष्ट्रीय मानचित्र पर स्थापित करने वाले

1976 व 1977 ई. राज्य संस्कृत पुरस्कार उ.प्र. 1985 ई. राजस्थान संस्कृत अकादमी सम्मान, 1987 ई. गुरु गंगेश्वरानंद वेद वेदांग पुरस्कार नासिक, 1988 ई. राजस्थान संस्कृत अकादमी द्वारा वेद पुरस्कार, 1989 ई. हनुमदीय विद्यावृत्ति पुरस्कार कलकत्ता, 1991 ई. नरहर गुरु वैदिक सरन् इन्दौर में पुरस्कार, 1988 ई. से 1991 ई. तक शास्त्र चूड़ामणि के रूप में कार्य किया। 10 अगस्त 1996 ई. भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ.शंकरदयाल शर्मा द्वारा 'संस्कृत वाङमये पाण्डित्याय शास्त्रै च वैशार धाय' राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित, 13 अप्रैल 1997 ई. में महाराणा मेवाड़ फाउण्डेशन उदयपुर (राज.) द्वारा 'हारित ऋषि सम्मान' से सम्मानित किया गया था।

डॉ.मनोहरलालजी द्विवेदी का जन्म 23 अगस्त 1920 ई. को पञ्च द्रविणान्तर्गत आभ्यन्तर वडनगरा नागर जाति के शार्कलक्ष गौत्र में वाराणसी में हुआ था। इनके पिताजी का नाम भगवानलालजी अग्निहोत्री व माता का नाम जतन कुंवर था।

श्री द्विवेदी ने सांगवेद विद्यालय वाराणसी में वेद शिक्षा ग्रहण की तथा आचार्य की परीक्षा उत्तीर्ण की, 1957 ई. एम.ए. संस्कृत की परीक्षा उत्तीर्ण की 1962ई. में 'काव्यायन यज्ञ पद्धति विमर्श' विषय पर (पी.एच.डी.) डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की, यह विषय अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर दुर्लभ था जिसमें छोटे-बड़े यज्ञों से लेकर अश्वमेघ यज्ञ का स्वरूप व विधि का वर्णन किया गया है। यह ग्रंथ 1988 ई. में राष्ट्रीय संस्थान नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित हुई थी। इसके अतिरिक्त 'वाजपेय भाग विवेचन' 'अग्निचयन याग विमर्श ग्रंथ लिखे हैं। आपके दस से अधिक अनुसंधान पत्र हिन्दी विश्व कोष नागरी प्रचारिणी सभा बनारस से प्रकाशित हो चुके हैं। आपने संस्कृत के मूर्धन्य विद्वान राजेश्वर शास्त्री, श्री गणपति दीक्षित, दाउजी भट्ट, मुकुन्दशास्त्री, पदामिराम शास्त्री के साथ वेदाध्यन का कार्य किया था।

श्री द्विवेदी जी डॉ.सम्पूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी के अथर्ववेद प्रभाग के विभागाध्यक्ष थे। इसी विश्वविद्यालय में श्रोत व सम्राट यज्ञ शालाओं का निर्माण इनके निर्देशन व देखरेख में हुआ था।

श्री द्विवेदीजी श्री गोवर्धननाथ मंदिर नागरवाड़ा बांसवाड़ा में चारो वेद के ज्ञाता स्वामी श्री गंगेश्वरानंदजी के सान्निध्य में 'वेद भगवान' वेद ग्रंथ का मंदिर स्थापित किया था। अंत में हम कह सकते हैं आपका अमूल्य वैदिक ज्ञान हम नागर जाति के लोगों के लिए गौरव का विषय है। ऐसी वेद विभूति 24 सितम्बर 1998 ई. आश्विर चतुर्थी नवरात्री स्वाति नक्षत्र में अपने स्वधाम कैलाशवास के लिए प्रस्थान कर गए।

संकलनकर्ता- दिगीश नागर
नागरवाड़ा बांसवाड़ा (राज.)

अम्बाजी में रात्रिपूजा का आयोजन 17 से 21 अप्रैल तक

अम्बाजी (गुजरात) में रात्रिपूजन का आयोजन 17 से 21 अप्रैल 2017 को किया जा रहा है। जिसके अन्तर्गत मंदिर प्रशासन द्वारा नागर ब्राह्मणों की कुलदेवी अंबाजी के मंदिर में गर्भगृह में जाकर समाजजन दर्शन, पूजन एवं भोग सामग्री अर्पण कर सकते हैं। इस आयोजन में देशभर के समाजजन प्रतिवर्ष अम्बाजी आते हैं मध्यप्रदेश से भी अनेक भक्तजन पिछले वर्षों में इसमें हिस्सा ले चुके हैं। जो भी समाजजन इस आयोजन में हिस्सा लेना चाहें वे मुझसे मो. 9425063129 अथवा श्री हेमन्त त्रिवेदी (उज्जैन) मो. 9827350403, 0734-2524926 पर सम्पर्क कर लेवें।

सक्रिय सहभागिता के लिए श्री नागर को प्रशंसा पत्र

गत दिनों जिला प्रशासन द्वारा आयोजित शाजापुर उत्सव आयोजन पर दैनिक अवन्तिका के ब्यूरो प्रमुख राजेश नागर ने सक्रिय सहभागिता के साथ जनहित में समाचार प्रकाशित करते हुए जिला प्रशासन का सकारात्मक सहयोग करने पर शाजापुर कलेक्टर श्रीमती अलका श्रीवास्तव तथा जिला पुलिस अधीक्षक डॉ.श्रीमती मोनिका शुक्ला ने प्रशंसा पत्र देते हुए श्री नागर के उज्जवल भविष्य की कामना की है, श्री नागर के इष्ट मित्रों ने बधाई दी।

सुंदरसी द्वितीय अवन्तिका क्यों?

'पुरातात्विक नगरी सुन्दरसी एक विहंगम दृष्टि' शीर्षक का एक अभिलेख वरिष्ठ पत्रकार श्री हरिनारायण नागर पीपलरावाँ देवास ने निवृत्तमान प्रधानाध्यापक द्वय श्री शंकर राव जाधव सुन्दरसी एवं श्री प्रहलादचंद त्रिवेदी पोलायकलाँ के सहयोग से ग्रेनाइट पत्थर पर स्वर्णाक्षरों में उत्कीर्ण करवाकर 8 जनवरी 2017 (रविवार) को एक धार्मिक अनुष्ठान के साथ महाकाल आश्रम सुन्दरसी के संचालक पूज्य संत 108 श्री स्वामी हरिशरण जी महाराज को समर्पित किया। 5×4=20 वर्ग फीट के इस अभिलेख में 'सुन्दरसी द्वितीय अवंतिका क्यों? पर विहंगम दृष्टि डालते हुए इसके पुरातात्विक तथा ऐतिहासिक महत्व को स्थायित्व प्रदान किया है। इससे नगर में हर्ष व्याप्त है। संत श्री बापू जी ने पत्रकार श्री नागर को आश्वस्त किया है कि इस अभिलेख को यथा-शीघ्र यथा-स्थान स्थापित करवा दिया जावेगा। ब्रह्म भोज एवं स्नेह-भोज के साथ समारोह का समापन हुआ।

उल्लेखनीय है कि सुन्दरसी श्री नागर की जन्म एवं कर्म भूमि रही है।

-हरिनारायण नागर 'वरिष्ठ पत्रकार'
पीपलरावाँ देवास मो. 07272259822, 9425948177

चि. हिमांशु एवं कु. मोक्षदा, नागर सम्मानित

म.प्र. राज्य स्तरीय नागर ब्राह्मण प्रतिभा प्रोत्साहन समिति उज्जैन द्वारा गत 24-25 दिसम्बर 16 को आयोजित सम्मान-समारोह में सौ.शकुंतला-वरिष्ठ पत्रकार हरिनारायण नागर पीपलरावाँ देवास के पौत्र-पौत्री एवं सौ.सुनिता- पत्रकार मनमोहन नागर के पुत्र चि.हिमांशु नागर ने केन्द्रीय विद्यालय बी.एन.पी. देवास से अंग्रेजी माध्यम से कक्षा 11वीं वाणिज्य संकाय में राज्य स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त करने तथा पुत्री कु. मोक्षदा नागर द्वारा भी 9वीं में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर समिति द्वारा समारोह में सम्मानित किया गया। भाई-बहिन द्वारा उक्त उपलब्धि प्राप्त कर अपने विद्यालय एवं अपने परिवार को गौरवान्वित किया है।

-सौ.बिन्दुबाला मेहता
एन-1, सिल्वर कॉलोनी, इन्दौर
कु. मोक्षदा नागर- 9424084744

राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं सहयोगियों का सम्मान

श्री हाटकेश्वरधाम उज्जैन में गुजरात से पधारे अ.भा. नागर की परिषद राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती वीणा बेन चम्पकलाल जोशी एवं इनके साथ पधारे समाजजनों ने भगवान श्री हाटकेश्वरजी का पूजन अर्चन किया।

न्यास द्वारा आपका सम्मान श्री हाटकेश्वर धाम के प्रतीक चिन्ह एवं दुपट्टे के द्वारा किया गया।

नागर परिवार का सम्मान

स्व.श्री प्रोफ.हरिवल्लभजी नागर, इन्दौर की स्मृति में श्री हाटकेश्वर धाम में आर.ओ., वाटर कूलर सिंहस्थ महापर्व 2016 में परिवार द्वारा भेंट किया गया था, जिसका सिंहस्थ यात्रियों ने लाभ प्राप्त किया, विगत दिनों नागर परिवार के एक साथ श्री हाटकेश्वर धाम में पधारने पर न्यास द्वारा शाल श्रीफल एवं प्रतीक चिन्ह भेंट कर सम्मान किया गया।

दो नग एलसीडी 32'' भेंट

सौ.मधुकांता भगु भाई व्यास की सद्प्रेरणा से श्री हाटकेश्वर धाम के लिए एक नग एलसीडी 32 इंच सौ.कुमुद-जयेन्द्र व्यास निवासी सूरत (गुजरात) द्वारा एवं एक एल.सी.डी. स्व.श्री यज्ञ नारायणजी मेहता की स्मृति में कुल दो एल.सी.डी. श्री हाटकेश्वर धाम न्यास पदाधिकारियों को प्रदान किए। इस अवसर पर न्यास मंडल द्वारा आपका धन्यवाद ज्ञापित कर श्री हाटकेश्वर धाम के प्रतीक चिन्ह भेंट कर दुपट्टे से सम्मान किया गया।

स्व. किशोरभाई त्रिवेदी

जो घर फूँके अपना - चले हमारे साथ

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व.किशोर भाई त्रिवेदी की पत्नी स्व.कमला बेन त्रिवेदी का नाम चाहे तारीख के पन्नों पर नहीं चढ़ा हो, पर शाजापुर की मिट्टी का कण-कण गवाह है कि किस तरह बेन सहधर्मिणी का कर्तव्य निभाते हुए अपने पति के साथ हर कदम पर साथ रही।

स्व.कमला बेन त्रिवेदी

'एक नारी के त्याग, बलिदान की गाथा'

'कबीर' द्वारा ये पंक्तियाँ ऐसे व्यक्तियों के लिए आह्वानित की गई थी, कि जो अपने घर बार की चिंता किए बगैर समाज में नई दिशा प्रकाशित करने, समाज को बदलने का कृत संकल्प लेकर कूद पड़े।

ऐसे ही देश में अंग्रेजी हुकुमत से आजाद कराने, भारत माता की परतंत्रता की बेड़ियों को काट देने की भावना का ज्वार लिए, महात्मा गाँधी के आह्वान पर आजादी के आन्दोलन में कूद पड़ने वालों में शाजापुर के स्व.किशोरभाई त्रिवेदी का नाम आजादी के इतिहास को महिमा मण्डित करता रहेगा। स्व.भाई ने अपने ध्येय के पीछे ये चिंता नहीं पाली कि, उनके घर परिवार का क्या होगा, बच्चों की परवरिश कैसे होगी?

ऐसे बिरले व्यक्तित्व के धनी स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व.किशोर भाई के लिए 'कहावत' घर फूँक तमाशा देखा चरितार्थ हो सकती थी, लेकिन उनकी पत्नी स्व.श्रीमती कमला बेन, एक अडिग प्रहरी की तरह परिस्थितियों से सामना करने के लिए खड़ी रहीं। परिवार आर्थिक परिस्थितियों से गुजरा, जरूर, लेकिन उसका तमाशा नहीं बनने दिया। स्व. कमला बेन ने न केवल अपना घर परिवार व बच्चों को ठीक से संभाला, वरन अपने पति के साथ आजादी के आन्दोलन में भी हमेशा साथ रही, उन्हें सम्बल प्रदान करती रही।

तारीख के पन्नों पर चाहे स्व.कमला बेन का नाम नहीं चढ़ा हो, पर शाजापुर की मिट्टी का कण-कण गवाह है कि किस तरह उन्होंने सहधर्मिणी का कर्तव्य निभाते हुए वे अपने पति के साथ हर कदम पर साथ रही। धवल खादी की साड़ी (नीली बार्डर वाली) पहन, हाथ में तिरंगा लेकर प्रभात फेरियों में सदैव आगे चलना, 'इंकलाब जिन्दाबाद' के नारे लगाकर अंग्रेजी हुकुमत के खिलाफ जो शंखनाद किया था वह शाजापुर के इतिहास में चिरस्मरणीय रहेगा।

ये एक नारी के त्याग, तपस्या, साहस और बलिदान की गाथा है। अपने स्वास्थ्य की परवाह नहीं करते हुए, हर घड़ी मुश्किल में तूफानों से टकराने हेतु दृढ़संकल्पता के साथ अपने पति के साथ जुझती रही।

सन् 1931-32 में जबकि गोरे विदेशी शासन का दमन चक्र जोरों से घूम रहा था, स्व.मोरजी भाई देसाई द्वारा संचालित कांग्रेस सेवा दल के ट्रेनिंग शिविर में एक अनुशासन बद्ध सैनिक की तरह दोनों पति-पत्नी ने शिविर में हिस्सा लिया। स्वास्थ्य ठीक नहीं रहते हुए भी कर्तव्य परायणता का परिचय दिया।

इसी तरह हर पल, हर कदम पर साथ देते हुए 'धरसाना सत्याग्रह' में स्व. बेन, अपने पति के साथ रही। उस समय भाई के पैरों में भयंकर पीड़ा थी, चलना भी मुश्किल था, किन्तु बेन उनके पैरों पर पट्टी बाँधते-बाँधते साथ चली। इस आन्दोलन के दौरान दोनों पति-पत्नी की तत्परता और कर्मठता को देखकर स्व.सरदार वल्लभभाई पटेल ने दोनों की पीठ थपथपाई और आशीर्वाद देते हुए भाई को 'जख्मी सिपाही' की संज्ञा दी। इस प्रोत्साहन से दोनों पति-पत्नी अपना दर्द भूलकर दूने उत्साह से सत्याग्रह की गतिविधियों में भाग लेते रहे।

ये बात उस समय की है, जब गाँधीजी द्वारा नमक सत्याठाह आन्दोलन चलाया जाकर डांडी यात्रा नमक कानून को तोड़ते हुए प्रारम्भ की। त्रिवेदी दम्पत्ति कब पीछे हटने वाले थे। आजादी के दीवाने, कार्यकर्ताओं के साथ डांडी यात्रा में शामिल हुए तथा नमक कानून तोड़ने के जुर्म में यरवदा और साबरमती के जेलों में साढ़े सात माह का कारावास भुगता। अंग्रेजी हुकूमत दोनों की राष्ट्र भक्ति को डिगा नहीं सकी।

पारिवारिक कारणों से सन् 1935 में गुजरात से भाई को मालवा प्रांत शाजापुर में आकर बसना पड़ा। पर जिसने भारत माता की दासता की बेड़ियों को काटने का दृढ़संकल्प ले रखा हो, वह चुप कैसे बैठा रहता। शाजापुर में भी अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ अपनी आवाज बुलन्द रखी। शाजापुर के पं.बालकृष्ण शर्मा नवीन, प्रभागचन्द्र शर्मा, प्रताप भाई, रघुनन्दन शर्मा, चन्द्रशेखर भट्ट आदि के साथ मिलकर अंग्रेजों की खिलाफत का अभियान जारी रखा। यहाँ भी कमला बेन छाया की तरह अपने पति के साथ रही और उनका मनोबल डिगने नहीं दिया। (क्रमशः)

प्रस्तुति- सुरेश दवे 'मामा'
शाजापुर, मो.9753050546

पुत्रीरत्न प्राप्ति - बधाई

चि. मनीष नागर
(सुपुत्र- स्व.श्री महेन्द्रजी-मनोरमा नागर)
एवं
सौ.श्रद्धा नागर
(सुपुत्री- दीपक-सौ.संगीता शर्मा)
के यहाँ पुत्री रत्न की प्राप्ति 2 फरवरी 2017 को हुई। समस्त नागर एवं शर्मा परिवारों की ओर से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

बधाई-जीवेम् शारद- शतम-शुभकामनाएं

हमारी लाडली बिटिया

नेहा नागर
1 मार्च 2017

परी नागर
4 अप्रैल 2017

को वर्षगांठ की
बहुत-बहुत शुभकामनाएं

शुभेच्छु- सुशीला बाबूलाल नागर (दादा दादी)
उषा विजयनगर (बड़े पापा-बड़ी मम्मी)
प्रेमलता-प्रेमनारायण नागर (नाना नानी)
अंजना डाली-चंद्रशेखर नागर (पापा मम्मी)
अंजना-राहुल नागर (मामा मामी), अजय नागर (मामा)
राहुल नागर, शालू नागर, सोनू नागर, परी नागर (भाई बहन)
एवं समस्त नागर परिवार नेनोरा

सौजन्य से -अवंतिका न्यूज़ एजेंसी पिपलियामंडी

चि. प्रांश

1 मार्च

सुपुत्र - राहुल - सौ. दीपा रावल (नोएडा)
को चतुर्थ जन्मदिवस की
हार्दिक शुभकामनाएँ

शुभकांक्षी -
पं. रमेशचंद्र-सौ सूर्यकांता रावल (नानाजी - नानीजी)
पं. नवीन रावल (बड़े पापा) शाजापुर
पं. महेन्द्र मिश्रा (नानाजी एवं नानी जी) नई दिल्ली
एवं समस्त रावल परिवार सौ. - 8109481593

पिता - धर्म के प्रतीक

स्व.शिवप्रसादजी शर्मा
अवसान 1 मार्च

रक्षा का वचन

धर्मो रक्षति रक्षितः धर्म कहता है कि तुम मेरी रक्षा करो, मैं तुम्हारी रक्षा करूंगा। वास्तव में देखा जाए तो पिता भी धर्म के समान है, वे भी रक्षा के प्रति वचनबद्ध है। जब तक पिता संसार में मौजूद है तब तक सन्तान बहुत बेफिक्र होती है, हालांकि पिता जब इस संसार में नहीं होते तब भी उनकी आशीर्वाद रुपी छत्र-छाया सदैव बनी रहती है।

हो सकता है कि अपने पिता के बताये रास्ते पर चलने वाली संतान को अतिरिक्त आशीर्वाद प्राप्त होते हों? और उसी की बदौलत उन्नति एवं समृद्धि प्राप्त होती है। दरअसल एक पिता अपने पुत्र में अपनी ही छाया देखता है तथा कमोबेश उसकी तमन्ना होती है कि कर्म एवं स्वभाव में बेटा कम से कम पिता जैसा हो, उससे ज्यादा हो तो खुशी का पैमाना अलग होता है। समय बदला, युग बदला लेकिन एक पिता की तमन्ना कभी नहीं बदलती। कईं पिता तो यह भी चाहते हैं कि मेरा बेटा रोजगार या करियर भी मेरी तरह चुनें, या मेरे ही व्यवसाय को आगे बढ़ाएं.. कईं पिता इस इच्छा में कामयाब होते हैं कईं नहीं भी। लेकिन अंततः बात तो धर्म के वचन की तरह ही है कि तुम मेरी रक्षा करो तो मैं तुम्हारी रक्षा करूंगा। पिता भी कहता है कि तुम मेरे बताएँ रास्ते पर चलो, जरूरत पड़ने पर मेरे सहयोगी बनो, मेरी सेवा करो।

दरअसल एक पिता अपने पुत्र में अपनी ही छाया देखता है तथा कमोबेश उसकी तमन्ना होती है कि कर्म एवं स्वभाव में बेटा कम से कम पिता जैसा हो, उससे ज्यादा हो तो खुशी का पैमाना अलग होता है।

यह सब परस्परता की तो बातें हैं और यह कितनी सच और यथार्थ है हम सब देख-महसूस कर सकते हैं। पिता यही तो चाहता है कि मैं अपने बेटे में जिंदा रहूँ और यह सिलसिला पीढ़ी दर-पीढ़ी चलता रहता है। यदि मनुष्य को सफल होना है तो अपने पिता के आचरण अवश्य लेना चाहिए उसे धर्म की रक्षा भी करना चाहिए, क्योंकि पिता के बताये रास्ते पर वह चलेगा तो लौकिक जीवन उसका सफलता से बीत जाएगा और यदि धर्म के बताए रास्ते पर चलेगा तो उसका परलोक भी सुधर जाएगा। कहावत है कि पिता पर पुत्र देश पर घोड़ा.. बहुत नहीं तो थोड़ा-थोड़ा। अनुसार पिता के गुण तो पुत्र में स्वतः ही हस्तांतरित होते हैं, परन्तु कर्म के लिए पुत्र को प्रयास करना पड़ता है, उसी प्रकार हम परमपिता की सन्तानें हैं वे आत्म स्वरूप में हमारे भीतर मौजूद है, लेकिन धर्म के जो गुण हैं उन्हें हमें ही अपने अंदर जागृत करना पड़ता है तभी तो लौकिक और परलौकिक रक्षा का वचन मिलता है, जो करता है वह पाता है, उसी को कर-पा (कृपा) कहते हैं। यदि मनुष्य धर्म के द्वारा अपनी रक्षा का वचन लेना चाहता है तो उसे धर्म के निम्नलिखित गुण तो अपनाना ही पड़ेंगे, जो निम्नानुसार है-

इस विश्व की रक्षा करने वाले वृषभरूप धर्म के चार पैर माने गए हैं-

सतयुग में चारों पैर पूरे रहते हैं, त्रेता में तीन, द्वापर में दो और कलयुग में एक पैर रह जाता है। **धर्म के चार पैर है-** सत्य, दया, शांति और अहिंसा। इनमें **सत्य के बारह भेद है-** झूठ न बोलना, स्वीकार किये हुए का पालन करना, प्रिय वचन बोलना, गुरु की सेवा करना, नियमों का दृढ़ता से पालन करना, आस्तिकता, साधुसंग, माता-पिता का प्रिय कार्य, बाह्य शौच, आन्तर शौच, लज्जा और अपरिठाह।

दया के छः प्रकार है- परोपकार, दान सदा हंसते हुए बोलना, विनय, अपने को छोटा समझना और समत्वबुद्धि।

शान्ति के तीस लक्षण है- किसी में दोष न देखना, थोड़े में सन्तोष करना, इन्द्रिय संयम भोगों में अनासक्ति, मौन, देवपूजा में मन लगना, निर्भयता, गम्भीरता, चित्त की स्थिरता, रुखेपन का अभाव, सर्वत्र निःस्पृहता, निश्चयात्मिका बुद्धि, न करने योग्य कार्यों का त्याग, मानापमान में समता, दूसरे के गुण में श्लाघा, चोरी का अभाव, ब्रह्मचर्य, धैर्य, क्षमा, अतिथि सत्कार, जप, होम, तीर्थसेवा, श्रेष्ठपुरुषों की सेवा, मत्सरहीनता, बन्ध-मोक्ष का ज्ञान संन्यास-भावना अति दुःख में भी सहिष्णुता, कृपणता का अभाव और मुर्खता का अभाव।

अहिंसा के सात भाव है- आसनजय, दूसरे को मन-वाणी, शरीर से दुःख न पहुँचाना, श्रद्धा, अतिथि सत्कार, शान्त भाव का प्रदर्शन, सर्वत्र आत्मीयता और दूसरे में भी आत्मबुद्धि।

यह धर्म है। इस धर्म का थोड़ा-सा भी आचरण परम लाभदायक है और इससे विपरित आचरण महान हानिकारक है। इसी प्रकार पिताजी की भावना अनुसार आचरण लाभदायक है तथा उनके विपरित चलना हानिकारक है।

-दीपक शर्मा एवं परिवार

श्रीमती प्रभादेवी शर्मा
अवसान 23 मार्च

माता - संस्कार की प्रतीक

जो जीने की राह बताए

आज के दैनंदिन जीवन में हमें सबसे ज्यादा किसी चीज की कमी महसूस होती है तो वह है 'संस्कार'। संतान को संस्कार देने की पहली जिम्मेदारी माँ की है फिर गुरु का नम्बर आता है। दरअसल जीवन जीने की उत्कृष्ट शैली का नाम ही 'संस्कार' है। जिस प्रकार पक्षी को उड़ने की तैयारी देखकर उसकी माँ बेफिक्र हो जाती है, उसी प्रकार संतान को संस्कारित होने की भी उम्र होती है।

एक उम्र के बाद संतान को उसी प्रकार छोड़ देना चाहिए, जैसे वह उड़ान के लिए तैयार हो गया हो। सबसे बड़ी विडंबना है कि वर्तमान समय में 'संस्कार' की सबसे बड़ी जरूरत है क्योंकि बच्चों को पंख लगते ही वे उड़कर बहुत दूर चले जाते हैं, उस जमाने में माँ अपने बच्चों को संस्कारित किया करती थी जब वे कहीं बाहर नहीं जाते थे, जीवन पर्यन्त माँ की आँखों के सामने ही रहते थे। भोजन करवाते समय या बैठते-उठते माँ ज्ञान की बातें कहती रहती थी। कुछ गलत हुआ तो टोंक देती थी, उनका आचरण भी अनुकरण के योग्य होता था, लेकिन आज उल्टा हो गया है, मां के पास बच्चों के लिए समय ही नहीं है, वह खुद मोबाईल, टीवी में व्यस्त है कि बच्चों का बिगड़ना तय हो गया है। इस बारे में विचार करना जरुरी है।

आखिर आज भी माँ के ऊपर ही संस्कार देने की जिम्मेदारी है। और वह जिम्मेदारी पहले की अपेक्षा अधिक बढ़ चुकी है। हमने देखा है माँ ज्ञान की बातें बताने के अलावा अपने आचरण से भी शिक्षा देती थी तथा कुछ शब्द हमेशा बोलते रहना कि 'किसी का अच्छा न हो सके तो भले ही मत करो, लेकिन किसी का बुरा मत करना। पहले के जमाने में संतान को दो प्रकार से संस्कार प्राप्त होते थे। आज दोनों ही तरह से संस्कार नहीं मिल पा रहे हैं। हम यदि अपने परिजनों, रिश्तेदारों का कल्याण नहीं कर पाते तो यह बहुत चिंताजनक है। अभी भी देर नहीं हुई है अपने बच्चों को समय रहते पढ़ाई एवं कॅरियर के साथ अध्यात्म से जुड़ने की सलाह दी जाए। वे थोड़ा समय निकालकर श्रीमद् भगवद् गीता या रामायण का अध्यनय करें। दोपहर एवं शाम भले ही टीवी या वाट्सअप में बीते लेकिन सुबह की शुरुवात घर में भजनों के साथ होना चाहिये। इस शुरुआत की पहल माँ को करना पड़ेगी। वह थोड़ा समय निकालकर धर्मग्रन्थों से जुड़े। उनकी देखा-देखा जरूर सन्तान भी उस ओर अग्रसर होगी। धैर्य रखें.. निरन्तर प्रयत्न करें। आजकल परिवार के सभी सदस्य इतने व्यस्त हैं कि उन्हें आपस में बात करने तक का वक्त नहीं है।

अब केवल संस्कार देने का एक ही तरीका है वह है अपने आचरण के माध्यम से संस्कार देने का, तो माता-पिता दोनों ही अपने जीवन को इतना उत्कृष्ट बनाए कि उससे सन्तान शिक्षा ले सके तथा अपने लोक एवं परलोक को सुधार सके।

-दीपक शर्मा एवं परिवार

नागर महिला मण्डल की फरवरी माह की बैठक

विभिन्न विषयों पर चर्चा और व्यंजन प्रतियोगिता सम्पन्न

नागर महिला मंडल की मासिक बैठक 18 फरवरी को आयोजित की गई। जिसमें 25 महिला सदस्य उपस्थित रही। उपरोक्त बैठक में विभिन्न विषयों पर चर्चा की गई, जनवरी माह में आयोजित बैठक में तय किया गया था कि आगामी माह बसंतोत्सव एवं वैलेन्टाईन डे के बारे में चर्चा करेंगे, विभिन्न उत्सवों के दौरान हमारे जीवन में क्या परिवर्तन आते हैं तथा अत्यधिक प्रचलित हो गए त्यौहारों को मनाने का क्या तरीका हो? बासंती बयार के साथ होली का त्यौहार और रंग बिरंगी कृष्ण लीला और साथ ही परीक्षाओं का मौसम। फरवरी माह की बैठक में ही मटर व्यंजन की प्रतियोगिता भी आयोजित की गई। जिसमें श्रीमती हर्षा बेन, श्रीमती गायत्री मेहता, श्रीमती सुषमा मेहता, श्रीमती चारुमित्रा नागर, फाल्गुनी व्यास, नीलिमा दवे को पुरुस्कृत किया गया।

आगामी बैठक मार्च के तृतीय सप्ताह में- मार्च महीने की बैठक तीसरे सप्ताह में आयोजित होगी। होली पर्व के पश्चात् तारीख की घोषणा की जाएगी। महिला सदस्यों से आग्रह है कि वे तारीख की सूचना स्वयं प्राप्त कर लेवें, यह बैठक महिला दिवस एवं उपभोक्ता दिवस पर आधारित है। स्वयं का मूल्यांकन करने का अवसर है अतः इस विषय पर तैयारी करें तथा कविताएँ, कहानी, गीत आदि लिखकर लावें।

श्री रितेश नागर का सुयश

श्री रितेश नागर पिता श्री जगदीश नागर रतलाम म.प्र. पुलिस भर्ती परीक्षा 2016 में सफल होकर पुलिस सब इंस्पेक्टर के पद पर चयनित हुए हैं। रितेश नागर द्वारा इस अविस्मरणीय सफलता के परिवार एवं नागर समाज को गौरवान्वित किया है।

शुभाकांक्षी- अनन्त व अनन्या नागर शर्मा परिवार, राऊ, नागर परिवार, रतलाम

श्रीमती तिलोत्तमा नागर संभागीय अध्यक्ष नियुक्त

शाजापुर में राष्ट्रीय ब्राह्मण युवजन सभा के प्रदेश अध्यक्ष अशोक भारद्वाज ने नगर की समाजसेवी श्रीमती तिलोत्तमा जैनेंद्र नागर को सभा की महिला प्रकोष्ठ का संभागीय अध्यक्ष नियुक्त किया है। गौरतलब है कि श्रीमती नागर वर्तमान में नागर ब्राह्मण समाज की महिला शाखा की उपाध्यक्ष भी हैं। साथ ही मप्र नागर महिला मंडल की सक्रिय सदस्य भी हैं। श्रीमती नागर कर्मठ एवं जुझारू महिला है। आप समाज के विभिन्न कार्यक्रमों में बढ़ चढ़ कर भाग लेती रही हैं।

तबला वादन में प्रदेश में तृतीय स्थान पाया

निनोरा निवासी गुरुदत्त (नागर) मेहता कक्षा 11वी उत्कृष्ट विद्यालय की ओर से तबला वादन में प्रदेश में तृतीय स्थान आने पर नगर परिषद मन्दसौर के अध्यक्ष,जिला शिक्षा अधिकारी, विद्यालय के प्राचार्य और व्याख्याता द्वारा सम्मानित हुआ। इस अवसर पर बी.एस.पटेल, प्राचार्य प्रथ्वीराज परमार सहित विद्यालय का पूरा स्टाफ उपस्थित था।

श्री अखिल नागर पदोन्नत

अखिल नागर सहा. प्राध्यापक पारूल युनिवर्सिटी बड़ौदा (गुज.) की पदोन्नत कर विश्वविद्यालय का सहा. कुलसचिव (परीक्षा) Asstt. Registrar (Exam) नियुक्त किया है।

इस नियुक्ति पर समाजजन एवं हितेषियों ने बधाई दी।

आप उज्जैन निवासी सौ.सुचिता, अशोक नागर के सुपुत्र एवं जागीरदार सा. दुर्गाशंकरजी त्रिवेदी के सुपौत्र हैं।

सौजन्य- सौ.रुचि, आशीष मेहता
बड़ौदा (गुजरात)

कु.वैभवी प्रफुल्ल मण्डलोई को 'स्टूडेन्ट ऑफ द ईयर' अवार्ड

नागर ब्राह्मण समाज की कु.वैभवी प्रफुल्ल मण्डलोई को सेंट पायस हायर सेकेंडरी स्कूल के प्रतिष्ठित सम्मान 'स्टूडेन्ट ऑफ द ईयर' अवार्ड से सम्मानित किया गया। स्कूल के वार्षिक उत्सव 'यूरेक्राफ्ट 2016' के मुख्य अतिथि जिला पुलिस अधीक्षक डॉ. महेन्द्र सिंह सिकरवार एवं खण्डवा डायोसिस के बिशप श्री पी.दुरईराज ने स्कूल की कक्षा दसवीं की छात्रा कु. वैभवी को भव्य समारोह में अवार्ड की ट्राफी एवं प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया। इसके पहले तीन वर्षों में वैभवी अपनी कक्षा की बेस्ट गर्ल के रूप में सम्मानित हो चुकी है। इस वर्ष सेंट पायस स्कूल के लगभग 3000 विद्यार्थियों में से सर्वश्रेष्ठ विद्यार्थी के रूप में उसका चयन हुआ है। इस अवसर पर स्कूल प्राचार्य सिस्टर सिन्सी, मैनेजर फॉदर जोस जार्ज, स्कूल के शिक्षक-शिक्षिकाओं के साथ बडी संख्या में सेंट पायस स्कूल के विद्यार्थी एवं पालकगण उपस्थित थे। सम्मान प्राप्त करने के बाद वैभवी के माता-पिता श्रीमती कामिनी मण्डलोई एवं प्रफुल्ल मण्डलोई ने वैभवी के नर्सरी से कक्षा दसवीं तक के सभी शिक्षक-शिक्षिकाओं के साथ ही प्राचार्य एवं वैभवी की प्रतिभा को निखारने मे सहायता देने वाले सभी मार्गदर्शकों का आभार व्यक्त किया। वैभवी की इस उपलब्धि पर दादा-दादी श्री प्रभाकर राव मण्डलोई-भावना मण्डलोई, काका-काकी प्रेमेन्द्र मण्डलोई-मीनू मण्डलोई, बुआ-फूफाजी पूर्वी-विपिन मेहता, बहनों विदुषी मण्डलोई, श्रेया मण्डलोई, माही मण्डलोई, भाई जयेश मेहता, नागर ब्राह्मण समाज के सदस्यों, रोटरी क्लब के सदस्यों, मित्रों एवं शुभचिंतकों ने हर्ष व्यक्त किया है। कृपया हाटकेश वाणी में प्रकाशित कर अनुग्रहित करें।

-प्रफुल्ल मण्डलोई
44 सुभाष नगर, खण्डवा 9827331200

श्रीमती मनोरमा नागर का सम्मान

माध्यमिक विद्यालय संजय वार्ड में पदस्थ श्रीमती मनोरमा नागर का उत्कृष्ट सेवाओं हेतु नगर परिषद अध्यक्ष ने सम्मान किया। नगर परिषद द्वारा उन्हें उत्कृष्टता पुरुस्कार प्रदान करने पर नागर समाज ने गौरवान्वित हो बधाई दी।

मालव-माटी के गौरव - अम्बर व्यास

एरिना मल्टीमीडिया इंदौर के त्रिवर्षीय डिप्लोमा के विद्यार्थी अम्बर व्यास गत 12 वर्षों से मुबई में फिल्मों व् टीवी सीरियल्स में एडिटिंग व् डायरेक्शन का सफलतम कार्य कर रहे हैं। लखनऊ के सुप्रसिद्द शायर मज़ाज की जीवनी पर बनी फिल्म मज़ाज- ए गमें दिल क्या करूँ में आपने श्रेष्ठ एडिटिंग की है। इस फिल्म के मुख्य पात्र श्री मज़ाज ने अलीगढ मुस्लिम विश्वविद्यालय के छात्र रहते हुए इंकलाबी शायरों का साथ किया था और शायरी लिखते हुए खुद भी शायर बन गये।अलीगढ मुस्लिम विश्वविद्यालय में मज़ाज पढ़े थे और इस फिल्म का कुछ भाग इस विश्वविद्यालय में भी फिल्मांकन किया गया है। इस फिल्म में शायर मजाज की प्रेम कहानी को भी फिल्माया गया है। इस फिल्म के विशिष्ट स्क्रीनिंग सेशन में भारत के उपराष्ट्रपति एम् हमीद अंसारी व् श्रीमती सलमा अंसारी भी मौजूद थे। इस फिल्म का प्रीमियर 19 जनवरी को दिल्ली में सफलता पूर्वक संपन्न हुआ । मज़ाज फिल्म 20 जनवरी 2017 को रिलीज हुई है। अम्बर व्यास द्वारा एडिट की गई पूर्णकालिक फीचर फिल्म सिटी ऑफ़ ड्रीम्स, साउंडट्रेक, काम का प्लाट व् मज़ाज फिल्म्स रिलीज हो चुकी हैं।

श्री व्यास ने पूर्णकालिक फीचर फिल्म , 498ए द वेडिंग गिफ्ट, फेमस पाण्डे बजट ट्रिप में श्रेष्ठ एडिटिंग का कार्य भी किया है, जो रिलीज होना शेष है। दुमकटा एलेक्स हिन्दुस्तानी, अता पता लापता तुक्का फिट मिथ्या वेलेंटाइन नाईट फिल्मों के ट्रेलर्स व् प्रोमो को भी श्रेष्ठता के साथ श्री व्यास ने तैयार किया है।

टेलीविज़न के लिए भी आप ने 2005 से अनवरत क़ाम किया है। नेशनल जियोग्राफिक चैनल के लिए एक्सट्रीम ट्रेल रियलिटी शो, एन डी टी वी - इमेजिन के लिए रियलिटी शो देसी गर्ल रतन का रिश्ता स्वयंवर राज पिछले जनम का , व् शादी तीन करोड़ की, व् बालाजी टेलीफिल्म्स के लिए कसौटी ज़िन्दगी की के लिए सफलतम एडिटर के रूप में कार्य किया है। आपने ट्रेवल चेनल , टंगरीन डिजिटल में पोस्ट प्रोडक्शन हेड के रूप में कार्य किया है। स्वस्तिक आर्ट्स की डाक्युमेंटरीज के लिए डायरेक्टर व् एडिटर का कार्य किया है। डिजिटल एफ एक्स के लिये टेक्नीकल हेड का कार्य किया है। फिल्मों में फोटोग्राफी , वीडियोग्राफी ,एडिटिंग व् डायरेक्टर के मुंबई के श्रेष्ठ व् वृहद अनुभव के महारथी अम्बर का मालव की माटी से प्रगाढ़ सम्बन्ध रहा है। अम्बर मूलत: पीपलरावा, जिला देवास के सुप्रसिद्ध विद्वान् पंडित श्यामलाल व्यास के प्रपौत्र, डॉ पूर्णानन्द व्यास के पौत्र एवम कामेश्वर - शारदा के पुत्र हैं। धार के सेंट टेरेसा स्कूल में एवं उज्जैन व् इंदौर की शिक्षण संस्थाओं में अकादमिक अध्ययन किया है। अम्बर व्यास गत 12 वर्षों से मुम्बई में कार्य करने के पश्चात कलर बार मीडिया वर्क्स के फिल्म एडिटर एवं डायरेक्टर के रूप में फिल्मो के डायरेक्शन हेतु शीघ्र ही इंदौर में स्थापित होकर इंदौर व् मालवा के कलाकारों को अवसर प्रदान कर फीचर फिल्मों , लघु फिल्मों एवम सीरियलों के निर्माण के लिए फरवरी 2017 से कार्य करने हेतु कृत संकल्पित हैं ।

प्रस्तुति-डॉ तेज प्रकाश व्यास , सेवा निवृत्त प्राचार्य -शासकीय महाविद्यालय धार .
FH-67 , स्कीम 54, सॉफ्ट विजन कालेज के पीछे ,इंदौर
94074 33970 / 79877 13115
संपर्क- अम्बर व्यास
अपराह्न 011 बजे पश्चात / मोबाइल नंबर 97544 50005

युवा प्रतिभा की उपलब्धि

नेहा नागर का प्रतिष्ठित चयन

नागर समाज, उज्जैन की प्रतिभावान युवा अभियन्ता नेहा नागर आत्मजा श्री नरेन्द्र नागर श्रीमती चन्द्रिका नागर, उज्जैन ने एम.आय.टी. इंजीनियरिंग कॉलेज (राजीवगाँधी प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, भोपाल से सम्बद्ध) से बी.ई. (ऑनर्स) ब्रांच (इलेक्ट्रॉनिक्स एण्ड कम्यूनिकेशन) 91 प्रतिशत अंकों से उत्तीर्ण की। वर्तमान में इनका चयन/नियुक्ति देश के प्रतिष्ठित औद्योगिक समूह आदित्य बिड़ला समूह की ठोसिम इण्डस्ट्रीज लिमिटेड, नागदा में 'प्रशिक्षु इंजीनियर के पद पर हुआ है। आपने कार्यभार ठाहण कर अपनी सेवाएँ प्रारंभ कर दी है। उनकी इस उपलब्धि पर व्यास नगर नागर परिवार, इष्ट मित्रों तथा समाजबन्धुओं ने हर्ष व्यक्त कर उनकी इस उपलब्धि पर बधाई दी।

अगर कोई आपको नीचा दिखाना चाहता है तो इसका मतलब है आप उससे ऊपर हैं।

वैवाहिक (युवक)

धवल दीपक देसाई
जन्मदि. 26-10-1990
समय- 1.5 ए.एम., खण्डवा
शिक्षा- एम.बी.ए. पॉवर मैनेजमेन्ट, डी.वी.ई. इलेक्ट्रिकल
कार्यरत- असिस्टेंट मैनेजर (बी.डी. यूटिलिटी) दिल्ली
सम्पर्क- कपडवंज (गुज.)
मो. 8377009973, 9824403502

शशांक भरत कुमार नागर
जन्मदि. 1-10-1990
स्थान- सुमेरपुर (पाली) राज.
शिक्षा- सी.ए.
कार्यरत- सी.ए. इन ई एण्ड वॉय, बैंगलोर
वेतन- 8.5 लाख वार्षिक
सम्पर्क- 9414883232, 7275692408

रितेश अरुण शंकर याज्ञनिक
जन्मदि. 9-8-1989
समय- 8.40 ए.एम., नईदिल्ली
कद- 5'11"
शिक्षा- बी.टेक. (ईसीई)
कार्यरत- सरकारी अधिकारी (केन्द्रीय सचिवालय सेवा) रक्षा मंत्रालय, नई दिल्ली
सम्पर्क- भगवतगढ़ मो. 8764076354, 9667290857, 8764249492

मुकेश स्व.विजयकांत मिश्रा
जन्मदि. 21-12-1982
कार्यरत- प्रायवेट नौकरी
सम्पर्क- 9754310221, 8109265480

गौरव महेश नागर (मांगलिक)
जन्मदि. 14-5-1993
समय- प्रातः 11 बजे, कपालिया
शिक्षा- बी.कॉम., बी.पी.ए. एम.कॉम. अध्ययनरत
कार्यरत- मलखब योगाचार्य शाखा विहार, भोपाल
सम्पर्क- 9179313313

प्रचेता नागर (मांगलिक)
जन्मदि. 7-10-1972, समय- 7.10 ए.एम.
कद- 5'10", वजन- 72, गौत्र- गार्गस
शिक्षा- बी.ई.
कार्यरत- असिस्टेंट मैनेजर- टाटा मोटर्स
सम्पर्क- श्रीमती विभा नागर
मो. 9198125131

लोकेश मनोहरलाल भंडारी
जन्मदि. 6-8-1990
कार्यरत- कर्मकांड ज्योतिषाचार्य
सम्पर्क- डेलची
मो.9755210829

चन्द्रेश महेशचन्द्र दशोरा
जन्मदि. 18-2-1983
शिक्षा- बी.ई. (ईसीई) एम.बी.ए. (आय.टी.)
कार्यरत- सीनियर रिसर्च एनालिस्ट (आर्क गेट कं., उदयपुर) मो. 9950498597

शुभम चन्द्रशेखर नागर
(जन्मनाम की शुरुआत 'ल' से)
जन्मदि. 24-1-1991
समय- 7.46 पी.एम., उज्जैन
गौत्र- शार्कराक्ष, कद- 5'8"
शिक्षा- पी.ई. (कम्प्यूटर साईंस, इंजीनियरिंग)
कार्यरत- ई-कामर्स एक्जीक्यूटिव (अंकित एलएलसी इन्दौर)
सम्पर्क- उज्जैन मो. 9754582860, 9617215349

चितरंक दवे
जन्मदि. 20-11-1991
समय- 9.15 सुबह, इन्दौर
कार्यरत- सॉफ्टवेयर इंजीनियर मेटसॉल्स कम्पनी, इन्दौर
सम्पर्क- मो. 8982353513

दूसरों की नज़र में अच्छे न बनकर अपनी नज़र में अच्छे बनो।

वैवाहिक (युवती)

सोना महेश नागर (मांगलिक)
जन्मदि. 27-9-1989
समय- 5.5 शाम, शाजापुर
शिक्षा- एम.ए., एल.एल.बी., पी.एच.डी. (अध्ययनरत)
सम्पर्क- कपालिया
मो. 9179313313

कु. मालती महेश नागर
जन्मदि. 23-3-1991
समय- 4.00 सुबह, मंगलाज
शिक्षा- बी.कॉम., एम.ए.
कार्यरत- म.प्र. पुलिस
सम्पर्क- मो. 9179313313

रुपाली राजेश नागर
जन्मदि. 5.5.1988
समय- 1.13 पी.एम., अलवर, (राज.)
शिक्षा- बी.बी.ए., एम.बी.ए. (मार्केटिंग एण्ड एच आर) सम्पर्क- वाराणसी
मो. 9793913246, 7309755456

कु.वर्षा रविकांत दीक्षित
जन्मदि. 20-7-1992
समय- 4.10, ग्राम- सिर्रा
गौत्र- साकल्य, कद- 5'3"
शिक्षा- एम.ए., एम.एड.
कार्यरत- अध्यापक, शास. कन्या प्राथमिक शाला, सिर्रा
सम्पर्क- सिर्रा मो. 9755464609, 9981988045
(नोट- शासकीय सेवक को प्राथमिकता)

तृप्ति महेशचन्द्र दशोरा (मांगलिक)
जन्मदि. 29-1-1981
शिक्षा- एम.एस.सी., एम.बी.ए. नेट
कार्यरत- व्याख्याता (प्रायवेट कॉलेज)
सम्पर्क- 9950498597
(नोट- समकक्ष सेवारत को प्राथमिकता)

ललिता मनोहरलाल भंडारी
जन्मदि. 14-9-1995
शिक्षा- 12वीं अध्ययनरत
सम्पर्क- डेलची
9755210829

टीना सुबोध जोशी
जन्मदि. 4-11-1988
समय- 2.10 पी.एम., इन्दौर
कद- 5'2" गौत्र- कौरव्य
शिक्षा- बीबीए एण्ड एमबीए (फायनेंस एण्ड एच.आर.)
सम्पर्क- 9009019595, 0731-2010211

प्रियंका वाणी विलास जोशी
जन्मदि. 19-7-1988
शिक्षा- स्नातक, एम.एच.एस.सी. फर्स्ट सेमेस्टर अध्ययनरत
गौत्र- कौशल्या
सम्पर्क- खरगोन मो. 8827598660, 7529398449

जन्म दिन की बधाई

रंग बिरंगा जन्मदिन
अरविन्द कुमार जोशी 21 मार्च
कु.नमामि आशुतोष जोशी 25 मार्च
श्रीमती जया-सूर्यप्रकाश नागर- 27 मार्च
श्रीमती उषा-अरविन्द जोशी - 28 मार्च
श्रद्धेय व्रजेन्द्र नागर - 31 मार्च
शुभाकाँक्षी- जोशी, नागर, जाधव, तिवारी (महू) परिवार
-प्रेषक- पी.आर.जोशी, इन्दौर

अनुराधा (रानी) व्यास
8 मार्च
शुभाकांक्षी- शर्मा फैमेली
नामली 9098161415

दीपिका दवे
1 मार्च
शुभाकांक्षी-शर्मा परिवार
नामली जिला रतलाम

गीत

तुम बिन
ये साँसों का बन्धन।
जीवन बिन कारण तो नहीं है
क्या हर बात का निवारण नहीं है?
होता हर बात का समाधान है
मनुष्य न कुछ समय बलवान है,
पर है ये कैसा क्रन्दन?
तुझ बिन..
भूल चूक होती है ये जान
मैंने तुझे पाला तूने क्या कर डाला
फिर भी दूरी बनी है कैसी?
जिंदगी स्वप्नों के जैसी
बंधे कैसे ये प्रीत के बंधन?
तुझ बिन..
मैंने हार अभी नहीं मानी है
दुनियाँ तो ये आनी जानी है
अच्छा बुरा यहाँ सभी जान,
घर परिवार संसार को जाना।
कहाँ तक करूँ में ये मंथन
तुझ बिन..

अच्छा नहीं लगता

-सुभाष नागर भारती
अकलेरा (राज.)

'जय हाटेकश वाणी' ने जोड़ा रिश्ता

जनवरी माह के मेलापक अंक के माध्यम से रिश्ता तय हुआ है, जिसमें अकलेरा (राज.) निवासी एडवोकेट कुलेन्द्रजी नागर-सौ.गायत्री देवी नागर के सुपुत्र चि.हर्षित नागर के साथ सौ.कां. सलोनी नागर (सुपुत्री- श्री राजेन्द्र नागर सौ. ज्योति नागर) का रिश्ता तय हुआ है, तथा आगामी 3 जून 2017 को विवाह सम्पन्न होगा। रिश्ता तय होने के उपलक्ष में परिवारों ने आभार व्यक्त किया है। दोनों परिवारों को बहुत-बहुत बधाई एवं शुभकामनाएँ।

वीर जवानों की गाथाएँ तुमको आज सुनाता हूँ, तूफानों मे डटे रहे जो उनको शीष झुकाता हूँ
कर्म पथ का हूँ अनुरागी देश भक्ति है मेरा काम, भारत माँ की माटी को मस्तक पर लगा मुस्काता हूँ।

हमारे प्रेरणास्त्रोत स्व.लक्ष्मीनारायणजी शुक्ल एवं श्रीमती लक्ष्मीबाई शुक्ल (बा.सा.एवं.मां.सा.)

स्व. श्री नारायणप्रसाद जी एवं स्व. श्रीमती पवित्रा बाई शुक्ल (लसुर्डिया ब्राम्हण) के पौत्र
एवं श्री सन्तोष सौ. पवित्रा शुक्ल के सुपुत्र

चि. आशीष शुक्ल

के मध्यप्रदेश पुलिस सेवा में आगर जिले
में पदस्थापना होने पर
हार्दिक बधाईयां एवं शुभकामनाएं।
(चि.आशीष के अनुज भ्राता चि.अर्पित शुक्ल
पूर्व से ही थल सेना जबलपुर में पदस्थ है।)

"बधाईकर्ता"

श्रीमती सुषमा-ओमप्रकाश शुक्ल (बड़े मम्मी-पापा),
पं.लालशंकर मेहता-स्व.श्रीमती लक्ष्मीबाई मेहता(बुआ-फुफाजी)
श्रीमती पवित्रा-संतोष शुक्ल(मम्मी-पापा), पं.प्रेमनारायण नागर-श्रीमती हेमलता नागर (बुआ-फुफाजी)
श्रीमती तनुश्री-कुलदीप शुक्ल(भाभी-भैया), श्री बी.एल.मेहता-श्रीमती दुर्गा मेहता (बुआ-फुफाजी),
चि.अर्पित शुक्ल (अनुज भ्राता), श्री प्रकाश मेहता-श्रीमती कविता मेहता (भाभी-भैया),
एवं श्री गिरीराज नागर-श्रीमती लीना नागर (बहन-जिजाजी) समस्त शुक्ल परिवार
पं.शिवनारायण जी नागर(नाना जी धरोला), श्रीमती सीमा-आशोक नागर (मामा-मामी जी),
श्रीमती सरिता-कमल नागर (मामा-मामी जी), श्रीमती मनीषा-के.एल.नागर (मामा-मामी जी)

:: फर्म ::
राजराजेश्वरी बस सर्विस, शाजापुर
पवित्रा फाईनेन्स कंपनी, नारायण कुटी स्व निवास शाजापुर

कमाने वाली मशीनों पर नैतिक मूल्य भी चस्पा हो

जब मनुष्य के जीवन में विचारों की श्रृंखला चलती है तो उसके जीवन में श्रद्धा का आगमन होता है तो दुर्बल से दुर्बल विश्वास भी चट्टान की तरह मजबूत और सुदढ़ हो जाता है तथा श्रद्धा, विश्वास तथा आस्था तीनों के संगम से संस्कार व संस्कृति प्रगाढ़होकर अमरत्व को प्राप्त होते हैं और यही समाज के आधार स्तंभ है।

बंधुओं आज के युग में संयुक्त परिवारों की संख्या शनैः शनैः घटती जा रही है। दादा-दादी, बाबा बुजुर्ग, नाना-नानी, बच्चों एवं परिवार के संस्कार केन्द्र होते हैं।संयुक्त परिवारों में बड़ों के आचरण से अनेक अच्छे या बुरे संस्कार अनजाने में ही स्वाभाविक ही आ जाते है। लेकिन अनुभव से देखने में आया है कि छोटे-छोटे एकल परिवारों में बच्चों को व युवा पीढ़ि को अच्छे संस्कारों से दीक्षित करना एक समस्या बन गई है। आईये व संभलिये संस्कारवान समाज बनाने के लिए पूर्वजों की दिलाई सभ्याता व संस्कृति को शिष्ट मर्यादाओं में रहकर मिलजुलकर आगे और आगे बढ़ाने का प्रयास करें सफलता अवश्य ही सदैव हमारे साथ रहेगी।

भाईयों और बहनों संस्कार बाजार में नहीं बिकते। संस्कृति कटलरी की दुकान पर नहीं मिलती परम्पराएँ आधुनिक क्लबों में नहीं होती। इन सबका स्त्रोत हमारा समाज, हमारे बुजुर्ग और हमारे आचार्य (संतजन) समाजसेवी सुविचारक, बुद्धी जीवी, व्यक्तित्व के धनी लोग है। इनके सानिध्य व आशीर्वाद से 'वसुधैव कुटुम्बकम, कृण्वन्तो विश्वम आर्य हमारा ध्येय व लक्ष्य था, क्योंकि हम नागर जन कलम कड़छी एवं बरछी के उपासक हैं।

आज के आधुनिक युग में हम आगे निकलकर ग्लोबल विलेज की ओर आगे बढ़ रहे हैं इसका सामान्य सा अर्थ है विश्वगाँव। गाँवों की अपनी-अपनी विशिष्ट परम्पराएं होती है। जब सारा विश्व सिमटकर एक गाँव बन जायेगा, तब स्वाभाविक है सर्वत्र ग्रामीण परम्पराओं का निर्वाह होगा। मेरे विवेक से ग्लोबल विलेज की सकल्पना भारतीय नहीं है पाश्चात्य है और इसके साथ पाश्चात्य भोगवादी संस्कृति और सभ्यता आ ही नहीं रही बल्कि बहुत तेजी से भारतीय जन मानस विशेषकर युवा पीढ़ी और नौनिहालों को ग्रसित कर रही है। युवा पीढ़ी मर्यादाएँ ही नहीं अपितु संस्कार व संस्कृति तथा नैतिकता मिलनसारिता, सहानुभूति, एक-दूसरे के सुख-दुख की परम्परा को समझने की भूल कर रही है। इस प्रकार से पारम्परिक गुण व्यवसायिकता के स्वरूप में तिरोहित होते जा रहे हैं।

वर्तमान युग में धन की लालसा ने मानव को मशीन बना दिया है। विज्ञान के वरदानी स्वरूप को इस अभिशाप में बदल रहे हैं। धन दौलत कमाना सभी का जन्म सिद्ध अधिकार है, लेकिन तात्पर्य यह तो नहीं कि अपने परिवार समाज तथा अपने नैतिक मूल्यों को ही भूल जाए। स्वयं के परिवार के एवं समाज के उज्ज्वल भविष्य तथा उद्देश्य पूर्ण लक्ष्य की ओर दृष्टि लगाए रखना और उसके लिए सतत प्रयत्न करना विकट प्रसंगों को दूर करने का सरल उपाय है। संकट के समय मन को शांत और चित्त को ठण्डा रखना मनुष्य के लिए बड़ा उपयोगी है।

उत्साही तथा आत्म विश्वासी बनने से कठिनाईयों में भी निरन्तर आगे बढ़ने का साहस मिलता है। संस्कार एवं संस्कृति से समाज सुधार करने का आधार स्तंभ है। जय हाटकेश

विशेष- मैं यहाँ जरुरी बताना चाहूंगा कि इस आलेख को लिपी बद्ध करने की प्रेरणा हाटकेश्वर नागर मण्डल खण्डवा में मनाये गए गणेशोत्सव में दिनांक 14.9.2016 को किए गए 80 वर्ष से अधिक आयु के बुजुर्गों के सम्मान समारोह में, नागर ब्राह्मण समाज खण्डवा के अध्यक्ष श्री देवीदास पोद्धार, सचिव श्री प्रेमनारायण व्यास द्वारा एवं श्री मोरेश्वर राव मण्डलोई (बड़ू भैया) के मार्गदर्शी सिद्धान्तों के उद्बोधन से मिली है जो मासिक जय हाटकेश वाणी पत्रिका के माध्यम से सभी समाजबन्धुओं से शेयर कर रहा हूँ। इसके प्रति सुधी पाठकों की राय अपेक्षित है।

आलेख- गोपाल कृष्ण श्यामलाल दीक्षित
मो. 9955464609

- **अतीत पर ध्यान केन्द्रित मत करो, भविष्य का सपना भी मत देखो, वर्तमान क्षण पर ध्यान केन्द्रित करो ।**
- **आप चाहे कितने भी पवित्र शब्दों को पढ़ या बोल लें , लेकिन जब तक उन पर अमल नहीं करते उसका कोई फायदा नहीं।**

संकलित- जितेन्द्र नागर देवास

हालात के कदमों पे कलंदर नही गिरता..
टूटे भी ये तारा तो जमी पर नही गिरता..
गिरते है समंदर मे बड़े शौक से दरिया
मगर कोई समंदर कभी दरिया
मे नही गिरता

विषय- 'छूटे संस्कार... आए विकार'

एक छोटा सा नेक कार्य, एक बड़े नेक इरादे से बेहतर होता है

प्रसिद्ध विचारक काका कालेलकर के अनुसार- 'विलासिता, निर्बलता, चाटुकारिता आदि विकारों के माहौल में संस्कारों का न तो उद्गम सम्भव है और न विकास।'

श्री सत्य साँई बाबा ने भी कहा है कि इंसान के हृदय में जब घृणा, लोभ, द्वेष जैसे विकारों की विषैली घांस पनप जाती है तो उसके हृदय में प्रेम रुपी पौधा (संस्कार), पनपने से पहले ही नष्ट हो जाता है।

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी का मोहनदास करमचन्द गाँधी से महात्मा गाँधी बनने तक का सफर इस बात का पक्का सबूत है कि वे मानवीय मूल्यों की मर्यादाओं से तथा संस्कारों से बाहर कभी नहीं भटके। सदा विकारों से दूर ही रहे। इसीलिये राजनीति में रहते हुए भी उन्होंने अन्त तक धर्म का दामन नहीं छोड़ा। अपने सहकर्मी राजनीतिज्ञों को सदा उन्होंने यही मार्गदर्शन दिया कि राजनीति पूर्णतः नैतिक मूल्यों की सीमा में ही होना चाहिये जो कि धर्म पालन से ही सम्भव है। इसीलिये वे गीता को बहुत महत्व देते थे।

'संस्कारों के बीज' बचपन में ही बो देना श्रेयस्कर होता है। इसके लिये बच्चों के पाठ्यक्रम में कुछ ऐसी पुस्तकें शामिल होना चाहिये जिन्हें पढ़कर वे कुछ संस्कारवान बन सकते हैं। जैसे- 'एनीमल फॉर्म' नामक बाल साहित्य की एक पुस्तक है जो सिखाती है कि 'मनुष्य को पशुओं के प्रति सदा दयाभाव रखना चाहिये।'

ऐसी ही जे.के. रॉलिंग की- हेरी पॉटर सीरीज है जिससे बच्चों को कक्षा में व हमें भी जीवन के कुछ सबक और संस्कार सीखने को मिलते हैं, जैसे- 'इस संसार में हमसे भिन्न कई लोग है। यदि यह जानना चाहते हो कि कोई मनुष्य कैसा है? तो अच्छी तरह यह देखो कि वह अपने से छोटे लोगों के साथ कैसा बरताव करता है।' 'हानि, असफलता, दुःख-दर्द भी हमारे जीवन के ही अंश है। उनसे निभना भी सीखना चाहिये।' हम जितने संगठित रहेंगे उतने ही मजबूत होंगे। असंगठित और बिखरे हुए रहेंगे तो उतने ही कमजोर होंगे। अतः अपने परिवार व परिजनों के साथ जुड़कर रहो।

'सदा अच्छा ही करो, भलाई ही करो, चाहे यह करना कितना भी दुरूह क्यों न हो।'

'हम सबके भीतर उजला व धुँधला दोनों ही पक्ष विद्यमान रहते हैं। किन्तु हम किसे चुनकर कार्य करते हैं, यह ज्यादा महत्वपूर्ण है। यही कार्य हमारी छवि भी बनाते हैं। दलाई लामा (ध्न) के अनुसार सभी प्रमुख धार्मिक परम्पराएँ एक ही सन्देश देती है- प्रेम, करुणा व क्षमा का और महत्वपूर्ण बात यह है कि ये संस्कार हमारे रोजमर्रा के जीवन का हिस्सा होने चाहिए। किसी कुमार्ग पर चलने वाले को सन्मार्ग पर ले आना एक बड़ा ही नेक काम होता है। स्वामी विवेकानन्द ने ठीक ही कहा है- 'जिसके साथ श्रेष्ठ विचार होते हैं, वह अकेला होते हुए भी कभी अकेला नहीं होता।' संस्कार हमारे मन और आत्मा को सुसंस्कृत बनाते हैं। मन से अज्ञान को, और चित्त से भ्रम को दूर करते हैं। वे अविद्या के अंधकार का नाश करके ज्ञान की ज्योति को आलोकित करते हैं। इससे चित्त निर्मल होकर प्रसन्न रहता है। वे दुर्गुणों और विकारों को दूर करके सत्य-वृत्ति स्थापित करते हैं। 'बुराई' को दूर करने हेतु भगवान भी समय-समय पर संसार में प्रकट हुए हैं-

'यदा यदा ही धर्मस्य....सम्भवामि युगे-युगे।'

(श्रीमद्भगवद्गीत 4:7:8)

श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं- हे भारत! जब-जब भी धर्म की हानि और अधर्म (विकारों) की वृद्धि होती है, तब-तब ही मैं अपने रूप रचता हूँ और साकार रूप में प्रकट होता हूँ तथा साधु पुरुषों का उद्धार और पापकर्म करने वालों का विनाश करके धर्म की स्थापना करने के लिये युग-युग में प्रकट हुआ करता हूँ।'

बाईबल के अनुसार जीसस क्राईस्ट का दुनिया में आने का मकसद भी 'बुराई' को नष्ट करना, लोगों को (मृत्यु के) भय से छुटकारा दिलाना व दुनिया को बचाना था।

पैगम्बर मुहम्मद (अल्लाह के अन्तिम पैगम्बर) ने भी लोगों को एक ही ईश्वर की आराधना और एक नीतिसंगत् व ईमानदार जीवन जीने की सीख दी है।

पैगम्बर झोरोस्टर ने भी एक ही सार्वभौम उत्कृष्ट सर्वोपरि ईश्वर की बात कही और लोगों को अच्छी सोच रखना, अच्छे वचन बोलना और अच्छे कर्म करने व सत्य के मार्ग पर चलने की सलाह दी है। इस तरह सभी अवतारों, पैगम्बरों ने लोगों को अच्छा और संस्कारवान बनाने व बुराई और विकारों से दूर रहने की शिक्षा दी है।

महाभारत में संस्कारवान भीष्म सदैव निष्ठावान व सच्चे राजभक्त बने रहे। यद्यपि ईश्वर की आज्ञा से उन्हें अकृतज्ञ भूमिका निभाना पड़ी थी, जिससे उन्हें लोगों की गलतफहमी का दुःख झेलना पड़ा था। भीष्म दुनिया को व आने वाले समय को जीवन का एक महत्वपूर्ण सिद्धान्त समझाना चाहते थे कि 'हम कोई भी हों, कितने

भी धनी, शक्तिशाली, यशस्वी और ज्ञानी हों, यदि हम श्रीकृष्ण (अच्छाई) के पक्षधर नहीं है तो हमारी पराजय निश्चित है। अन्यथा श्रीकृष्ण के पक्षधर हों तो अवश्य विजयी होंगे, क्योंकि श्रीकृष्ण अच्युत हैं।

जीवन में विकार न आने पावे इसलिये संस्कारवान बनने का प्रयास मनुष्य को करना चाहिये। इसके लिये आत्मा का विकास आवश्यक है। प्रार्थना इस कार्य में बहुत सहायक साबित होती है।

महात्मा गाँधी के अनुसार- प्रार्थना याचना नहीं है। यह आत्मा की वह तड़प है जो प्रतिदिन हमारी कमियों को स्वीकार करती है। प्रार्थना में मन-रहित शब्दों के बजाय शब्द रहित मन ज्यादा कारगर होता है। प्रार्थना के बारे में जॉन मोज़फील्ड का मत है कि ईश्वर उस व्यक्ति के हृदय के बिलकुल नजदीक होते हैं जो सच्चे मन से प्रार्थना करता है। इस बारे में हज़रत ख्वाजा गरीब नवाज बताते हैं कि प्रार्थना वह मर्म, वह रहस्य है जिससे तुम ईश्वर पर दृढ़-विश्वास कर सकते हो तथा प्रार्थना द्वारा तुम्हें पूर्ण मुक्ति पाने का प्रयत्न करना चाहिये। संस्कारवान बनने में अच्छे कर्म करने की प्रवृत्ति होना भी सहायक है। अच्छे कर्म हमें शक्ति व दूसरों को अच्छे कर्म करने की प्रेरणा देते हैं। दूसरों के साथ हमें वैसा ही (अच्छा) व्यवहार करना चाहिये जैसा हम दूसरों से अपने लिये अपेक्षा करते हैं। रात्री में सोने से पहले दिन-भर में किये कर्मों के लेखे-जोखे पर मनन करना भी इस दिशा में सहायक होता है कि हममें से कितने दुर्गुण दूर हुए और कितने सद् गुण आये।

और अन्त में-

'एक छोटा-सा नेक कार्य एक बड़े नेक इरादे से बेहतर होता है।'

-मोरेश्वर मंडलोई, खण्डवा

समय परिवर्तन से संस्कारों का ह्रास

संस्कार क्या है? इसका हस्तांतरण कहां से होता है? इस विषय पर सोचते ही इतिहास के पन्ने सामने आ जाते हैं। पहले परिवार के बड़े-बुजुर्ग, दादा-दादी बिल्कुल नहीं चाहते थे कि उनके पोते-पोती कुछ पढ़ने और कुछ कर गुजरने के उद्देश्य से उन्हें छोड़कर बाहर जाएँ। बाहर के हलवे की सुगंध से वे बिल्कुल नहीं ललचाते थे तथा अपनी सूखी रोटी को ही बेहतर समझते थे। उस समय माता-पिता तो प्रायः मौन ही रहते थे।

अब तो संयुक्त परिवार ही टूट गए और एकल परिवारों में माता-पिता की अहमियत बढ़ने लगी। उन्होंने अपने परिवारों पर अपने कर्त्तव्य एवं अधिकारों की पकड़ बनाकर दादा-दादी की दादागिरी समाप्त प्रायः कर दी। माता-पिता की सत्ता के बाद सन्तान भी प्रश्न करने लगी- ऐसा क्यों? दादा-दादी युग के साथ आध्यात्मिक परम्पराओं को भी विराम लगा। परम्पराओं के आधार पर चलने से युवा इंकार करने लगे। पहले शादी-ब्याह के मामलों में बड़े-बुढ़ों और परिवारों की सहमति महत्व रखती थी, लेकिन धीरे-धीरे इस तर्क ने जोर पकड़ा कि जिन्दगी जब हमें बिताना है तो चयन में हमारा निर्णयन सर्वोपरि रहेगा यहाँ तक हो ठीक था परन्तु बाद में अपने सहकर्मियों के साथ ब्याह करने की जिद शुरु हुई जहाँ जातिप्रथा को भी धक्का लगा और माता-पिता के स्वाभिमान को भी। कालांतर में संस्कारों की विकृति यहाँ तक पहुँच गई कि बहु को मनमानी से रोकने पर परिवार पर डोमेस्टिक वायलेंस और दहेज उत्पीड़न कानून का सहारा लेने से भी वे नहीं चूकती। बच्चों के जन्म और उनके लालन-पालन की जिम्मेदारियों से हमारी बहनें और बच्चियाँ कैसे इंकार कर सकती है? सरकार भी महिलाओं की सुविधा हेतु मातृत्व की छुट्टियाँ और अन्य अधिकार प्रदान कर रही है। हम गीता के कर्म उपदेश न माने, रामायण की कर्त्तव्य परायणता को ना माने तो भी संविधान के संदेशों को तो मानना ही पड़ेगा।

हर व्यक्ति जानता है कि आज के युग में बच्चियों को चौके से बांधकर नहीं रखा जा सकता, मगर पारिवारिक कलह में उनका और हमारे आधुनिक टी.वी. धारावाहिकों का बहुत बड़ा हाथ है। जब नौकरी के उद्देश्य से बच्चे बाहर जाते हैं तो माता-पिता शहरों की व्यस्तता और असुविधाओं को समझते हैं, मगर उनकी देखरेख की जिम्मेदारी से किसी को पृथक नहीं करते। हम लोगों को इतना संस्कारित अवश्य रहना पड़ेगा कि उन्हें वृद्धाश्रम का और बच्चों को अनाथालय का दर्शन ना करना पड़े। सात जन्मों का बंधन ना सही एक जन्म का बंधन भी हम ना निभा सके तो निश्चय ही लिव इन रिलेशन जैसी बीमारियों से हमारा समाज ग्रसित हो जाएगा और हम हाथ मलते ही रह जाएंगे।

-प्रमोदराय झा

नागरवाड़ा, बांसवाड़ा मो. 8003063616

कोई व्यक्ति सिर्फ इसलिए प्रसन्न नहीं दिखाई देता कि उसे कोई परेशानी नहीं है, बल्कि इसलिए प्रसन्न रहता है कि उसका जीवन जीने का दृष्टिकोण सकारात्मक है।

मंडलोई फाउंडेशन द्वारा आयोजित

निःशुल्क चिकित्सा शिविर में अनेकों मरीजों का इलाज

श्री मंडलोई फाउण्डेशन द्वारा दिनांक 3-2-2017 को नर्मदा जयंती के शुभ अवसर पर ओंकारेश्वर में पुराने बस स्टेण्ड पर निःशुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें 127 श्रद्धालुओं को चिकित्सा सेवा उपलब्ध कराई गई।

दिनांक 5-2-2017 से 11-2-2017 तक सिंगाजी धाम में आयोजित नागर रत्न भागवताचार्य पं.कमलकिशोरजी नागर की भागवत् में श्रीमती शारदा मंडलोईजी एवं श्री अमिताभजी मंडलोई के कुशल संयोजन में 7 दिवसीय निःशुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें फाउण्डेशन की ओर से डॉक्टर, दवाईयों की निःशुल्क व्यवस्था की गई थी। इस शिविर में 4570 मरीजों को स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराई गई। इस शिविर में डॉ.सुमेरसिंह एवं डॉ.नाईक तथा सनावद के वरिष्ठ चिकित्सक डॉ.राजेन्द्र पलोड ने अपनी सेवाएं दी।

10 फरवरी को फाउण्डेशन द्वारा अरविन्दो हास्पीटल इन्दौर के तत्वावधान में श्रद्धालुओं की सुविधा हेतु 'मेगा केम्प' का आयोजन किया गया। जिसमें पीआरओ डॉ.वैभव यादव (मेडिसीन), डॉ.संदीप बब्बर (चर्मरोग) एवं डॉ.ईशु (स्त्री रोग) विशेषज्ञों ने अपनी सेवाएं दी। इन शिविरों में केमिस्ट चन्द्रशेखर यादव एवं शुभम यादव तथा नर्सिंग स्टॉफ में अवधेश व्यास, सुनील परमार एवं माखन चौहान ने सेवाएं दी। रजिस्ट्रेशन श्रीमती दीपाली व्यास द्वारा किये गये।

-अवधेश व्यास, खण्डवा

मन के हारे हार है

पुरुष हो या महिला आशा हम सभी के जीवन की प्रेरणा होती है जीने का आधार ही आशा है। यदि किसी को किसी प्रकार की आशा ही न हो तो जीने का कोई मकसद ही जर नहीं आता, उसका मन नकारात्मक विचारों से भरा हुआ है, तो मन में द्वेषता, ईर्ष्या, नफरत, संकुचित विचार आदि पनपते रहते हैं और वह निराशा में डूबता जाता है। ऐसे व्यक्ति के लिये समय कितना भी अनुकूल हो वह जीवन जीने का आनन्द नहीं ले पाता। हर पल घुटन भरी बैचेनी व भय के साथ सांसे गिनता रहता है और घर वालों को भी दुःखी करता रहता है और स्वयं बार-बार आत्म हत्या की धमकी देता रहता है, न स्वयं सुखी रह सकता है और न दूसरों को सुखी देख सकता है। ऐसा जीवन जीना नहीं होता बल्कि हर पल मरने के समान होता है।

इसके विपरित सकारात्मक आशाओं के साथ जीने वाला व्यक्ति चाहे कितने भी कठिन समय से गुजर रहा हो, समस्याओं से जुझ रहा हो, लेकिन उसकी आँखों के सामने सकारात्मक आशाएं उसके स्वर्णिम भविष्य का लक्ष्य रखे रहती है। जिन्हें पाने के लिये वह निरन्तर आगे बढ़ता जाता है। वह कठिन से कठिन समस्याओं को भी सहजता से पार कर लेता है। इसीलिए भगवान भी उसी का साथ देता है जो अपने आप का साथ देता है वह आशा की डोर थामे रखता है। अंधा व्यक्ति भी आँखों में उजियाले की आशा से ही अंधियारे को आसानी से पार करने में सफल हो जाता है। नहीं तो आँख वाला व्यक्ति भी बिना आशा के अंधियारों की गलियों में भटक जाता है और अपने लक्ष्य तक नहीं पहुँच पाता। यदि आप के मन में आशा है तो आप बड़े से बड़े पर्वत और समुद्र को भी लांघ सकते हो। बशर्ते कि आप को कभी हार नहीं मानना, ऐसे व्यक्ति के सामने असफलताएं भी डरने व कांपने लगती है।

यदि मंजिल पानी है तो आशा, मन का वह दीपक है जो उसे नींद में भी राह दिखाता है और भ्रमित होने से बचाता है, कहते हैं कि उम्मीद पर ही दुनिया टिकी है इसलिए आशा को मन में बसाना चाहिए और निराशा, ईर्ष्या, नफरत, संकुचित विचार अपने आसपास फटकने व ठहरने नहीं देना चाहिए।

इसीलिए कहा गया है कि 'मन के हारे हार है और मन के जीते जीत'।

-श्रीमती सुशीला रावल
19, शास्त्री वार्ड-8, बड़ावदा (रतलाम)
मो. 9826085272

स्वप्नलोक सा ऑस्ट्रेलिया

ऑस्ट्रेलिया महाद्वीप का आकर्षण बचपन से ही रहा और वहां जाने का और कुछ माह बेटे, बहू के साथ रुकने का अवसर मिला 9 नवम्बर को उत्साहित मन लिए ऑस्ट्रेलिया के शहर मेलबर्न के लिए सपत्नीक प्रस्थान किया। दूसरे दिन शाम को जब मेलबर्न पहुंचे तो वहां के समय अनुसार शाम के 9.00 बज चुके थे किंतु एयरपोर्ट से बाहर आते ही जो पहला आश्चर्य हुआ वह वहां का सूर्यास्त का नजारा था।

शहर की भव्य अट्टालिकाओं को देखा तो मन बरबस ही प्रफुल्लित हो उठा, उसके बाद वहां करीब ढाई माह तक निवास करने का सौभाग्य मिला इस दौरान मेलबर्न के मुख्य पर्यटक स्थलों पर घूमने का अवसर मिला। मुख्य पर्यटक स्थल जैसे कि श्राइन आफ रिमेमबरेनन्स, जो कि द्वितीय विश्व युद्ध में ऑस्ट्रेलियन सैनिकों की याद में बना है जो उसी युद्ध में शहीद हुए थे बॉटनिकल गार्डन, मेलबर्न की लोकप्रियता में चार चांद लगाने वाली सबसे ऊंची इमारत यूरेका टावर जो 108मंजिला इमारत है और उसकी ऊंचाई 300 मीटर हैं, उसके ऊपर जाकर जब मेलबर्न शहर का नजारा देखते हैं तो आंखें स्तब्ध रह जाती है और रात्रि के समय तो पूरा शहर ऐसा लगता है मानो हीरे-जवाहरातों से जड़ा हुआ कोई स्वर्ण आभूषण देख रहे हो इस टॉवर की ऊपर की 10 मंजिले बाहर से 24 कैरेट gold plated हैं जो कि सूर्यास्त के समय, सूर्य रश्मियों को इस तरह से परावर्तित करती है मानो कोई बहुत बड़ा लैंप जल रहा हो। सी लाइफ एक्वेरियम जिसमे पेंगुइन देखने को मिली सेंट किलडा का सुरम्य समुद्रतट। फिलिप आइलेण्ड जहा सील देखने को मिली। बड़े बड़े घास के मैदानो मे गायों के झुंड। वहां पर हिंदू मंदिर भी देखने को मिले जिनमें प्रमुख है इस्कॉन टेंपल एवं दक्षिण भारत शैली में बने हुए विष्णु के मॉदिर वहां रहते हुए वहां के लोगों को निकट से जाना और पहचाना तो उनका सौम्य व्यवहार, मुस्कुराता हुआ अभिवादन मन को प्रसन्न कर गया। अगर हमारे देश से तुलना की जाए तो स्वच्छता, अनुशासन, यातायात के नियमों का पालन, स्वस्थ एवं वर्जिश से भरी जीवनचर्या और जिंदादिली से जीवन जीने की खूबी देखकर मन अति उत्साहित हो गया। वहां पर महिलाओं का सभी कार्यों में बराबरी से भाग लेना जैसे कि, अधिकांश कार ड्राइव करते एवं बड़े व्यवसायिक वाहनों तक को ड्राइव करते महिलाओं को देखना एक नया अनुभव था। सभी दुकानों और मकानों के प्रवेश द्वार एवं खिड़कियों में केवल कांच का उपयोग दर्शाता है कि चोरी की घटनाएं वहां कम ही होती होगी। कही कोई ग्रिल देखने को नहीं मिली। दुकानों के बंद होने के उपरांत शीशे के दरवाजों के अंदर कई जगह ऐसे नोट लिखे हुए देखने को मिले कि दुकान में कोई भी नगदी नहीं है और यहां तक कि जो कैश बॉक्स है उसे भी खोल कर रखे हुए देखा। शॉपिंग मॉल्स में मानवरहित वेंडिंग मशीनों के द्वारा कीमतों का भुगतान वहां के आम नागरिक में पाई जाने वाली ईमानदारी को दर्शाता है। स्वच्छता वहां की एक और विशेषता है, सार्वजनिक स्थलों पर गंदगी करने वालों को 200 का दंड देना पड़ता है, इसी प्रकार से यातायात नियमों का पालन ना करने पर भी 600 तक का जुर्माना हो सकता है, इस कारण से वहां का यातायात इतना सुगम और सुचारु रुप से चलता है कि इतने दिनों में वहां पर कोई भी वाहन दुर्घटना देखने को नहीं मिली। चैरी का फल जो कि हमारे यहां कम ही पाया जाता है, उसके वहां पर बड़े-बड़े फॉर्म देखें और जिस पर कुछ शुल्क देकर आप प्रवेश कर सकते हैं और जी भरकर चेरी और स्ट्रॉबेरी खा सकते हैं वहां पर विभिन्न प्रकार की चैरी देखने एवं खाने को मिली ब्लूबेरी ब्लैकबेरी रसबेरी स्ट्रॉबेरी साथ ही कई नए प्रकार के फल भी देखने को मिले कीवी वहां पर बहुत पसंद की जाती है। वहां के साधारण जन काले एवं स्लेटी रंग के कपड़े अधिक पहनते हैं जबकि कारों के कलर रंग बिरंगे देखने को मिले।

एक और विशेष बात जो कि हम लोगों को बड़ी अजीब लगेगी वह यह है कि वहां पर मरम्मत करवाने की कीमत इतनी अधिक होती है कि अपने पुराने सामान को अपने घर के सामने रख देते हैं, जैसे कि सोफा, वाशिंग मशीन, फ्रिज, पलंग, गद्दा और जिन्हें भी उसकी आवश्यकता हो वह वहां से उठाकर ले जा सकता है, कुछ दिनों तक अगर कोई नहीं उठाता है तो कचरा उठाने वाली गाड़ी उन्हें दबाने के बाद कचरे के साथ में उठा कर ले जाती है, इनमें से कई चीजें चालू हालत में होती है और उपयोग की जा सकती है। इस प्रकार से ऑस्ट्रेलिया की विशेषताओं, वहां के सुरम्य स्थानों को और क्रिसमस एवं न्यू ईयर के आयोजनों को देखने का भी एक अलग ही अनुभव रहा। वापसी की यात्रा 25 तारीख को शुरू कर कर 26जनवरी को हम वापस अपने देश आ गए।

-डॉ. मुकेश मेहता, महू

आदिदेव भगवान भोलेनाथ शिवजी अपने साथ सदैव त्रिशूल धारण किये रहते हैं जिससे वे दुष्टों, पापियों का संहार करते हैं, किन्तु तीन वनोषधियाँ जड़ी-बुटियों का त्रिशूल भी उन्हें प्रिय है जिनके द्वारा जनआपदाओं, व्याधियों का नाश करते हैं एवं स्वयं उन्हें धारण भी करते हैं। उनसे श्रृंगार करते हैं वे हैं तीन बुटियाँ (1) बिल्व, (2) धतूरा (3) आक है।

(1) बिल्व (बेल)- बिल्व पत्र भगवान शंकर को अतिप्रिय है। उनके पूजन में बिल्वपत्र ही मुख्य है। पुराणों में एवं वैदिक साहित्य में बिल्व वृक्ष को दिव्य वृक्ष कहा गया है। बिल्व पत्र तोड़कर रखे हुए 6 माह तक ज्यों के त्यों बने रहते हैं।

बिल्वपत्र पिसकर भाल पर लेप करने से शिरःशूल दूर होता है, पत्तों के रस को आँखों में बूंद डालने से नेत्र रोग दूर होता है। 10 ग्राम बेल पत्र 7 नग कालीमिर्च पीसकर 100 मिली. जल में छानकर 25 ग्राम मिश्री मिलाकर सुबह-शाम पीने से रतौंधी ठीक होती है। प्रवाहिका, अतिसार, संग्रहणी, में बेलगिरी (बिल्व फल का गूदा) लाभप्रद होता है। मधुमेह में 10 ग्राम पत्र स्वरस प्रातः सायं सेवन करने से लाभ होता है। प्रदर में भी इससे लाभ होता है। इसके पत्तों का काढ़ा बनाकर पीने से ज्वर और सूखी खाँसी में लाभ होता है। इसकी तैयार औषधि बिल्वादिलेह, बिल्वचूर्ण, बिल्वादितेल आदि बाजार में उपलब्ध है।

(2) धतूरा- इसे कनक एवं शिवप्रिय भी कहा जाता है, इसके फल और पुष्प शिवजी पर चढ़ाये जाते हैं। धतूरा मदकारक होता है, किन्तु उन्माद रोग में लाभप्रद होता है, स्तन या अन्य गाँठ की सूजन में इसके पत्तों को गरम कर बांधने से लाभ होता है। यह श्वासकाश में भी लाभप्रद है। मायग्रेन, पुराने शिरःशूल में इसके दो तीन बीज निगलने से लाभ होता है। बाजार में इसकी तैयार औषधि कनकासव नाम से उपलब्ध है।

(3) आक (अर्क)- इसे मदार भी कहते हैं। इसके पुष्प को शिवजी को प्राथमिकता से अर्पित किये जाते हैं। इस पौधे का प्रत्येक अंग औषधि है, किन्तु यह विषैला भी होता है, उचित मात्रा में दिव्य रसायन माना गया है। इसे वानस्पतिक पारद भी कहा गया है।

इसका प्रयोग अनेक रोगों मेंजैसे प्रमेह, पाण्डु, कामला (पीलिया), जलोदर, भगन्दर, मुत्राघात, अर्श, योनिरोग, बांझपन, गठिया, दाद, खाज, नारू, कुष्ठ, संवेदन शून्यता, यकृतप्लीहा रोग आदि में लाभप्रद है।

किन्तु इसका उपयोग योग्य वैद्य की सलाह एवं देखरेख में ही करना चाहिये। इस प्रकार यह 3 वनौषधि का त्रिशूल जगत में व्याधिनाशक है।

-डॉ.बालकृष्ण व्यास
एल.आई.जी.सी.-12/12 ऋषि नगर, उज्जैन
मो. 9424045826

महाशिवरात्रि पर्व पर शोभा यात्रा का आयोजन

नागर समाज खण्डवा द्वारा महाशिवरात्रि पर्व पर तिलभांडेश्वर महादेव की शोभायात्रा नगर के प्रमुख मार्गों से निकाली गई। तिलभांडेश्वर मंदिर के प्रमुख पं.शिवशंकर भट्ट पंडित रूपशंकर, पं.करुणाशंकर भट्ट सहित समस्त नागर समाज के भक्तजनों द्वारा इसमें सहभागिता की गई। तथा रात्रि में भजन संध्या का आयोजन किया गया।

मां तो जन्नत का फूल है,
प्यार करना उसका उसूल है,

दुनिया की मोहब्बत फिजूल है,
मां की हर दुआ कबूल है ,

मां को नाराज करना
इंसान तेरी भूल है ,

मां के कदमो की मिट्टी
जन्नत की धूल है !!

कपूत की करतूत

होली व्यंग्य

मैया मेरी मैं नहीं टीचर पीटौं।
क्लास फ्रेंड सब करें इर्षा।।
मेरे सिर इंतजाम धरौं।
पुलिस मैन से बैर पुरानो।
जाको बदलो आज फिरौं।
मैया मेरी मैं..
चार प्रहर भंग तरंग सम हुड़दंग कियो
ना जाने कौन घसीट टीचर नंग धड़ंग कियो
और पकड़ धरौ लाइलो तेरो जाके जेल भरौं।
मैया मोरी मैं..
कुर्सी से जब चिपक्यो परीक्षक।
पर्चा अन्दर मन न लगौं।
पुस्तक फेंकि पिच्चर भयो।
चांस डांस को न मिलौं।
मैया मेरी मैं..
खेल खेल में खेल सर का सर फोड़ा
जाके कारण सर के सर में हो गया फोड़ा
गिरा रक्त वस्त्र रक्त हो गये
जैसे गृहस्थ कोई संत विरक्त हो गये
जनता ये समझी लगी इनको गोली है
मैंने कहो भाई ये तो होली है
ऐसे बच-बचकर झूठ को सच करौं।
मैया मेरी मैं..
भीड़-भाड़ देख छेड़छाड़ कर
भागि रहो लुक छिप दौड़कर
लियो दबोच चरण प्रहार कर
तोड़ हाड़ फोड़ सिर बीच सड़क गिरौं
देर भई रात पुलिस आई पास
अस्पताल में होश भयो।
मैया मेरी मैं..
यह ले अपनी कलम किताबें।
मैं नहिं पढ़ने जाऊँ
भोर भये से लगूं तोड़ फोड़ में,
सांझ परे घर आऊँ
मैया देखी करतूत कपूत की,
नागर जल नैनन में भरि आयो।

-ईश्वरलाल नागर
छापरी जिला, उज्जैन मो. 8964882281

होली-गीत

स्वरचित-आस्था एवं आस्था भजन चैनल पर रेकॉर्डेड एवं प्रसारित

बरसाने की छोरी ढूंढे छुपने का कोई ठोर,
एक ग्वालन मतवारी ढून्डे छुपने का कोई ठोर,
होरी है हाली है सुनकर गली-गली में शोर,
देखा आया, आया, आया रे, आया माखन चोर।
बिगर्यो बृज को लाल, यशोदा मुख पे बहुत लगायो रे,
यमुना के तट पनिहारिन को पग पग बहुत सतायो रे,
कंकर मारे चुपके-चुपके देत गगरिया फोर,
एक ना माने कहीं किसी की दिल का बड़ा कठोर-देखो आया..
आयो फाग में खेलूं कैसे छलिया के संग होरी,
लाज की मारी मर-मर जाऊं, सखियाँ करे ठिठोरी,
गागर रंग भरी लायो, पिचकारी रंग में बोर,
राधा, राधा करके ढुन्डे मुझको चारों ओर देखो आया
लेकर आयो संग में जुल्मी गोप गोपियां टोरी,
कूद पड़ी राधा भी आखिर लोक लाज सब छोड़ी,
रंग डारी राधा बेचारी बहुत लगायो जोर,
अचरज है 'प्रसाद' ना देखी प्रित की ऐसी डोर
देखो आया..

द्वारा-गजेन्द्र प्रसाद पंड्या
बांसवाड़ा मो. 9829665830

आजकल के युग की दास्तां

बड़े घर- परिवार नहीं।
ज्यादा पढ़ाई - तमीज़ नहीं।
महंगी दवाई - सेहत नहीं।
चन्द्रमा छूना है - पड़ोसी का पता नहीं।
आमदनी ज्यादा - सुकून नहीं।
बौद्धिक स्तर ऊँचा - भावना नहीं।
ज्ञान अच्छा - अकल नहीं।
प्रेम संबंध बहुतेरे - सच्चा प्यार नहीं।
फेसबुक के दोस्त बहुत - सच्चा दोस्त नहीं।
शराब ज्यादा - पानी नहीं ।
इंसान बहुत - इंसानियत नहीं।
घड़ियाँ महंगी - समय नहीं

संकलन- टीशा नागर
मोती बंगला, देवास

प्रीत की डोरी

अत्यंत कठोर है
प्रीत की डोरी
उषा से
निशा तक
फूलों से कीटों तक,
पतझड़ से
सावन तक
राग से
साज तक
फैली है
यह डोरी
तीव्र प्रहार
प्रहार पर प्रहार
परन्तु
दृढ़ है
नहीं टूटती
यह डोरी प्यारी

-मनीष रावल
शाजापुर
मो. 8109487593

आया होली का त्यौहार

रंग बिरंगा है होली का त्यौहार,
जिसमें सजे हैं, जीवन के रंग हजार।
कभी दुःख तो कभी सुख से,
भरा पड़ा है ये संसार।
सभी दुख भुलाकर आज
होली के रंगों में है सभी सराबोर।
नन्हीं सी खिलखिलाहट की है भरमार,
होली के रंगों में बह गये,
सभी दुखों के भंडार।
चाची, काकी, मामी सभी के,
चेहरों पर है गुलाल की बहार
अंदर बना रही है
ताई व्यंजनों की भरमार।
इन्हीं रंग-बिरंगे त्योहारों के,
कारण ही तो है मेरा भारत महान,
होली के दिन अमीर-गरीब
सभी हो जाते हैं एक समान
यही तो है हमारे देश की पहचान।
इसी संस्कृति के कारण ही,
हमारा देश विश्व में बनाता है,
अपनी एक अलग पहचान।
अब इस बार हम भी करें
एक अच्छा सा काम।
करें अपनी बुराई का काम-तमाम,
होली का दहन के साथ,
होगी होली की शुरुआत।
आओ सभी भेदभाव भुलाकर,
करे नई सुबह का आगाज,
हर तरफ बिखरा दे,
प्यार के रंग हजार,
आओ हम सब मिलकर मनाये,
होली का त्यौहार
होली का त्यौहार

-श्रीमती रश्मि भूपेन्द्र नागर
शुदामा नगर, इन्दौर
मो. 9424567007

रंग-बिरंगी दोस्ती

औस की बूंदों सी होती है ये दोस्ती, सुंदर, सहज और सजल।
उषा की बेला से ही मुस्कुराती, इठलाती और दंभाती।
सूरज के स्वर्णिम आलोक सी खिलती, दमकती और निखरती।
रज-कण में छूपे केंचुएं सी समर्पित, संरक्षित और उर्वरित।
तपती धूपसी उज्ज्वलित, कर्मरित और प्रेरित।
एक स्तंभ की भाँति खड़े वृक्ष की सहनशील, कर्मशील और अर्पणशील।
नील-गगन में उड़ते पंछी सी चंचल, कौतुहल और गूंजल।
संध्या के धुमिल रंगों सी मस्ताती, मदमाती और मधुर गीत सुनाती,
तो काली रात्री सी सहमती, ढांढस बंधाती और दृढ़-निश्चय करती।
दोस्ती तेरे कई रंग, सब हर्षाते, मन बहलाते और अटूट बंधन में बांधते।

-नीरा नागर ठाणे (महाराष्ट्र) मुम्बई मो .09987768293

सांप, राजा, शेर, सुअर, बालक, दूसरों का कुत्ता और मूर्ख, ये सातों यदि सो रहे हों तो इन्हें नहीं जगाना चाहिए।

आई फागुन की मंजुल बयार

आई फागुन की मंजुल बयार,
संग लाई होली का त्यौहार।
हुआ शिशिर का अंत,
आया मादक बसंत।
महका मोहक मधुमास,
बिखरा दहका पलाश।
हरे खेतों का दीर्घ विस्तार,
छाई पीली सरसों की बहार।
बाजे ढोल, चंग, मृदंग, मंजीरे,
गाये कोयल मीठे गीत सुरीले।
रग-रग में उमंग भरे ऋतुराज,
थिरके अंग-अंग, बिन साज।
सुरभित आम्र-मंजरी सुहावन,
गूंजे भ्रमरों का गीत मनभावन।
झूमे रंग-बिरंगी तितली उद्यान-उद्यान,
करें मधुकर परागकणों का रसपान।
बुढ़े, बच्चे, जवानों की टोली,
खेलते हिल-मिल कर होली।
देवर, भाभी, जीजा-साली करे ठिठोली,
मीठी लगे, सास-ननद की बोली।
उड़े चहुओर, रंग, अबीर, गुलाल,
उजले गाल गोरी के, हो गए लाल।
गुजिया से करे, मुह मीठा हर कोई,
साजन करे, सजनियां से दिलजोई।
लाल-पीले, हरे-गुलाबी मुखड़े देख
लगता नहीं, अमीर-गरीब में भेद।
ईर्ष्या, द्वेष, दम्भ को सबने भुलाया,
हंसकर एक-दूजे को गले लगाया।
पिच-पिच करे पिचकारी न्यारी,
नफरत आज, प्रेम से है हारी।
होली देती सबको, एक ही संदेश
छोटा-बड़ा यहाँ, न कोई विशेष।

-श्रीमती संगीता चौबे 'पंखुड़ी'
मो. 9561698466

गतांक से आगे...

तुलसी का विप्र प्रेम-3

विश्वास का प्रतीक है- ब्राह्मण

कोटि विप्र बध लागहि जाहू। आएँ सरन तजऊँ नहि ताहू।।

पंक्ति से स्पष्ट होता है कि श्री राम ब्राह्मण के वध को महापाप मानते हैं क्योंकि श्री राम ने किसी प्राणी, देवता व गंधर्व आदि किसी के भी वध का उदाहरण न देकर ब्राह्मण का ही दिया है। आगे श्री राम कहते हैं कि जिनका ब्राह्मणों के चरणों में प्रेम होता है वे नर मुझे प्राण के समान है।

ते नर प्रान समान मम, जिनके द्विज पद प्रेम।

रावण वध पश्चात् प्रभु राम जब विमान से अयोध्या हेतु लौटते हैं तो भगवती त्रिवेणी में स्नान उपरांत ब्राह्मणों को अनेक प्रकार से दानादि करते हैं।

पुनि प्रभु आय त्रिवेणी, हरषित मज्जनु कीन्ह।
कपिन्ह सहित विप्रन्ह कहुं, दान विविध बिधि दीन्ह।।

प्रभु का ब्राह्मणों के प्रति कितना मान सम्मान है कि भृगु ऋषि ने जब उनके वक्षस्थल पर लात मारी तो उन्होंने भृगु ऋषि (ब्राह्मण) के चरण चिन्ह है, यह मानकर चिन्ह को वक्षस्थल पर अमिट बना रहने दिया। इसी में उन्होंने गौरव समझा।

चौदह वर्ष की अवधि पूर्ण होने पर प्रभु श्रीराम ने भरतजी को सन्देश भेजा कि वे आज आ रहे हैं तो यह सन्देश भी हनुमानजी विप्र रूप में लेकर गए, क्योंकि ब्राह्मणों की बात पर सभी विश्वास कर लेते हैं।

विप्र रूप धरि पवनसुत, आइ गयऊँ जनु पोत।।

श्रीराम के आगमन का समाचार सुनकर भरत जी ब्राह्मणों के समूह लेकर उनके स्वागतार्थ जब श्री राम के पास पहुँचे तो सर्व प्रथम धर्म धुरंधर श्रीराम ने ब्राह्मणों को मस्तक नवांया।

सकल द्विजन्ह मिलि नायउ माथा।
धर्म धुरंधर रघुकुल नाथा।।

यहाँ उल्लेखनीय यह है कि प्रभु ने गुरु वशिष्ठ से भी पहले ब्राह्मणों को प्रणाम किया है।

प्रभु ही नहीं स्वयं गुरु वशिष्ठ ने भी श्रीराम के गृह प्रवेश करते ही ब्राह्मणों को बुलाया तथा उनसे आज्ञा लेकर श्रीराम को सिंहासन रूढ़ होने की आज्ञा दी।

गुरु वशिष्ठ द्विज लिए बुलाई। आजु सुघरी सुदिन समुदाई।।
सब द्विजन्ह देहु हरषि अनुसासन। रामचन्द्र बैठहिं अनुसासन।

ततपश्चात् विधिवत रूप से राजतिलक किया गया। उत्तर सोपान (काण्ड) में तुलसी ने ब्राह्मणों के कर्म एवं उनके प्रति जनमानस की धारणा (विचार) के बारे में सटीक भविष्यवाणी की है।

यथा- द्विजन्ह श्रुति बेचक भूप प्रजासन। कोउ नहि मान निगम अनुशासन।
शूद्र द्विजन्ह उपदेसहिं गयाना। मेलि जनेऊ लेहिं कुदाना।।

बादहिं सूद्र द्विजन्ह सन, हम तुमसे कछु घाटि।
जानइ ब्रह्म सो विप्रवर, आँखि देखावाही डांटि।।

अंत में इन तीन धारावाही लेखों के लिखने का मेरा उद्देश्य मात्र इतना है कि ब्राह्मणों का जो महत्व उनकी जो मान्यता समाज में रही है वह लुप्तप्रायः हो गई है। जिसके प्रति हम ब्राह्मण स्वयं उत्तरदायी है। आज हम और हमारी संतानें संस्कारहीन होती जा रही है। पाश्चात्य सभ्यता का सर्वाधिक प्रभाव लगता है हम और हमारी संतानों पर ही पड़ा है। इस कटु सत्य को समाज को न केवल स्वीकारना होगा अपितु अभी हम लड़खड़ाने की स्थिति में है। चेतिए संभलने का अवसर अभी भी है। इस दिशा में समाज तथा ब्राह्मण परिषदों को गंभीरता से चिंतन कर समाज की मनोदशा बदल कर पछुआ हवाओं से बचने का मार्गान्तिकरण करना होगा। केवल परम्पराओं पर प्रहार करने से ही समाज सुधार नहीं होगा। अपितु संस्कारों की पुनर्स्थापना एवं उनके पोषण की ओर ध्यान देना होगा।

-हरिनारायण नागर (वरिष्ठ पत्रकार)
आशुतोष निकेतन, 306, सनसिटी-2, देवास
मो. 07272259822

प्रभू के सामने जो झुकता है,
वह सबको अच्छा लगता है
लेकिन
जो सबके सामने झुकता है,
वह प्रभू को अच्छा लगता है।

जिनमें अकेले चलने के हौसले
होते है, उनके पीछे एक दिन
काफिले होते हैं।

शील, सदाचार की प्रेरणा लें श्रीराम से

अखिल ब्राह्मण्ड नायक, परात्पर ब्रह्म भगवान श्रीराम अपना दिव्य धाम छोड़कर लोक में आकर मानव की तरह आचरण करते हैं, उनकी सम्पूर्ण क्रियाओं में लोक-कल्याण निहित है। श्री राम का जीवन कर्मयोगी का है, जिमसें त्याग, पवित्रता, सत्य, तपस्या, शील एवं सदाचार आदि पवित्र भावों की संनिवेश है। राम का दैनन्दिन चर्या में उतारना मानव मात्र का कर्तव्य एवं परम धर्म है। केवल भौतिक उन्नति से ही राष्ट्र ऊंचा नहीं उठता है, जब शील सदाचार आदि सद्‌गुण ऊँचे उठते हैं तभी राष्ट्र ऊँचा उठता है। श्री राम के इन्हीं सदगुणों के कुछ प्रसङ्ग नीचे दिये जा रहे हैं-

श्री राम प्रातः उठकर माता-पिता एवं गुरु को प्रणाम करते हैं-

प्रातःकाल उठकर रघुनाथा।
मातु पिता गुरु नावहिं माथा।।

श्री राम के विवाह पश्चात् गुरु वशिष्ठ जब श्री राम के महल में आते हैं तब श्री राम अति विनम्र भाव से कहते हैं-

गहे चरन सिय सहित बहोरी।
बोले रामु कमल कर जोरी।
सेवक सदन स्वामि आगमनू।
मंगल मूल अमंगल दमनू।।

धनुष-भंग हेतु गुरु विश्वामित्र के आदेश देने पर श्री राम गुरुजी को प्रणाम करके चलते हैं एवं धनुष उठाने के पूर्व मन ही मन गुरुजी का स्मरण कर धनुष को सहज ही उठा लेते हैं-

गुरहि प्रनामु मनहिं मन कीन्हा।
अति लाघवँ उठाई धनु लीन्हा।

चित्रकूट में श्रीराम और भाई भरत का मिलन शील और स्नेह का मिलन है। यह प्रसङ्ग शील, स्नेह, विनय, त्याग आदि उदात्तवृत्तियों का अपूर्व आदर्श है उपस्थित समाज उस दृश्य को देखकर द्रवीभूत हो उठता है-

कृपासिन्धु सनमानि सुबानी।
बैठाए समीप गहि पानी।
भरत विनय सुनि देखि सुभाऊ।
सिथिल सनेहँ सभा रघुराऊ।।

श्री हनुमन्त के उपकारों का स्मरण कर श्री राम कहते हैं-

सुनु कपि तोहि समान उपकारी।
नहिं कोउ सुरनर मुनि तनुधारी।।
प्रति उपकार करौं का तोरा।
सनमुख होइ न सकत मनमोरा।।

विभीषणजी द्वारा शरण-ग्रहण किये जाने पर श्री राम उन्हें लंकेश कहकर सम्बोधित करते हैं और लंका का राज्य देने का संकल्प लेते हैं और उसे पूर्ण किया। रावण वध के बाद भाई लक्ष्मण और वाहन सेना को विभीषणजी के साथ इस हेतु भेजते हुए कहते हैं-

सब मिलि जाहु विभिषण साथा।
सारेहु तिलक कहेउ रघुनाथा।

युद्ध के पूर्व मंत्री जाम्बवत की सलाह अनुसार बालिकुमार अंगद को रावण के दरबार में समझाकर भेजते हैं। हे तात्! रावण से ऐसी बातचीत करना जिससे हमारा काम हो और शत्रु का कल्याण हो।

कजु हमार तासु हित होई।
रिपुसन करेहु बतकही सोई।।

राज्याभिषेक के तत्काल बाद ही श्री राजाराम वशिष्टजी, ब्राह्मण समाज एवं समस्त प्रजाजनों को सभा में आमंत्रित कर कहते हैं-

जों अनीति कछु भाषौं भाई।
तो मोहि बरजहु भय बिसराई।

इस प्रकार श्री राम ने नीति पूर्वक राज्य संचालन करते हुए रामराज्य का आदर्श प्रस्तुत किया। श्री राम का सम्पूर्ण जीवन शील, सदाचार, सत्य त्याग, उदारता, प्रेम, तपस्या आदि सद् गुणों से परिपूर्ण रहा। गोस्वामी सन्त शिरोमणी तुलसीदासजी ने श्री राम चरित मानस की रचना करके आदर्श गृहस्थ-जीवन, आदर्श राजधर्म, आदर्श पारिवारिक जीवन, त्याग एवं उदारता पूर्ण आदर्श भ्रातृ-प्रेम के साथ-साथ सर्वोच्च भक्ति-ज्ञान, त्याग, शील और सदाचार को शिक्षा प्रदान की है।

श्री राम अत्यन्त सहृदय, सुशील एवं सर्वगुण सम्पन्न महामानव हैं। उनका मानवीय गुणों से युक्त मर्यादामय उदात्तजीवन मानव मात्र के लिये आदर्श उपस्थित करता है। वे शील एवं सदाचार की साक्षात मूर्ति है। हमें 'राम चरित मानस' का नियमित रूप से पाठकर, मनन कर एवं श्री राम के सद् गुणों को आचरण में लाकर प्रभु कृपा से प्राप्त दुर्लभ मानव जीवन को सार्थक बनाना चाहिये।

प्रस्तुति- गोवर्धनलाल व्यास
ऋषि नगर, उज्जैन

माँग का सिन्दूर और उसकी उपयोगिता

माँग में सिन्दूर लगाने की प्रथा अति प्राचीन है । सौभाग्यवती महिलाओं के सोलह श्रृंगार में से एक श्रृंगार माथे पर माँग में सिन्दूर लगाना भी है। हमारे समाज में वैदिक रीति की विवाह पद्धति में मंडप में कन्यादान विधि संपन्न होने के बाद वर, वधू की माँग में सिन्दूर लगाता है तथा उसे मंगलसूत्र पहनाता है। इसके पश्चात कन्या अखण्ड सौभाग्यवती कहलाती है ।

सिन्दूर भारतीय समाज में पूजन-सामग्री का एक प्रमुख घटक है । देवी पूजन में माँ पार्वती, माँ दुर्गा के नौ रूप, माँ सीता तथा अन्य शक्ति स्वरूपा माताओं के पूजन में सिन्दूर का अपना एक विशेष महत्व है । देवी पूजन में सिन्दूर सौभाग्य का प्रतीक माना जाता है। आज भी नवविवाहिता अपनी मांग के अंदर सिंदूर बड़ी कुशलतापूर्वक लगाती है । सिन्दूर लगाने की प्रथा दक्षिण भारत की अपेक्षा उत्तर भारत में अधिक प्रचलित है । सिन्दूर माँ लक्ष्मी का भी प्रतीक है । इसीलिये गृह-लक्ष्मी इसका प्रयोग सहर्श करती है ।

कतिपय वृद्ध माताओं का कथन है कि यदि महिलाएँ बालों के बीचों बीच माँग में सिन्दूर सजाती है तो यह उनके पतियों के लिए दीर्घ एवं स्वस्थ आयु का प्रतीक होता है । यदि सिन्दूर मध्य में न लगाकर दाये-बायें तिरछी ओर लगाया जाता है तो ऐसी मान्यता है कि उन महिलाओं के पति का जीवन बाधाओं से भरा रहता है । नौकरी, व्यवसाय आदि में भी स्थिरता का अभाव दिखलाई देता है।

सिन्दूर महिलाओं के स्वास्थ्य के लिए भी लाभदायक है । विवाह के पश्चात कन्या की जीवन-शैली एवं पारिवारिक वातावरण तथा उसकी दिनचर्या आदि सब कुछ बदलजाता है । ऐसे में पारिवारिक परिवर्तन भी तनाव का कारण बन जाता है । दोनो परिवारों के सदस्यों के स्नेह सिंचित व्यवहार से वातावरण को मधुर बनाया जा सकता है । सिन्दूर का प्रयोग तनाव को दूर करने में औशधि का काम करता है । सिन्दूर में पारा नामक तत्व पाया जाता है । पारा आयुर्वेद में एक औषधि के रूप में प्रसिद्ध है। सिन्दूर लगाने वाले स्थान पर एक महत्वपूर्ण ग्रंथि स्थित है जिसे ब्रह्मरन्ध्र ग्रंथि कहा जाता है । यह एक संवेदनशील ग्रंथि होती है । सिन्दूर में पारा होता है। इस ग्रंथि के सम्पर्क में आने से महिलाओं का तनाव कम होता है। विवाह पश्चात् तनाव जनित रोगों से बचने में सिन्दूर की भी महत्वपूर्ण भूमिका है। तुलसी कृत श्रीरामचरितमानस में सीता विवाह का वर्णन करते हुए तुलसीदासजी कहते हैं :-

प्रभुदित मुनिन्ह भॉवरी फेरीं। नेत्र सहित सब रीति निबेरी ।।
राम सीय सिर सेंदुर देहीं। सोभा कहि न जाति बिधि केहीं ।।
श्रीरामचरितमानस बालकाण्ड दोहा 324-1-4

मुनि ने आनन्द पूर्वक भाँवरे फिराई और नेग सहित सब रीतियों को पूरा किया। श्रीरामचन्द्रजी ने सीता की मांग में सिन्दूर लगाया।

श्रीराम भक्त हनुमान् के बारे में एक कथा प्रचलित है कि एक समय हनुमान्जी ने सीताजी को मांग में सिन्दूर लगाते हुए देख लिया । श्रीहनुमान् जी ने उत्सुकतावश सीता माता से इसका कारण पूछा ! सीता माता ने उन्हें बतलाया कि वे भगवान श्रीरामजी की दीर्घायु के लिए मांग में सिन्दूर लगाती हैं । बस फिर क्या था ? हनुमान् जी ने सोचा कि क्यों न वे अपना सम्पूर्ण शरीर को सिन्दूर से रंग ले ताकि मेरे स्वामी दीर्घायु हो जावें । उन्होंने अपना सम्पूर्ण शरीर पर सिन्दूर से तेललगाकर रंग लिया । तभी से आज तक परमप्रिय रामभक्त हनुमान्जी को सिन्दूर का चोला चढ़ाया जाता हैं ।(कल्याण हनुमान् अंक पृश्ठ 319 गीता प्रेस गोरखपुर)

सिन्दूर का पौधा राजस्थान,मध्यप्रदेश तथा छत्तीसगढ़आदि स्थानों पर पाया जाता है। पौधे में फलियाँ लगती हैं और फलियों से निकलने वाले दानों से ही सिन्दूर का निर्माण होता है । माँ कामाख्यादेवी के मंदिर में मिलने वाले सिन्दूर का भी बहुत महत्व है । ऐसा कहा जाता है कि वहॉ पर कुछ विशेष प्रकार के पत्थर के छोटे-छोटे टुकड़े प्राप्त होते है जिन्हें पीसकर सिन्दूर बनाया जाता है । वहॉ भक्तों को भी यही सिन्दूर दिया जाता है । वर्तमान समय में सिन्दूर की शुद्धता लुप्तप्रायः है ।

प्रत्येक वस्तु में मिलावट है । नकली सिन्दूर स्वास्थ्य के लिए घातक हो सकता है । चिकित्सकों का कथन है कि इसका उपयोग करने से नेत्रज्योति कम हो सकती है । असमय बालसफेद होने की संभावना भी रहती है । चर्म रोग भी हो सकता है । खुजली आदि घातक व्याधियों से महिलाएं ग्रसित हो सकती हैं । कई चिकित्सक भी सिन्दूर का उपयोग न करने की सलाह देते हैं । कई महिलाओं कंकू, रोली, या तरलगंध का उपयोग सिन्दूर के स्थान पर करने लगी हैं । भारतीय समाज में यह परम्परा रही है कि सिन्दूर एक विवाहिता के लिए सौभाग्य का प्रतीक है । प्रत्येक विवाहिता को उसे अवश्य लगाना चाहिए चाहे वह कंकू रोली या द्रव रूप में ही क्यों न हो। परंतु इन सबके साथ ही यह भी आवश्यक है कि अपने जीवन साथी के साथ सद्व्यवहार,चारित्रिक गुण, मैत्री पूर्ण व्यवहार, अपने परिवार के प्रति प्रेम,दया, सेवा तथा सहानुभूति के साथ ही अपने पति के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने पर भी अपने पति की आयु वृद्धि में सहायक हो सकती है । कन्या के जीवन में विवाह के पश्चात आने वाले तनाव को केवलसिन्दूर लगाने से ही दूर नहीं किया जा सकता वरन् दोनों पक्षों द्वारा नव वर-वधु को पर्याप्त स्नेह देकर उन्हें अपने नये सगे संबंधियों के प्रतिमार्गदर्शन देकर जीवन को सुखी बनाया जा सकता है । परिवार में सुख समृद्धि और शांति केवलमाँग में सिन्दूर लगाने से ही नहीं आती अपितु उसके लिए मधुर व्यवहार भी आवश्यक है ।

-श्रीमती शारदा नरेन्द्र मेहता
एम.ए. संस्कृत विशारद
उज्जैन, मो. 9406660280

लघु काशी पीपलरावाँ - एक विहंगम दृष्टि

काशी भूत-भावन भगवान श्री विश्वनाथ एवं विद्वानों की नगरी है। सम्पूर्ण विश्व में काशी जैसे धर्मशास्त्र के विद्वान नहीं है। इसी कारण पूरे भारत से धर्मशास्त्रों के अध्ययन हेतु बालकों को काशी भेजा जाता रहा है। काशी के पश्चात दूसरे क्रम में अवन्तिका (उज्जैन) का नाम आता है। इसी कारण यहाँ सान्दीपनी आश्रम में गीता के अमर गायक भगवान श्री कृष्ण ने अध्ययन किया था।

द्वितीय काशी क्यों- अब प्रश्न यह उपस्थित होता है कि पीपलरावां को लघु काशी कि उपाधि किसने और क्यों दी? यह जिज्ञासा नागरिकों के मन में यदा-कदा उत्पन्न होती रहती है। पीपलरावां लघु काशी क्यों है, यद्यपि इसका कहीं कोई इतिहास उपलब्ध नहीं है, किन्तु इसकी प्रमाणिकता पर भी संदेह नहीं किया जा सकता, क्योंकि यह अधिक पुरानी बात न होकर मात्र छः सात पीढ़ी पूर्व का विषय है जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित होती आ रही है।

विद्वानों का पीपलरावां आगमन- कहते हैं कि काशी के विद्वानों ने जब यहाँ के नागर समाज के विद्वानों की प्रशंसा सुनी तो एक बार वे शंका समाधान हेतु खच्चरों पर अपने ग्रन्थ लाद कर शास्त्रार्थ हेतु यहाँ पधारे और अंत में स्वामी सोमनाथ जी महाराज एवं अन्य विद्वानों से पराजित होकर तथा उन्हें 'मालव मार्तण्ड' की उपाधि से विभूषित कर काशी लौट गए। आज भी नागर समाज के साथ गुजरात से आया पाटीदार समाज भी धार्मिक विषय में काफी हस्तक्षेप रखता है। आसन्न देवलोक वासी पटेल सवाई सिंह नाहर, पटेल निर्भयसिंह नाहर तथा पटेल ईश्वरी सिंह नाहर सहित कतिपय व्यक्ति इसके प्रमाण है। वे रुद्रादि वेदमन्त्रों का कंठस्थ सस्वर पाठ किया करते थे। सुदूर ग्रामीण अंचलों में स्व.श्री भीमाशंकर दवे के रचित गरबे विभिन्न राग रागिनियों में गाये जाते है। 52 गरबों से पुष्ट हस्तलिखित पुस्तक को अब दैनिक नईदुनिया के पूर्व सम्पादक श्री ओमप्रकाश मेहता पीपलरावां भोपाल ने मुद्रण करवा कर समाज को समर्पित किया है। संस्कृत, गुजराती, तथा मालवी की त्रिवेदी यहाँ बह रही है।

पुरातात्विक एवं ऐतिहासिक स्थल- बरेजा, विश्नुदेवरा, लक्ष्मीकांत, मंदिर, विश्वेश्वर महादेव मंदिर, विश्वनाथ मंदिर तथा सतियों कि पाषाण प्रतिमाओं का बाहुल्य यहाँ कि पुरातात्विक निधि है। ग्राम के चारों ओर विशाल प्राचीरों से यह नगर सुरक्षित था जो आज भग्नावशेष में विद्यमान है। जून 1980 में आरक्षी केन्द्र पर एक कुआ खुदाई के दौरान ब्रह्माजी की एक प्राचीन प्रतिमा निकली थी, जो वर्तमान में जिला पुरातात्विक संग्रहालय देवास की शोभा बढ़ा रही है। पुरातत्व विभागाध्यक्ष विक्रम विश्व विद्यालय उज्जैन के श्री वाकणकर एवं सुश्री भारती जोशी यहाँ स्थित लक्ष्मीकांत मंदिर एवं अन्य स्थलों के प्रस्तर लेखों का अवलोकन कर चुके हैं। यहाँ के जमीदार की सामरिक दृष्टि से निर्मित विशाल हवेली के सबसे नीचे का एक काष्ठ स्तम्भ को देखना यहाँ आने वाले लोग कभी नहीं भूलते। यह स्तम्भ घुमाने पर चारों ओर घूमता है। हवेली निर्माताओं का कथन है कि जिस दिन इसका घूमना बंद हो जावेगा उस दिन हवेली की आधी उम्र हो जावेगी। ग्राम के चहुँ ओर 84 कुएँ तथा बावड़ियाँ है। ग्राम का नर्मदीय तालाब इनका अक्षुण्य स्त्रोत है। ये सभी हरित क्रांति का सन्देश देते हैं। नगर के चारो ओर कई अमराईयाँ तथा स्वतंत्र आम्र वृक्ष थे जो मानव स्वार्थ की बलि चढ़ चुके हैं। 10 सूत एक साथ निकलने वाला चरखा बना कर बापू को समर्पित करने वाले श्री ओंकारलाल दवे (नागर) यहाँ कि विभूति थी।

यहाँ के स्व.श्री बद्रीनारायण व्यास एवं स्व.श्री वासुदेव नागर प्र.अ. द्वय ने राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्तकर एवं जनगणना में तथा अन्यों ने 4 रजत एवं ताम्र पदक प्राप्त कर इस नगर का गौरव बढ़ाया है। इसी प्रकार शाखा डाकपाल स्व.श्री रामनारायण मेहता अल्प बचत हेतु ग्रामीणों को प्रोत्साहित कर संभागायुक्त से पुरुस्कृत हो चुके हैं। मंत्रोत्चार द्वारा सर्प दंश से मुक्ति के लिए विख्यात स्व.श्री मेहता ने असंख्य ग्रामीणों को जीवनदान दिया है।

विद्वानों की श्रंखला- महापुरुषों की यह श्रृंखला आज भी गतिमान है। स्व. पं.श्री अवन्तिलाल व्यास, स्व.पं.श्री बृज वल्लभ व्यास, स्व.पं.श्री शम्भूलाल द्विवेदी, स्व.पं. श्री श्यामलाल व्यास, स्व.पं.श्री श्री वल्लभ व्यास (वकील), स्व.श्री पं.श्री दुर्गाशंकर त्रिवेदी के साथ वर्तमान पीढ़ी में स्व.वैद्य पं. श्री अम्बा शंकर शास्त्री, स्व.पं.श्री रामकृष्ण नागर, स्व.डॉ.श्री शिवेशचन्द्र व्यास, स्व.डॉ.श्री कृष्णकांत त्रिवेदी के नाम उल्लेखनीय है। इस श्रेणी के शेष एक मात्र दीपक वैद्य, डॉ.श्री पूर्णानंद व्यास आज भी इस क्षेत्र में अपनी सानी नहीं रखते।

समाज के गौरव- विभिन्न विभागों से उच्च पदों पर पदस्थ रहे डिविजनल इंजीनियर दूरभाष (इन्दौर) स्व.श्री दुर्गाशंकर मेहता इंदिरा गाँधी मुक्त विश्व विद्यालय के पूर्व उपकुलपति श्री प्रमोद कुमार मेहता, दैनिक नईदुनिया के पूर्व सम्पादक श्री ओमप्रकाश मेहता, स्नातकोत्तर महा विद्यालय धार के प्राचार्य डॉ.श्री तेज प्रकाश व्यास, स्नातकोत्तर कन्या महा विद्यालय देवास के पूर्व प्राचार्य श्री राजेन्द्र कुमार त्रिवेदी, स्टार एकेडमी ऑफ टेक्नोलॉजी एवं मेनेजमेन्ट के डायरेक्टर डॉ. श्री नरेन्द्र कुमार त्रिवेदी, म.प्र. नागर युवा परिषद् के अध्यक्ष श्री हेमंत कुमार व्यास नागर परिषद् शाखा पीपलरावाँ के पूर्व अध्यक्ष वरिष्ठ पत्रकार श्री हरिनारायण नागर, जिला शिक्षा अधिकारी श्री अरुण कुमार व्यास शाजापुर कृति सोया के पूर्व महा प्रबंधक श्री महेन्द्र कुमार नागर देवास तथा श्री हेमन्त कुमार त्रिवेदी, श्री योगेन्द्र कुमार त्रिवेदी उज्जैन जिन्होंने समाज को बहुत कुछ दिया है तथा अभी भी सेवारत है।

राजनीति के स्तम्भ- राजनीति के क्षेत्र में स्व.पटेल श्री रामचन्द्र नाहर, स्व.पटेल श्री आत्माराम नाहर, स्व.श्री सीताराम भामा प्रदेश

स्तर की राजनीति के स्तम्भ रहे हैं। पीपलरावाँ एवं क्षेत्र में हिन्दूत्व को जीवंत रखने एवं पोषित करने वाले रा. स्व. से.सं. के विख्यात प्रचारक श्री लक्ष्मीकांत शर्मा देवास की वर्षों तक यह कर्म भूमि रही है। प्रसिद्ध साहित्यकार, कथाकार एवं चित्रकार श्री प्रभु जोशी कि यह जन्मभूमि होकर उनकी प्राथमिक शिक्षा भी यही हुई है।

नगर की अपेक्षाएं-

यूँ तो पूर्व नगरीय प्रशासन एवं विकास मंत्री श्री सज्जनसिंह वर्मा के कार्यकाल में इस क्षेत्र में पर्याप्त विकास हुआ है, किन्तु आज इस नगर की लगभग 13 हजार की जनसंख्या एवं एनी स्थितियों को दृष्टिगत रखते हुए इस नगर में स्नातकोत्तर महाविद्यालय कानी उ.मा.वि., उप तहसील एवं उप डाक घर कि नितांत आवश्यकता है। इस क्षेत्र में विकास की रेखा में सोनकच्छ, पोलायकला व्हाया पीपलरावाँ सड़क पर भारी यातायात दबाव को दृष्टिगत रखते हुए सड़क का दोहरीकरण यथा शीघ्र अपेक्षित है।

-बिन्दुबाला मेहता
सिल्वर ऑक्स कॉलोनी, इन्दौर
मो. 9424084744

राम लला तो धणां लाडला

तर्ज (चिरमीणां दाणा चार)

राम लला तो घणां लाडला-2, म्हारा हिवड़ा-2, रा सरदार।
म्हाने तो घणां प्यारा लागे, संता ने घणां प्यारा लागे।

(1) नौमी तिथि अति पावनी री सखी-2, दशरथ धरां-2, लियो अवतार।
म्हाने तो घणां प्यारा लागे, भक्ता ने घणां प्यारा लागे। राम लला..

(2) चाँद उग्यो है सुहावणो री सखी-2, बाज्यो सखी बाज्यो री सोहनथाल।
म्हाने तो घणां प्यारे लागे, संतां ने घणां प्यारा लागे। राम लला..

(3) राम-लक्ष्मण भरत शत्रुघ्न-2, सखी राम तो आलि राम तो पूरण काम।
म्हाने तो घणां प्यारे लागे, भक्ता ने घणां प्यारा लागे। राम लला..

(4) सांवरी सूरत मन मोहिनी मूरत-2, सखी मन में, म्हारां मन ने रही है लुभाय।
म्हाने तो घणां प्यारा लागे, संतां ने घणां प्यारा लागे। राम लला..

(5) चालो री सखियों अवध में चालां, राम लला को-2, दरस करांगा।
सब ओढ़ो री-2, चुनरिया लाल, म्हांने तो घणां प्यारा लागे।
संता ने घणां प्यारा लागे। राम लला..

(6) नागर थारी सरने आई, दर्शन, दीजो-2, म्हांने प्यारा रघुराई।
प्रभु पूरण करजो काम, म्हांने तो घणां प्यारा लागे, संतां ने घणां प्यारा लागे। राम लला..

-सौ.सुमनलता नागर, मोहन बड़ोदिया

सवाल क्यों करुं?

पुलकित बातों के पल, सवाल क्यों करुं..?
बेहिसाब जिंदगानी में, हर ख्वाब, ख्याल महके,
चंद गमनीय मंजर से सांस मेरी हर बहके..
सवाल क्यों करुं..? मिलने पर वियोग से..
हर पल रोशनी पाऊँ, सवाल क्यों करूं..?
ओरो से.. सोच जीत जाऊँ चांद की चकोर जब,
अंधकार निशा पाकर.. कितनी दिलरुबा सी..
सवाल क्यों करुं.. तारें उसमें कितने..
वक्त तेज लहराती धारा, सवाल क्यों करूं..?
चंद रुकी लहर बन.. साथियों का स्नेह अनवरत
स्वयं कुछ ख्यालों से, विश्वास अनोखा पाया..
सवाल क्यों करुं..? हारने का सोचकर शत्रु से..
जीवन मिला जी भर, सवाल क्यों करुँ..?
बेशुमार प्यार अपनाया.. अजीब माजरा यारों,
न मिला जो सोचकर.. महकी-महकी धड़कन का..
सवाल क्यों करुं..? थमी-थमी खामोशी से..
पायें फूल विभिन्न रंगों में, सवाल क्यों करुँ..?
बगियां ओर देखकर..
कड़वी चुभन काटों से..

-उमा मेहता त्रिवेदी, इन्दौर
मो. 9893938109

सच्चे 'सम्बन्ध' अपने आप संभलते हैं

* लाठी व पत्थर से हड्डियाँ टूटती है, परन्तु शब्दों से प्रायः सम्बन्ध टूट जाते हैं।
* 'सम्बन्ध' ब्रेड जैसे होते हैं, खाने में स्वादिष्ट मगर पचने में भारी।
* जिन्हें संभालने पड़े वे 'संबंध' सच्चे नहीं होते जो संबंध सच्चे होते हैं उन्हें संभालना नहीं पड़ता।
* 'संबंध' वृक्ष जैसे होते हैं, किसी-किसी की जड़े काफी मजबूत होती है, चाहे कितने भी तूफान आए वृक्ष रूपी संबंध अपनी जगह अटल रहते हैं, कुछ संबंध जरा-सा तूफान आने पर उखड़ जाते हैं।
* 'संबंध' मजबूत होने चाहिए, मजबूर नहीं। संबंध कभी भी खत्म नहीं होते, हमारा अहंकार, अज्ञानता और दृष्टिकोण उसे खत्म कर देता है।
* अच्छे संबंध की सुंदरता इसी में हैं कि हम एक-दूसरे की गल्तियों को नजरअंदाज करें क्योंकि बिना गलती का व्यक्ति ढूंढने जाएंगे तो शायद अकेले ही रह जाएंगे।

-संकलन- उषा ठाकोर, मुम्बई
मो. 9833181575

शिक्षा से ही सम्भव है देश एवं समाज का विकास

समाज के छोटे बच्चों का आह्वान

ज्ञान से खुलती है विकास की राह- प्रत्येक मनुष्य के जीवन में शिक्षा का बहुत ही महत्व होता है। शिक्षित होकर ही मनुष्य अपना, देश का और अपने समाज का विकास कर सकता है। शिक्षित होने की वजह से ही मनुष्य पृथ्वी से सभी जीवों में सर्वश्रेष्ठ माने जाते हैं। विद्या विनय देती है, विनय से पात्रता, पात्रता से धन, धन से धर्म और धर्म से सुख प्राप्त होता है। कोई भी व्यक्ति वह चाहे किसी कुल में पैदा हुआ हो शिक्षा सभी के लिए अनिवार्य है। अशिक्षित मनुष्य का जीवन पशु के समान माना गया है। अशिक्षित मनुष्य का लोग सम्मान भी कम करते हैं। मैंने अक्सर अपने जीवन में अनुभव किया कि अशिक्षित और कम पढ़े लिखे लोगों का लोग शोषण करते हैं, साथ ही तिरस्कार भी करते हैं। अतः शिक्षा प्राप्त कर समर्थ और शक्ति सम्पन्न बनना संसार में अति आवश्यक है। शिक्षा पुरुष का श्रेष्ठ गहना है, वह सही निर्णय लेने में समर्थ हो जाता है, शिक्षा प्राप्त कर लेने से उसके ज्ञान चक्षू (नेत्र) खुल जाते हैं।

प्यारे बच्चों, अब आपको ही अपने देश को संभालना, विश्व गुरु बनाना है, हमारी पुरानी विरासत को प्राप्त करना है, जो पुराने समय में विश्व का गुरु रहा है और सोने की चिड़ियां के नाम से जाना जाता था। वहीं स्थान प्राप्त करने के लिए आप सब बच्चों को कड़ी मेहनत से खूब पढ़ाई करनी है, अपने मन में यह संकल्प करना है कि मैं खूब जमकर पढ़ाई करूंगा और देखना एक दिन बहुत बड़ा आदमी बनूंगा और अपने देश को संकटों से मुक्ति दिलाऊंगा।

प्यारे बच्चों, विद्या वो धन है जो कोई शातिर चोर भी नहीं चुरा सकता। आप कल को बड़े होकर देश के जिम्मेदार नागरिक बनने वाले हैं, आप पर ही देश को संभालने की जवाबदारी रहेगी। अभी आपके पढ़ने के दिन हैं, इसलिये खूब मन लगाकर पढ़ाई कर लो, खूब अच्छे नम्बरों से पास होते रहो, सफलता आपके कदम चूमेगी, पढ़ाई करने का यह समय फिर लौटकर नहीं आने वाला है। अपना भविष्य खुद बनाओ, कोई दूसरा आपका भविष्य अच्छा नहीं बना सकता, आपको स्वयं ही अपना भविष्य समृद्ध बनाना है। ये संकल्प लेना है कि मैं एक दिन अवश्य बड़ा आदमी बनूंगा और अपने देश को विश्व में चमका दूंगा, अपने जीवन में केवल ईमानदारी से ही धन कमाऊंगा।

जब एक अखबार बेचने वाला राष्ट्रपति बन सकता है, एक चाय बेचने वाला मुख्यमंत्री बन सकता है, प्रधानमंत्री बन सकता है, तो फिर मैं क्यों नहीं कुछ बन सकता हूँ, मैं भी अवश्य कुछ बनकर दिखाऊंगा, यह मेरा दृढ़संकल्प है। रोज ईश्वर से प्रार्थना करो कि हे ईश्वर मुझे महान आदमी बनाना और ईमानदार बनाना, बुरे कामों से हमेशा दूर रखना ताकि मैं अपने देश और माता-पिता की अच्छे से सेवा कर सकूं और ताकतवर और शक्तिशाली बनाना ताकि दुष्टों और बुरे कर्म करने वालों को सबक सीखा सकूं, अत्याचारियों को दिन में तारे दिखा दूं। भगवान बच्चों की जल्दी सुनते हैं। भगवान से आप रोज-रोज कहोगे एक दिन अवश्य भगवान आपकी सुनेंगे और आप जैसा चाहोगे वैसा बना देंगे। रोज सुबह उठकर माता-पिता के पैर छूकर आशीर्वाद लेना भी न भूले, बुरे कामों से हमेशा दूर रहें, बुरे काम करने वालों की ईश्वर भी कोई मदद नहीं करते, झूठ भी नहीं बोलना चाहिये।

आपके सामने अभी आपका पूरा जीवन पड़ा है, अपना जीवन खुशहाल और समृद्ध बनाने के लिए अभी मन लगाकर जोरदार पढ़ाई कर लो, ये मौका हाथ से बिलकुल न जाने दो, इस समय यदि आप मन लगाकर अच्छी पढ़ाई कर लोगे, जीवन का अच्छा आनंद ले सकोगे और आपका, देश का तथा माता-पिता का सबका भविष्य अति सुनहरा होगा।

अपना शरीर भी अच्छा बनाओ, शरीर की इन्द्रियों की नियमित सफाई करो और स्वस्थ रहो, मस्त रहो। जो बच्चे खूब मेहनत करके अच्छी पढ़ाई करते हैं उनका भविष्य भी अच्छा सुनहरा होता है। चाहे लड़का हो या लड़की, खूब मेहनत से पढ़ाई करने से उनके दिमाग का विकास भी अच्छा होता है। सफलता उनके कदम चूमती है, अनेक क्षेत्रों में सफलता अर्जित करते हैं। हमेशा यही सोचो मैं पढ़-लिखकर बहुत बड़ा आदमी बनूंगा। जो जैसा सोचता है भगवान उसको वैसा ही बना देते हैं। खूब पढ़ाई करो और छा जाओ सबको पीछे छोड़कर आगे निकल जाओ। ये हमेशा याद रखो आपको अपना जीवन सुन्दर, सफल और समृद्ध बनाना है जो केवल आपके अपने हाथों में है। अभी अच्छी मेहनत कर लो, मत चूके चौहान।

एक्टर शाहरुख खान का कहना है- जब मैं लोगों को पढ़ाई करते और शिक्षित होते देखता हूँ तो मुझे गर्व की अनुभूति होती है। दुनिया में एजुकेशन (शिक्षा) से बड़ा कुछ नहीं है।

'पढ़ोगे लिखोगे बनोगे नवाब
नहीं पढ़ोगे लिखोगे कर लोगे जीवन खराब'
दिखा देना दुनिया को कि ये हिन्दुस्तान है।
अब हम तो बुढ़े हो चुके अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो।
सभी बच्चों को नये वर्ष की शुभकामनाएँ

नन्हा मुन्ना राही हूँ, देश का सिपाही हूँ, बोलो मेरे संग, जय हिन्द, जय हिन्द।

-सुरेन्द्र शर्मा (गीता मर्मज्ञ)
106, अलकापुरी, देवास (म.प्र.)

संतुलित आहार से सुधारा जा सकता है स्वास्थ्य

केलोरी का मतलब है हमारे शरीर को चलाने के लिए जितनी ऊर्जा की जरूरत होती है वह हमें खाद्य पदार्थों द्वारा मिलने वाली ऊर्जा को केलोरी कहते हैं।

हम जो भी खाद्य पदार्थ खाते हैं उसमें केलोरी होती है। सबसे ज्यादा केलोरी फेट, प्रोसेस्ड फूड, शकर, कार्बोहाइड्रेड में होती है। मतलब तली और ज्यादा तेल घी से युक्त खाद्य पदार्थों में ज्यादा केलोरी होती है। वही सबसे कम केलोरी फल, सलाद, ओर उबली हुई सब्जियों में होती है।

अब सवाल यह है कि 30 से 35 वर्ष की आयु में लोगों को समस्याएँ घेर लेती है। लोगों की कार्यक्षमता कम होने लगती है। लोग मोटे होने लग जाते हैं। थकान महसूस होने लग जाती है। किसी किसी को शुगर और ब्लडप्रेशर भी हो जाती है। यह जो स्थिति निर्मित होती है इसमें लोग कई प्रकार के प्रयास करते हैं। अधिकतर लोग गोली दवाई द्वारा इन लक्षणों से कंट्रोल करने की ----- लेकिन वे नहीं जानते कि गोली दवाई इन समस्याओं राहत पहुँचाती है और लोग धीरे-धीरे गोली दवाई पर आश्रित हो जाते हैं। अब हमें यह समझना होगा कि यदि हमारा वजन बढ़ा हुआ है या हमें बी.पी. या शुगर है तो हमें केलोरी के गणित को समझना होगा। अक्सर लोगों में आने वाली समस्याएँ और पूछे जाने वाले प्रश्न-

(1) मैं तो दिनभर मेहनत करता हूँ फिर भी मोटा हूँ या मुझे बी.पी. या शुगर है।

(2) कमजोरी महसूस होती है।

(3) रोज सुबह 1 घण्टा ज्यादा एक्सरसाईज या दौड़ लगाता हूँ फिर भी मोटापे या बी.पी. शुगर से राहत नहीं मिल रही है।

तो स्वजातीय बन्धुओं कहने का मतलब यह है कि आप एक्सरसाईज करके अपनी केलोरी तो जलाते हैं पर उससे ज्यादा केलोरी आप अपने भोजन, चाय, नाश्ता में ले रहे हैं सीधा सा गणित यह है। इसलिए आपको मोटापा बी.पी. शुगर में आराम नहीं हो रहा है। आपको अपने आहार पर ध्यान देने की जरूरत है। आप जो भी एक्सरसाईज या भागदौड़ कर रहे हैं उसे बंद कर दें और अपनी केलोरी कंट्रोल करने पर ध्यान दें। यह 7 दिन का प्रोग्राम है यह करे और देखें कि किस तरह 7 दिन में 2 से 3 किलो वजन आपका कम हो जाएगा और बी.पी. और शुगर भी कंट्रोल हो जाएगी। यदि आपकी शुगर खाली पेट 150 से ज्यादा रहती है तो आपको डॉक्टर की सलाह से यह डाईट प्लान ले सकते है।

पहला दिन (1) इस दिन सुबह उठकर बगैर शकर बगैर दूध के ग्रीन या ब्लेक टी लें, बगैर निंबू के। नाश्ते में उबली हुई सब्जियाँ जैसे- लौकी, टमाटर, बेंगन, बटले, आलू या जो भी आपको पसंद हो कुकर में डालकर उबाल दें और खाएँ। उबली हुई सब्जी पर काला या सेंधा नमक और कालीमिर्च या जीरावन डालकर खाए। लंच और

डिनर में भी यही खाना है।

दूसरा दिन (2) इस दिन ग्रीन या ब्लेक टी बगैर दूध शंकर निंबू के लें और पूरे दिन फल ही खाना है। नाश्ता लंच और डीनर में सिर्फ फल ही खाना है। आम, अंगूर और चिकू छोड़कर जो भी फल उपलब्ध हो वह खाएँ।

तीसरा दिन (3) इस दिन ग्रीन-ब्लेक टी बगैर दूध शक्कर नींबू के लें और पूरे दिन सिर्फ दूध और केला ही खाना है। दूध बगैर शक्कर का क्रीम निकला हुआ और पके हुए केले नाश्ता और लंच, डिनर में 1 डिनर में 100 ग्राम पनीर तवे पर गरम करके काला नमक जीरा डालकर ले सकते हैं।

चौथा दिन (4) इस दिन उबली हुई सब्जियाँ और फल लें ग्रीन या ब्लेक टी बगैर दूध, शक्कर, नींबू

पाँचवा दिन (5) उबली सब्जी, कच्चा, सलाद और फल शाम को 100 ग्राम पनीर लें।

छटा दिन (6) उबली सब्जी, सलाद, फल, फलों का ज्यूस बगैर शक्कर लें।

सातवां दिन (7) उबली सब्जी, सलाद, फल, फलों का रस बगैर शक्कर लें। शाम को 100 ग्राम पनीर लें। डाईट प्लान खत्म होने के बाद हल्का भोजन शुरु करें और थोड़ा-थोड़ा खाएं भरपेट नहीं खाना है। धीरे-धीरे नियमित आहार पर आ जाएँ।

आठवां दिन (8) अपना वजन तोल लें, अपनी शुगर चेक करा लें और अपना बी.पी. चेक करा लें। तीनों ही कंट्रोल में होंगे।

तो स्वजाति बंधुओं कहने का मतलब सिर्फ यह है कि आहार कंट्रोल करके भी हम स्वास्थ्य को पा सकते हैं। फिर मिलेंगे अगले अंक में।

-विजय शर्मा
माकड़ोन, जिला उज्जैन मो. 9406886501

संता ने बहुत कठोर तपस्या की
प्रसन्न होकर भगवान- मांगो वत्स क्या वर चाहिये?
संता- सिस्टम से चलिये प्रभू, पहले तपस्या भंग
करने के लिए अप्सराएँ आती है, उनका क्या हुआ?

योग से थाईराईड ग्रंथी में लाभ

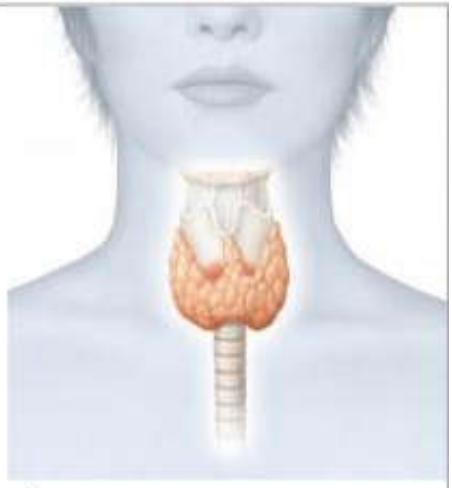

थाईराईड ग्रंथी जो कि गले में स्थित रहती है इसके दो लाभ होते हैं जो श्वास नली के दोनों ओर स्थित रहती है। थायराइड से तीन प्रकार के हार्मोन टी-3, टी-4 व केल्सीटोनीन निकलते हैं। थायराइड ग्रंथी के मुख्य कार्य आयोडीन को संग्रह करना, चयापच्य (मेटाबालिज्म) की क्रिया में शरीर में ऊर्जा के निर्माण में, शरीर की सामान्य वृद्धि में सहायक है। जब शरीर में टी-3 व टी-4 का निर्माण अधिक होने लगता है तब इस स्थिति को थायरोटाक्सीकोसीस कहते हैं। जो कि महिलाओं में अपेक्षाकृत ज्यादा होता है। इसमें मरीज का वजन कम होता जाता है, हाथ गर्म, पसीना ज्यादा आना थायराइड ग्रंथी का बढ़ जाना, हृदय की धड़कन बढ़ जाना कमजोरी महसूस होना, हाथ उंगलियों में कंपन, बैचेनी, थकावट, आँखों का बाहर निकलना व महिलाओं में मासिक धर्म में अनियमितता आदि लक्षण पाये जाते हैं। इसका उपचार एन्टीथायराइड ड्रग द्वारा किया जाता है व सर्जरी द्वारा भी होता है। और जब थायराइड ग्रंथी की कार्यक्षमता कम या टी-3 या टी-4 का निर्माण कम होने लगता है तब इस स्थिति को हायपोथायराइडिजम कहते हैं। इसमें मरीज की मानसिक व शारीरिक कार्यक्षमता कम हो जाती है, चमड़ी खुरदरी हो जाती है। कब्ज, वजन बढ़ना, मोटापा बढ़ना, कमजोरी, बदन दर्द, बालों का झड़ना चेहरा सूजा हुआ फूला हुआ, पलकों में सूजन हाथ व पैरों पर सूजन, होंठ व जीभ का बड़ा होना या मोटापन (मंगोलियन अपीयरन्स) ठंड ज्यादा लगना, हृदय की धड़कन कम होना, महिलाओं में मासिक की अनियमितता आदि लक्षण पाये जाते है। हार्मोन थेरेपी द्वारा इसका उपचार होता है। ग्वाइटर या घेंघा रोग भी थायराइड के बढ़ने व आयोडीन की कमी से होते है। योगाभ्यास के द्वारा थायराइड ग्रंथी की बीमारी के लिए निम्नलिखित योग क्रिया लाभदायक है :

(1) सूर्य नमस्कार :- सूर्य नमस्कार का दूसरा प्रकार जिसमें गर्दन को पीछे करते हैं। सूर्य नमस्कार का चौथा प्रकार जिसमें भी गर्दन पीछे ले जाते हैं व गहरी लम्बी सांस लेते और छोड़ते हैं जिससे थायराइड ग्रंथी पर दबाव पड़ता है और आसपास की मसल्स (मांसपेशियाँ) गतिशील होती है।

(2) भुजंगासन :- इसमें गर्दन उठाकर सांस लेना व छोड़ने की क्रिया करने से थायराइड ग्रंथी पर दबाव पड़ता है व इससे लाभ होता है।

(3) सर्पासन :- सर्पासन में भी गर्दन उठाने से लम्बी गहरी सांस लेकर इस आसन के करने से इस ग्रंथी में लाभ होता है।

(4) मत्स्यासन :- मत्स्यासन में पद्मासन में लेटकर गर्दन को जमीन पर लगाकर दीर्घश्वास लेना व छोड़ना जिससे ग्रंथी पर लाभ होता है।

(5) मक्रासन :- मक्रासन में गर्दन को स्ट्रेट करते हैं जिसमें लम्बी गहरी 10-12 तक सांस ली जाती है, जिससे ग्रंथी में लाभ होता है।

(6) क्रोकोडाइल :- क्रोकोडाइल 1 व 2 जिसमें गर्दन को दायें-बायें करते हैं जिससे इस ग्रंथी में लाभ होता है।

(7) सेतुबंध आसनः- सेतुबंध आसन में भी बीच में से कमर उठाकर गर्दन में स्ट्रेच (खींचकर) आना है जिससे थायराइड को ठीक होने में लाभ होता है। इसमें गर्दन स्ट्रेच (खींचकर) 10-12 लम्बी गहरी सांस ली जाती है। गोमुखासन सर्वांग आसन, हलासन, उष्ट्रासन, अर्द्ध हलासन भी लाभदायक है। ॐ का उच्चारण 20 बार योगेन्द्र (लोम अनुलोम)

(8) प्राणायाम :- प्राणायाम 20 वक्त, पद्मासन, अर्द्ध पद्मासन या वज्रासन में सीधे बैठकर लम्बी गहरी सांस बायें नाक से लेना, फिर दाहिनी नाक से छोड़ना, दाहिनी नाक से लेना, फिर बाये से छोड़ना, 10 या 20 वक्त करना सुबह शाम दोनों वक्त करना चाहिए।

(9) उज्जयी प्राणायाम :- पद्मासन, अर्द्ध पद्मासन, सुखासन या वज्रासन में बैठकर गले से छूती हुई लम्बी गहरी सांस लेना फिर धीरे-धीरे छोड़ना सांस लेते वक्त निंद्रा में सोते वक्त जैसी आवाज घर्राटे होती है वैसी आवाज होनी चाहिए। इससे इस ग्रंथी की बीमारी में लाभ होता है। इसके अलावा भ्रामरी प्राणायाम, 5 वक्त सिंहासन भी लाभदायक है।

(10) ध्यानः- पद्मासन, अर्द्धपद्मासन, सुखासन में बैठकर 3 से 10 मिनिट ध्यान करना, सांस पर ख्याल करना।

(11) श्वासनः- जमीन पर सीधा लेटकर पांव को लगभग एक फीट की दूरी पर रखकर, हथेली को चित्त रखना, शरीर को ढीला छोड़कर लेटकर धीरे-धीरे लम्बी गहरी सांस लेना व छोड़ना व शरीर व मन को शिथिल रखना। इसके अलावा योग निंद्रा भी लाभदायक है योग निन्द्रा भी करना चाहिए। श्वासन 5 से 10 मिनिट तक कर सकते हैं। दिन में एक वक्त जोर से हंसना भी जरूरी है। 2 से 3 कि.मी. पैदल तेज चलना। रात्रि का भोजन सोने के 2 घंटे पहले करना।

-ए.के. रावल योगाचार्य
25, पत्रकार कॉलोनी, (साकेत),
इन्दौर फोन 2565058

युवा उद्यमी श्री सौरभ नागर का अकस्मात देहावसान

उदयपुर (राजस्थान)। 14 फरवरी 2017 को तनिष्क बीवरेज कं. के प्रणेता 33 वर्षीय अल्पायु श्री सौरभ नागर (श्री शरदचन्द्र नागर के ज्येष्ठ पुत्र) का प्रातःकाल में मोटर सायकल से कार्य पर जाते समय सीने में घबराहट व चक्कर महसूस करते रूककर ठहरे व गिरजाने से रास्ते में क्षणार्थ में अवसान हो गया। परिजन शहर से बाहर थे। घटना से नागर समाज आश्चर्यचकित हो गया।

होनहार श्री सौरभ व सुलभ नागर द्वारा स्व.वित व स्वावलंबन से 5 वर्ष पूर्व तनिष्क बीवरेज कं. शुरु कर शहरवासियों को मिनरल वाटर सप्लाय का कार्य प्रारंभ किया। इस व्यवसाय से व्यवसायियों व घरेलू आवश्यकता के अनुरूप शहर के काफी क्षेत्र में मिनरल वाटर का प्रदाय

सफलता से गतिमान रहा। दोनों बंधु के इस परिश्रमी संचालन की सफलता से नागर व्यवसायी होने का सम्मान भी उद्योग से व समाज से मिला। इसी मास में 2 वर्ष पूर्व बाजार में मिनरल वाटर बाटल विक्रय की शुरुआत की।

श्री सौरभ के दिवंगत होने की इस घटना ने नागर समाज सहित सभी को विचलित कर करुणा अवस्था में पहुँचा दिया। परिवार सदमें व करुणा के सागर में डूब गया। प्रतिति लगती है कि श्री सौरभ अनन्त यात्री हो प्रभु प्रेम व मिलन के याचक हो उनमें समाहित हो गये हैं। परिवार में माता-पिता श्री बंधु पत्नी व 2 बेटे हैं। सम्वेदित है। प्रभु से उनकी आत्मा को शांति मिलने की प्रार्थना पुष्पांजलि समर्पित। परिवार को धैर्य व सांत्वना इस करुणा से उबरने हेतु प्रदान करें।

-पी.आर. जोशी
528, उषा नगर एक्स., इन्दौर

लायन प्रथा बंद कर अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया

शाजापुर जिले के ग्राम कुम्हारिया (खास) में पं.मोहनलाल नागर अनुज मुरलीधर नागर की माताजी श्रीमती मानुबाई नागर के उत्तर कार्यक्रम में समाज के सेकड़ों लोग एकत्रित हुए। इस अवसर पर ब्राह्मण समाज के लोगों ने पूर्व में ग्राम टीकोन में श्री दूर्गाशंकर नागर की धर्मपत्नी के निधन पर श्री मोहनलाल नागर के प्रस्ताव पर लायन प्रथा बंद करने का निर्णय लिया था। उसी का पालन करते हुए लायन वितरित नहीं की गई। जो समाज में फिजुल खर्ची को रोकने में महत्वपूर्ण कदम है। इस निर्णय का समाज के लोगों में स्वागत किया व आगे सम्पूर्ण समाज में इस प्रथा को बंद करने की अपील की गई।

श्रीमती विद्यावती मेहता, इन्दौर

स्व.श्री हरिशचन्द्रजी मेहता की धर्मपत्नी, गिरीश मेहता (एम.पी.ई.बी.), देवेन्द्र मेहता स्टेट बैंक ऑफ इन्दौर, दिलीप मेहता (वित्त निगम) एवं श्रीमती मीनाक्षी दवे की माताजी एवं श्री ओमप्रकाशजी दवे की सासूमाँ श्रीमती विद्यावती मेहता का स्वर्गवास 9 फरवरी 2017 गुरुवार को हो गया। समाजजनों, रिश्तेदारों एवं गणमान्य नागरिकों ने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

श्रीमती मानूबाई नागर, कुम्हारिया खास

जिला मुख्यालय के समीप ग्राम कुम्हारिया खास के सर्वब्राह्मण समाज सामूहिक विवाह समिति के संयोजक मोहनलाल नागर की माता श्रीमती मानूबाई पति स्व.जगन्नाथ नागर का 90 वर्ष की आयु में लम्बी बीमारी के चलते मंगलवार रात को दुखद निधन हो गया। इनकी शवयात्रा उनके स्व.निवास कुम्हारिया खास जिला शाजापुर से निकाली गई, जिसमें दैनिक अवन्तिका परिवार, जय हाटकेश वाणी पत्रिका की ओर से प्रतिनिधि सुरेन्द्र नागर, समाजजनों, गणमान्य नागरिकों ने शामिल होकर श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए श्रद्धांजलि दी।

शोकाकुल परिवार- शिवनारायण नागर, लक्ष्मी नारायण नागर, मोहनलाल नागर, कैलाशचंद नागर, मुरलीधर नागर, रमेशचन्द्र नागर, संतोष नागर, गोपाल नागर, विकास नागर, मनीष नागर, मनीष नागर, गिरीराज नागर, आशुतोष नागर, बालकृष्ण नागर, श्याम नागर, भविष्य नागर एवं समस्त नागर परिवार कुम्हारिया खास जिला शाजापुर

हमारे आदर्श अम्मा-बाबूजी

श्री अम्बालालजी नागर बाबूजी
अवसान दि. 26 जनवरी 2017
(मनोहर थाना)

श्रीमती शांतिदेवी नागर अम्मा
अवसान दि. 8 दिसम्बर 2012
(मनोहर थाना)

आत्मा को न शस्त्र काट सकते हैं, न ही आग जला सकती है। इसे पानी भिगो या गला नहीं सकता और वायु भी इसे सुखा नहीं सकती। अर्थात् आत्मा अमर है।

(गीता 2/23)

मैं आप या कोई और कदापि यह नहीं जान पायेंगे कि वे व्यक्ति जिन्हें हम चाहते हैं, चाहने की उस अनन्त सीमा तक, कब और कैसे वह स्थगित हो जाएगी, जिसे हम प्रकृति की लीला उस ईश्वर की माया मान, टाल जाने का प्रयत्न करने लगेंगे और आश्वस्त होंगे आखिर इस जन्म-मरण के बंधन को कौन टाल सकता है? और हमारे पास बची रह जाती है सिर्फ स्मृतियाँ और स्मृतियाँ। श्री अम्बलालजी नागर (मनोहरथाना वाले) मेरे पूज्य पिताजी नहीं रहे। क्या कोई ऐसी तकनीक नहीं, जिससे हम उन्हें रोक सकते।

उनका व्यक्तित्व व उनके सद् कार्य हम सभी के लिए आदर्श है। उन्होंने कोटा जिला, कोटा महाविद्यालय से अंग्रेजी माध्यम में ग्रेजुएशन की पढ़ाई की और वे कोटा जिला पंचायत समिति छबड़ा में एस.डी.आई. और विकास अधिकारी के पद पर कार्यरत रहे तथा झालावाड़ जिला मनोहरथाना से प्रधानाध्यापक (शिक्षा विभाग) के पद से सेवानिवृत्त हुए।

कहते हैं कि माता-पिता के सत्कर्मों का लाभ उनकी सन्तान को मिलता है और उन्हीं के आशीर्वाद से वे सुखी सम्पन्न और यशस्वी होते हैं। ईश्वर को किसी ने नहीं देखा, परन्तु ईश्वर के रूप में माता-पिता ही हमें धरती पर प्राप्त होते हैं।

मेरी माताजी श्रीमती शांतिदेवी नागर भी सहज, सरल व उत्कृष्ठ व्यक्तित्व की धनी थी। माता-पिता दोनों का इतना मिलनसार व उत्कृष्ठ व्यवहार था कि प्रत्येक परिजन छोटे से बड़ा तक अनेक आदर्शों व मार्ग पर सहजता से चलने को तत्पर हैं। माता-पिता के जो सद्गुण देखे उन्हें अपने जीवन, अपने कर्म में अपनाकर पाया कि न तीर्थ जाने की आवश्यकता है, न सत्संग की, बस उनके बताये मार्ग पर आगे बढ़ते जाओ।

उन्होंने केवल कर्म का मार्ग ही नहीं अपितु आध्यात्म का मार्ग भी बताया। वे नित्य प्रति ईश्वर स्मरण व आराधना को महत्व देते। हम सभी भी ईश्वर भक्ति पर विश्वास रखते हैं। ऐसा लगता है मानो माता-पिता के बताये मार्ग पर चलने की शक्ति स्वयं ईश्वर देवो के देव महादेव प्रदान करते हैं और माता-पिता का आशीर्वाद सदैव हमारे साथ रहे। वे अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़ गये। जो उनके आशीष का ही परिणाम है। उनके चार पुत्र व तीन पुत्रियाँ है। उनकी ज्येष्ठ पुत्री श्रीमती भुवनेश्वरी नागर (सेवा नि. प्रधानाध्यापिका), श्रीमती राजेश्वरी नागर (अध्यापिका), श्रीमती अनीता नागर (गृहणी) तथा सुपुत्र श्री कुलेन्द्र नागर (एड्वोकेट), श्री अनिल नागर (पी.एच.ई.डी.), श्री प्रेम कुमार नागर (व्यवसायी), श्री प्रभाशंकर नागर (अध्यापक) है।

उनके आशीर्वाद से उनके दामाद व पुत्रवधुएँ सभी अपने-अपने क्षेत्र में कुशल व पारंगत है तथा उनके पोते-पोती व दोहिते-दोहिती सभी अपने-अपने कर्म क्षेत्र में कार्यरत हैं। आपकी दूरदृष्टि, दृढ़निश्चय एवं स्नेहपूर्ण आशीष सदैव हमारे जीवन को आलोकित करते रहेंगे।

श्रद्धानवत पुत्र- श्रीमती भुवनेश्वरी नागर
सेवा नि. प्रधानाध्यापिका, झालावाड़
(राज.) मो. 9829182412

श्रीमती लक्ष्मी मेहता, शाजापुर

भागवत कथाचार्य पंडित लालशंकर मेहता की धर्मपत्नि, वरिष्ठ समाजसेवी, कर्मयागी, धार्मिक निष्ठावान श्रीमती लक्ष्मी मेहता का शनिवार सुबह हृदयाघात से दुखद निधन हो गया। इनकी शव यात्रा आदर्श नवीन नगर स्थित निवास से निकली, जिसमे दैनिक अवन्तिका परिवार ,जय हाटकेश वाणी पत्रिका की ओर से प्रतिनिधी राजेश नागर, समाजजनो, गणमान्य नागरिकों ने शामिल होकर श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए श्रद्धाजंली दी।

श्री दाऊजी दवे, वाराणसी

02 जनवरी 2017 को रविन्द्रपुरी, वाराणसी निवासी श्री दाऊजी दवे पुत्र स्व.श्री गोविन्दजी दवे का संक्षिप्त बिमारी के कारण निधन हो गया। आप अत्यधिक धार्मिक प्रवृत्ति के परन्तु आधुनिक विचारधारा के व्यक्तित्व के धनी थे। आप वाराणसी नगर निगम के वरिष्ठ अधिकारी पद से सेवानिवृत्त हुए थे। वित्तीय अनियमितताओं को रोकने की दृष्टि से प्राय: वित्त तथा प्रशासन दोनों विभागों का कार्य कभी भी एक ही व्यक्ति/अधिकारी को नही दिया जाता, फिर भी स्व. श्री दाऊजी दवे को अनेक अवसरों पर दोनों विभाग की जिम्मेदारियाँ दी जाती थी। हर मौसम में प्रात: 04 बजे उठ कर तुलसी घाट में नियत जगह पर गंगा स्नान करना आपकी आदत थी।

17वाँ पुण्य स्मरण

स्व.श्रद्धेय श्री जानकीलाल राधाकृष्ण जोशी
12 मार्च
कर्मयोगी, स्वावलंबी, मिलनसार, स्नेही, संस्कारी, एकनिष्ठ
श्रद्धावनत- जोशी, नागर, जाधव, तिवारी परिवार
-प्रेषक पी.आर. जोशी
उषा नगर, एक्स., इन्दौर

भय, भक्ति और श्रद्धा से मिलेंगे संस्कार

चालीस, पचास वर्ष पहले गुरुजनों, ब्राह्मणों और गौओं के प्रति बहुत ही भय, भक्ति और श्रद्धा रहती थी, विद्यार्थी गुरुजनों के नाम से कांपते थे तथा भय के साथ उनका सम्मान भी करते थे, यह कहावत प्रचलित थी कि 'छड़ी पड़े धम-धम विद्या आए छम-छम'। वर्तमान में इस प्रकार की स्वतंत्रता शिक्षकों को नहीं है। उस समय गुरुजनों को फ्रीहेंड के साथ माता-पिता भी अपने बच्चों को समुचित वक्त देते थे। विभिन्न गतिविधियों के साथ धार्मिक ग्रंथों एवं गतिविधियों से उन्हें जोड़े रखते थे। बच्चों के चालचलन एवं व्यवहार पर भी उनकी कड़ी नज़र रहती थी। एक निश्चित उम्र तक बच्चों पर विशेष ध्यान दिया जाता था, ताकि वे सुसंस्कारित होकर अपना भला-बुरा समझ सके। वैसी ही कार्यप्रणाली वर्तमान माता-पिता को भी अपनानी पड़ेगी तभी विकारों को दूर कर संस्कारों की पुनर्स्थापना की जा सकेगी। बच्चों को अपने माता-पिता एवं गुरुजनों से भय होना चाहिए, साथ ही ब्राह्मणों के प्रति श्रद्धा जाग्रत करना चाहिए तथा भक्ति का बीज छोटी उम्र में ही बोना चाहिए तभी जीवन सार्थक हो सकेगा।

-के.श्रीनिवास राव
रायपुर (छ.ग.) मो. 9630262213

होली

बंधन मुक्त शिशिर का अब तो
हाथ खोल खेलेंगे फाग।
द्वेष मिट गया जलन छोड़ दी
राख हुई होली की आग।
मन में द्वेष लिये बैठी जब
जला डालने बालक आज।
द्वेष स्वयं को जला रहा है,
जान न पाया द्वेषी राज।

पूजा करते उस अग्नि की
जिसने किये सुगम सब काज।
फागुन आया ढोल बज उठे
पुलकित करते मन के साज।
ऋतु परिवर्तन हुआ, देख कर
जली हुई होली को खाक।
अबीर-गुलाल, बन उड़ रही
बची हुई होली की राख।

बन्धन मुक्त शिशिर का अब तो
फागुन डोरे, डारे वार। (न्योछावर)
विरह वेदना मिटने आई
साजन जब आएंगे द्वार।

-धीरेन्द्र ठाकोर मो. 9799547566

पहले समस्या तो जानें, फिर खोजे समाधान

एक राज्य में परंपरा थी कि जो भी वहाँ सबसे ज्यादा बुद्धिमान व्यक्ति होता उसे ही मंत्री बनाया जाता। एक बार राजा ने मंत्री के चुनाव के लिए पूरे राज्य में परीक्षा कराई और तीन लोगों को चुना गया। तीनों को अंतिम परीक्षा के लिए राजधानी बुलाया गया। उन्हें जो भी मिला, उससे पूछा कि परीक्षा क्या होगी, कुछ पता है।

राजधानी में सभी को पता था कि क्या परीक्षा होगी। सभी ने कहा कि परीक्षा तो पहले से तय है। एक कक्ष है। उसमें एक ताला लगा है। वह ताला गणित की पहेली है। उसकी कोई चाबी नहीं है। गणित के अंक लिखे हैं। जो उस गणित को हल कर लेगा, वह दरवाजे को खोलने में सफल हो जाएगा। तुम तीनों को उस कक्ष में बंद किया जाएगा। जो सबसे पहले दरवाजे को खोलकर बाहर आएगा, वही मंत्री बन जाएगा। यह सुनकर उनमें से एक तो अपने कक्ष में जाकर आराम से सो गया। बाकी दोनों बाजार की ओर चले गए। वहाँ ताले के दुकानदारों से मिले। गणित के विद्वानों से इसके बारे में पूछा। कुछ किताबें भी ले आए और सारी रात इनका अध्ययन करते रहे। उन दोनों की सारी रात जागते हुए बीत गई। तीसरा व्यक्ति सुबह आराम से उठा और उन दोनों के साथ राजमहल पहुँच गया। राजा ने उन्हें एक कक्ष में बंद कर दिया और कहा कि जो इस कक्ष का दरवाजा खोलकर पहले बाहर आएगा वही मंत्री होगा। इस कक्ष में ताले की कोई चाबी नहीं है, यह गणित की एक पहेली है। गणित के अंक ताले के ऊपर खुदे हैं, हल करने की कोशिश करो। वे तीनों भीतर गए। जो व्यक्ति रातभर सोया था, वह फिर आँखें बंद कर एक कोने में बैठ गया। बाकी दोनों अपने कपड़ों में किताबें छुपाकर लाए थे। जल्दी से उन्होंने पहेली को हल करने का प्रयास शुरु कर दिया। पहला वाला व्यक्ति कुछ देर बाद चुपचाप उठा और दरवाजे को उसने धक्का दिया। दरवाजे पर कोई ताला नहीं था। यह सिर्फ अटका हुआ था। वह बाहर आ गया। उसके बाहर आते ही राजा ने कहा कि तुमने कैसे जान लिया कि दरवाजे पर कोई ताला नहीं है। इस पर वह व्यक्ति बोला कि महाराज पहले समस्या को जान लेना जरूरी है। अगर समस्या है तो उसका समाधान भी होगा, अगर समस्या है ही नहीं तो परेशान होने से क्या लाभ। उसकी सूझबुझ देखकर राजा ने उसे मंत्री बना दिया। **- गायत्री मेहता, इन्दौर**

मृत्यु से डरने की आवश्यकता नहीं

आज यूरोप-अमेरिका में वैभव के चकाचौंध में एक नयी धारा निकल पड़ी है, वह है मृत्यु की तैयारी। मृत्यु की प्रतीक्षा में अपने जीवनकाल में ही अपने सब मृत संस्कार कर लेने की प्राचीन भारतीय परिपाटी रही है। अभी भी प्रतिवर्ष सैकड़ों हिन्दू अपने सामने अपना पूरा संस्कार कर डालते हैं। पर ऐसा कार्य कभी-कभी विदेशों में सुनने को मिलता है। चोरी, लूट और डकैती के युग में मनुष्य मृत्यु को भूल गया है। कबीर लिख गये हैं कि-

सुकृत कर ले, नाम सुमर ले,
को जाने कल की।

कबीर ने सत्य ही लिखा है कि-

'पानी बीच बतासा संतो,
तन का यही तमासा है।

इसी तरह की शब्दावली में कबीर के ये वाक्य हैं-

यह तन धन कछु काम न आई
ताते नाम जपा लौ लाई।
कहई कबीर सुनो मोरे मुनियो,
आप मुये पीछे डूब गयी दुनियाँ।

आर्य सनातनी हिन्दूओं के शास्त्र अनन्त वारिधि के समान इतने विशाल और अक्षय है कि आज तक इन धर्मग्रन्थों के शब्दों की संख्या गिनी नहीं जा सकी। हम अपने धर्मग्रन्थों के महासागर से कुछ भी चुन लें तो हमारे नेत्र खुल जाएंगे और हमारी हर समस्या का समाधान मिल जाएगा। मृत्यु वरदान तथा जीवन एक समस्या प्रतीत होगा। उस समय हम समझ जायेंगे कि

आप अकेला अब तरै, मरे अकेला होय।
यू कबहूँ इस जीव का साथी सगा न कोय।।

जिस प्रकार शक्ति की उपासना, जो किसी देवी की हो या सकाम तांत्रिक साधना हो वह बिना सविधि देवी-पुत्र बटुक पूजन के सिद्ध नहीं होती, उसी प्रकार भगवान राम, कृष्ण, शिव या किसी आराध्य की उपासना बिना 'सद्बुद्धि' माँगे अधूरी रहती है। जो सद्बुद्धि मांगेगा, वही मृत्यु के ऊपर उठकर मृत्यु को भयावह वस्तु न समझकर उसका सहर्ष आलिंगन करने की तैयारी करेगा। भक्ति मार्ग के पथिक भक्ति का अन्तिम लक्ष्य भूल जाते हैं। काक भुशुण्डि ने कहा था कि मैं निश्चित रूप से कहता हूँ कि जो लोग हरि का भजन करते हैं वे ही इस दुस्तर संसार को पार कर लेते हैं।

विनितं वदामि ते न चान्यथा वचांसि में।
हरि नरा भजन्ति येऽति दुस्तरं तरन्ति ते।।

क्योंकि भगवत भजन से ही अनन्तः बुद्धि निर्मल होती है। मन में एकाग्रता आती है। हम कहते हैं कि हम पुरुष हैं, पर पुरुष का अर्थ क्या है? जो संसार में प्रत्येक सत्ता का साक्षी होते हुए भी सो रहा है, उससे निर्लिप्त है, वही पुरुष है।

शिवः आत्मा पुरुषः साक्षी चैतन्यः पुरुषः। पुरीषु शेते यः स पुरुषः। प्रत्येक सत्तासु साक्षी रुपेण यः सुप्तः स एव पुरुष उच्यते।

जो मनुष्य संसार के दुःखों और सुखों से परे होगा। भगवत् भजन में सच्चे मन से लीन रहने वाला होगा। वो ही मृत्यु से निर्भय होगा। इस संसार में निर्लिप्त होकर विचरण करता रहेगा।

-रेनू नागर, मथुरा

RYDAK®

(RED)

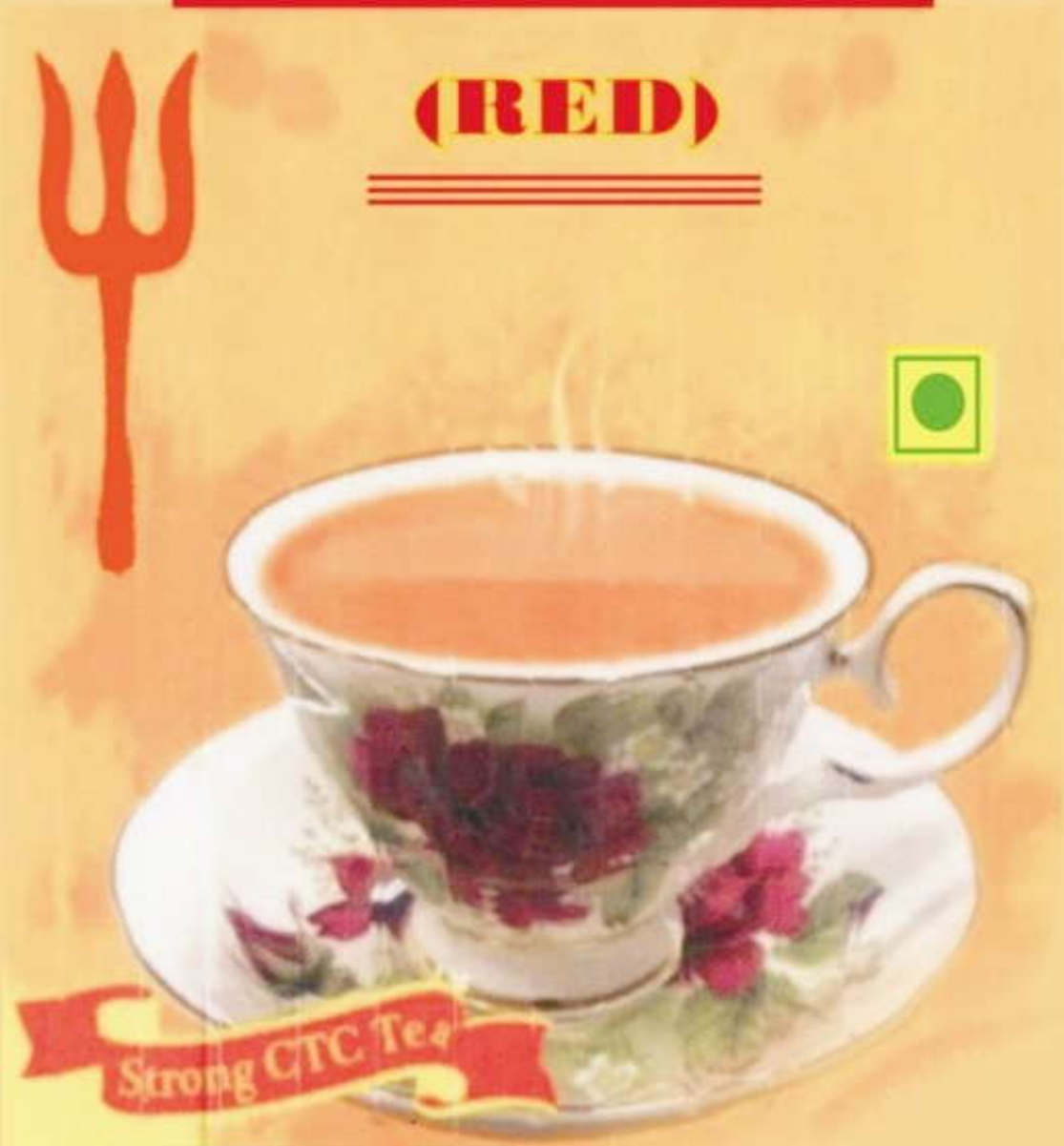

रायडक चाय

कड़क स्वादिष्ट रायडक चाय

Marketed By : KANT & COMPANY LTD.

71, DR. RAJENDRA PRASAD SARANI, KOLKATA - 700001, PH.NO. 22309925

Local Address-

KANT & COMPANY LIMITED

306, Nariman Point, 96, Maharani Road, INDORE Mo.9300126194

Vidushi
Creation

Mfg. of Exclusive Fancy Sarees

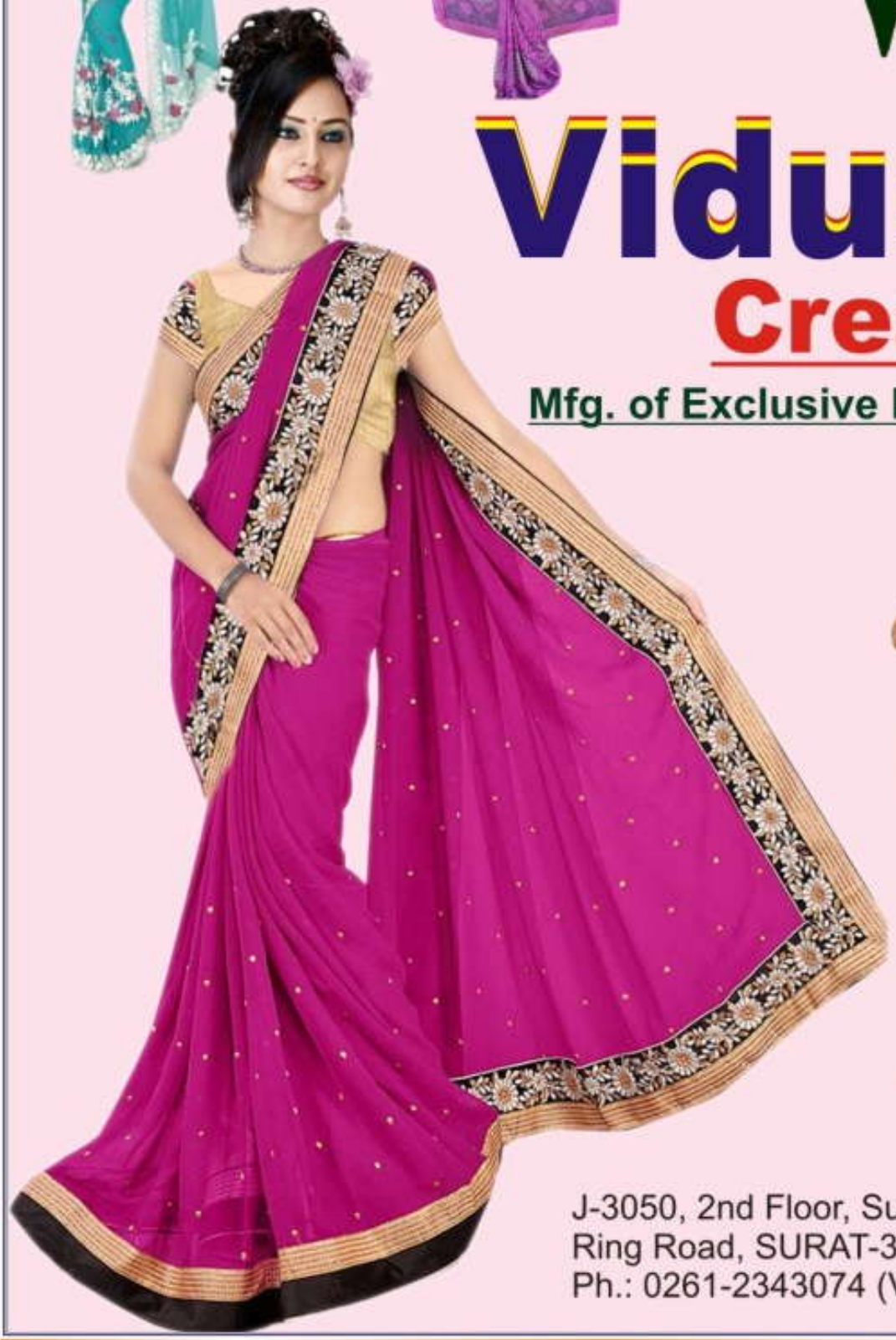

J-3050, 2nd Floor, Surat Textile Market
Ring Road, SURAT-395 002
Ph.: 0261-2343074 (V) : 95864 42265

कु.वर्षा

(आत्मजा- रविकान्त सौ.शोभा दीक्षित, सिर्रा)
की संविदा शिक्षिका पद से शासकीय शिक्षिका (अध्यापक) पद पर संविलियन होने पर हार्दिक शुभकामनाएँ एवं बधाई...

बधाईकर्ता-

गोपालकृष्ण-सौ.चन्द्रकान्ता दीक्षित (बड़े पापा-मम्मी)
मदनलाल-सौ.संतोष दीक्षित (मझले पापा-मम्मी)
रविकान्त-सौ.शोभा दीक्षित (पापा-मम्मी)
श्रीकान्त-सौ.मधुबाला दीक्षित (काका-काकी)
दीपेन्द्र (भानू)-सौ.लता दीक्षित (काका-काकी)
सौ.आशा हरीश मेहता मड़ावदा (बुआ-फुफाजी)
सौ.यामिनी विपिन नागर, कोटा (जीजी-जीजाजी)
सौ.संध्या ब्रजेश नागर, नजरपुर (जीजी-जीजाजी)
सौ.पूनम अजय नागर, उदयपुर (जीजी-जीजाजी)
प्रशान्त सौ. वर्षा दीक्षित (भैय्या-भाभी)
प्रफुल्ल-सौ.अंतिमा दीक्षित (भैय्या-भाभी)

भाई, बहन, भतीजे- प्रबल दीक्षित, मोहित दीक्षित, प्रकाश दीक्षित, कु.प्रियंका दीक्षित, जय दीक्षित, नमन दीक्षित, राजेश मेहता, ऋषि मेहता, आदित्य दीक्षित, हृदयेश नागर, ईशा नागर एवं समस्त दीक्षित, शर्मा, जोशी, मेहता, नागर मण्डलोई सपरिवार सिर्रा (खण्डवा) तथा समस्त नागर ब्राह्मण परिषद खण्डवा।

नोट- कु.वर्षा दीक्षित की संविदा नियुक्ति अगस्त सन् 2013 में शासकीय कन्या प्राथमिक विद्यालय सिर्रा में हुई थी एवं अगस्त सन् 2016 में इसी विद्यालय में नियमानुसार संविलियन हुआ है।

MPHIN/2007/19763 जय हाटकेश वाणी डाक पंजीयन RO/IDC/42/2016-18

श्री विनोदकुमारजी मंडलोई
की पावन स्मृति में...

कॅरियर गाईडेंस सेमिनार

निः शुल्क

श्री हाटकेश्वर धाम एवं
जय हाटकेश वाणी के
संयुक्त तत्वावधान में
सेमिनार का भव्य आयोजन

अपने आप को जानें...
आपके सपने...
आपकी क्षमता... आपकी योग्यता...
कहां जाएं... क्या करें...
समय की मांग...
और कैसे खुद को तैयार करें...

सम्पर्क : 9425063129, 9425917541, 9826095995

जिसमें आयएएस,
आयपीएस, आयएफएस,
सीए, राज्य प्रशासनिक सेवा,
ज्योतिष एवं पत्रकारिता
क्षेत्रों की विख्यात हस्तियां
नागर युवाओं
को कॅरियर के बारे में मार्गदर्शन
प्रदान करेंगे।

दिनांक :
रविवार, 26 मार्च 2017
स्थान :
श्री हाटकेश्वर धाम
हरसिद्धि की पाल, उज्जैन
समय :
प्रातः 10:30 बजे से

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक मनीष शर्मा द्वारा शिवप्रभा प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स, 20-ए, जूनी कसेरा बाखल, इन्दौर से मुद्रित एवं यहीं से प्रकाशित।
सम्पादक : सौ.संगीता शर्मा (44) मो. 94250 63129
LATE POSTING